विषय सूची

जातक प्रकरण प्रथम भाग

विवाह प्रकरण

मुहूर्त करण

प्रश्न करण

सावधान—आजकल चन्द आदमियों ने हमारी पुस्तकों की नकल करना शुरू करदी है इसलिये सब सज्जनों को सूचित किया जाता है कि जिस पुस्तक पर प्राचीन पता 'हरिहर प्रेस' और मिलने का पताः—दीपक ज्योतिष कार्यालय हाथरस, का न हो वह पुस्तक नकली समझी जानी चाहिए।

❀ श्रीगणेशायनमः ❀

अथ

ज्योतिष सर्व सँग्रह

भाषा-टीका

जातक प्रकरण प्रथम भाग

श्लोक

प्रणम्य परमात्मानं बालधीवृद्धि सिद्धये।
समहित्यान्यग्रन्थेभ्यो सर्वसंग्रहः लिख्यते ॥

अथ द्वादश मासों के नाम संस्कृत और भाषा में

चैत्र को मधु और मीन भी कहते हैं	**वैशाख** को माधव और मेष भी कहते हैं	**ज्येष्ठ** को शुक्र और वृष भी कहते हैं	**अषाढ़** को शुचि और मिथुन भी कहते हैं
श्रावण को नभ और कर्क भी कहते हैं	**भाद्रपद** को नभस्य और सिंह भी कहते हैं	**आश्विन** को ईश व कन्या भी कहते हैं	**कार्तिक** को उर्ज और तुला भी कहते हैं
मार्गशीर्ष को सिंह और वृश्चिक भी कहते हैं	**पौष** को सहस्य और धन भी कहते हैं	**माघ** को तप व मकर भी कहते हैं	**फाल्गुन** को तपस्य व कुंभ भी कहते हैं

सोलह तिथियों के नाम

१ प्रतिपदा, २ द्वितीया, ३ तृतीया, ४ चतुर्थी, ५ पंचमी, ६ षष्टी, ७ सप्तमी, ८ अष्टमी, ९ नवमी, १० दशमी, ११ एकादशी, १२ द्वादशी, १३ त्रयोदशी, १४ चतुर्दशी, ३० अमावस्या, १५ पौर्णमासी ।

तीन २ तिथियों के नाम

१ पड़वा ६ छट ११ एकादशी ये नन्दा तिथि हैं
२ दोयज ७ सप्तमी १२ द्वादशी ये भद्रा तिथि हैं
३ तीज ८ अष्टमी १३ त्रयोदशी ये जया तिथि हैं
४ चौथ ९ नवमी १४ चतुर्दशी ये रिक्ता तिथि हैं
५ पंचमी १० दशमी १५ पूनो ३० अमावस्या ये पूर्णा तिथि हैं ॥

अथ सप्त वाराः

आदित्यवार । चन्द्रवार भौमवार । बुधवार । गुरुवार । शुक्रवार । शनिवार ॥

आदित्यवार को एतवार, चन्द्रवार को सोमवार, भौमवार को मङ्गलवार, बुद्ध को बुध, गुरु को बृहस्पति व जुमेरात शुक्र को—

जुम्मा शनिवार को थावर भी कहते हैं, राहु केतु ये दोनों सात बार में मिलकर नवग्रह कहलाते हैं ॥

एक महीने के दो पक्ष होते हैं कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष अंधेरी रात को कृष्ण पक्ष और चाँदनी को शुक्ल पक्ष महीने की शुरू की पड़वा से अमावस तक कृष्ण पक्ष, मावस से पौर्णमासी तक शुक्ल पक्ष, अन्धेरी रात को बदी, चाँदनी को सुदी कहते हैं ॥

अष्टविंशति नक्षत्राणि

——※——
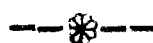
अब २८ नक्षत्र लिखते हैं

अश्विनी १, भरणी २, कृतिका ३, रोहिणी ४, मृगशिरा ५, आर्द्रा ६, पुनर्वसु ७, पुष्य ८, श्लेषा ९ मघा १०, पूर्वा फाल्गुणी ११, उत्तरा फाल्गुणी १२, हस्त १३, चित्रा १४, स्वांति १५, विशाखा १६, अनुराधा १७, ज्येष्ठा १८, मूल १९, पूर्वाषाढ़ २०, उत्तराषाढ़ २१, अभिजित २२, श्रवण २३, धनिष्ठा २४ शतभिषा २५, पूर्वाभाद्रपद २६, उत्तरा भाद्रपद २७, रेवती २८।

नक्षत्रों के देवता चक्रम्

नं०	अश्वनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगसिर	आर्द्रा	पुनर्वसु
देवता	अ०कुमार	यम	अग्नि	ब्रह्मा	चन्द्रमा	रुद्र	अदिति
नं०	पुष्य	श्लेषा	मघा	पू० फा०	उ०फा०	हस्त	चित्रा
देवता	गुरु	सर्प	पितर	भग	अर्यमा	सूर्य	विश्वकर्मा
नं०	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़	उ०षाढ़
देवता	वायु	इन्द्र अग्नि	मित्र	इन्द्र	निऋृति	जल	विश्वेदेवा
नं०	अभिजित	श्रवण	धनिष्ठा	सतभि०	पू० भा०	उ० भा०	रेवती
देवता	विधि	विष्णु	वसु	वरुण	अजपा	अहिर्बुध्न	पूषा०

सप्तविंशति योगाः

श्लोक

विष्कुंभः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यः शोभनस्तथा ।
अतिगण्ड सुकर्मा च धृतिः शूलस्तथैवच ॥ १ ॥
गंडो वृद्धिध्रुवश्चैव व्याघातो हर्षणस्तथा ।
वज्रं सिद्धिर्व्यतीपातो वरियान् परिघः शिवः ॥२॥
सिद्धिः साध्यः शुभः शुक्लो ब्रह्म चेन्द्रोऽथ वैधृतिः।
सप्त विंशतिराख्याता नामतुल्यफलप्रदाः ॥ ३ ॥

विष्कुम्भ १, प्रीति २, आयुष्मान ३; सौभाग्य ४; शोभन ५, अतिगंड ६, सुकर्मा ७, धृति ८, शूल ९, गंड १०, वृद्धि ११, ध्रुव १२, व्याघात १३, हर्षण १४, वज्र १५, सिद्धि १६, व्यतिपात १७, वरियान १८, परिघ १९, शिव २ , सिद्धि २१, साध्य २२, शुभ २३, शुक्ल २४, ब्रह्म २५, इन्द्र २६, वैधृत २७, इति सप्तविंशति योग समाप्त ॥ ये सत्ताईस योग हैं ॥

अथ षट् ऋतवः

बसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद हेमन्त, शिशिर

एक एक ऋतु दो महीने वर्तमान रहती है जैसे मेष वृष सूर्य में यानी बैसाख जेठ में बसन्त रितु होती है। मिथुन कर्क के सूर्य में यानी आषाढ़ श्रावण में ग्रीष्म। सिंह कन्या के सूर्य यानी भाद्रपद आश्विन में वर्षा रितु होती है। तुला वृश्चिक के सूर्य में यानी कार्तिक, मगशिर में शरद ॥ धन मकर के सूर्य में यानी पौष माघ में हेमन्त। कुम्भ मीन के सूर्य में यानी फाल्गुण, चैत्र में शिशर। छः महीने सूर्य उत्तरायण और ६ महीने दक्षिणायण रहता है। उत्तरायण सूर्य में देवताओं का दिन होता है और दक्षिणायण में रात होती है ॥ इसी कारण जितने शुभ काम है उत्तरायण सूर्य में अच्छे होते हैं ॥ माघ, फाल्गुण, चैत्र, बैसाख, ज्येष्ठ, अषाढ़ इन ६ महीनों में सूर्य

उत्तरायण रहता है । और श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक मङ्गशिर पूप इन ६ महीनों में सूर्य दक्षिणायण रहता है ये संक्रांति से हिसाब है सो पत्रे में लिखा रहता है ॥ मीन की संक्रांति के जब अंश जायेंगे उसी रोज से सूर्य उत्तरायण हो जाता है । और कन्या की संक्रांति के नौ अंश जब जायेंगे उसी रोज से सूर्य दक्षिणायण हो जाता है ॥

अष्ट दिशाओं के स्वामी

अष्ट दिशा चक्रम्
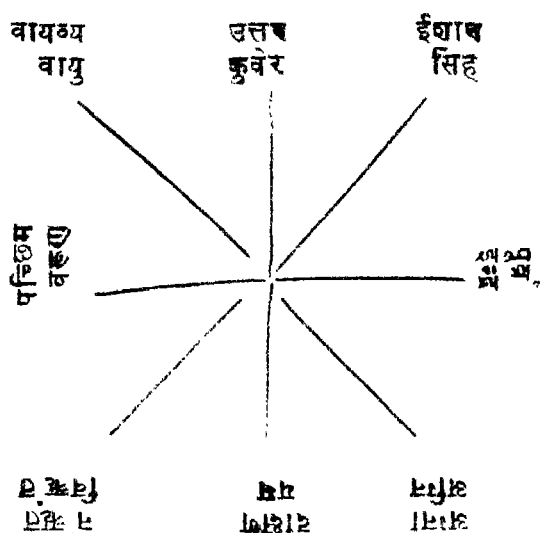
पूर्व का इन्द्र स्वामी । अग्नि का अग्नि स्वामी ॥ दक्षिण का यम स्वामी नैऋति का । पश्चिम का नैऋत्य वरुण ॥ वायव्य का वायु ॥ उत्तर का कुबेर ईशान का शिव । ये आठों दिशाओं के आठ मालिक हैं ॥ इसी प्रकार चक्र में जानने चाहिए

अथ एकादश करणानि

बव १, बालव २, कौलव ३, तैतिल ४, गर ५, वणिज ६, विष्टि ७।

ये सात करण चार हैं।

बारह राशियों के नाम

मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ, मीन ॥

अथ दिनमान देखिए

सुनो ! साठ घड़ी का एक दिन रात होता है । कभी दिन बड़ा हो जाता है कभी रात बड़ी हो जाती है। और एक घड़ी के साठ पल होते हैं और ६० पल की एक घड़ी होती है और एक पल के ६० विपल होते हैं और ६ विपल का एक पल होता है । २॥ पल का एक मिनट होता है और २४ मिनट की एक घडी होती है। २॥ घडी का एक घण्टा और २४ घण्टों का एक दिन रात होता है। और एक नक्षत्र के चार चरण होते हैं । यानी चार हरूप, जब किसी बालक का जन्म होता है उस रोज देखना कि कौनसा नक्षत्र है, उस नक्षत्र

के चार भाग कर ले. जब से वह नक्षत्र शुरू हुआ हो और जब तक रहेगा। जैसे अश्विनी नक्षत्र में जन्म हुआ तो देखो कि यह नक्षत्र ६० घड़ी भोग करता है तो पन्द्रह पन्द्रह घड़ी के चार चरण हुए और जो नक्षत्र ६० घड़ी से कमती बढ़ती हो तो उतनी ही घड़ियों को चार जगह बांटे, जितना बँट आये उतनी ही घड़ियों, पलों का एक चरण जाने, जिस चरण में जन्म हो उसी चरण का अक्षर नाम में पहिले आता है इसका कुछ प्रमाण नहीं है कि एक नक्षत्र ६० ही घड़ी भोगे जो पंडित ६० घड़ी लगाते हैं। उनके लगाने से राशि में फर्क आता है। अब देखिए कि अश्विनी नक्षत्र में जन्म हुआ तो यह देखो कि किस चरण में जन्म हुआ, उसी चरण के अक्षर पर नाम धरे। जैसे चू चे चो ला अश्विनी। पहले चरण का अक्षर चू है दूसरे का चे है तीसरे का चो है चौथे का ला है। जो चू पर लड़के का जन्म हो तो चुन्नी। लड़की का जन्म हो तो चुनियाँ। चे पर हो तो चेतराम, चेतो। चो पर चोखराज चोखावती। ला पर लाला या लालमण, लालजी या लाजी सब नक्षत्रों पर ऐसे ही नाम धरे। ब्राह्मण के यहां मिश्र करके लिखे क्षत्री के यहां सिंह करके। बनिए के यहाँ लाला करके। शूद्र के यहाँ चौधरी करके। और जिस नक्षत्र के चरण पर लड़के या लड़की का जन्म होगा उसका वही नक्षत्र होगा। जैसे यह चार अक्षरों का एक नक्षत्र है इसी प्रकार चार २ अक्षरों के २८ नक्षत्र हैं उन २८ नक्षत्रों के नाम आगे के पन्ने में लिखे हैं।

चार २ अक्षरों के नक्षत्र

चू	चे	चो	ला	अश्विनी	रु	रे	रो	ता	स्वाति
ली	लू	ले	लो	भरणी	ती	तु	टो	तो	विशाखा
आ	इ	उ	ए	कृतिका	न	नो	नू	ने	अनुराधा
ओ	वा	वि	वु	रोहणी	नो	य	यो	यू	ज्येष्ठा
वे	वो	[illegible]	की	मृगसिर	ये	यो	भ	भी	मूल
[illegible]	घ	ङ	छ	आर्द्रा	भू	धा	फा	ढा	पूर्वाषाढ
के	[illegible]	ह	ही	पुनवसु	भे	भो	ज	जी	उत्तराषाढ
हू	हे	हो	डा	पुष्य	जू	जे	जो	ख	अभिजित
डि	डू	डे	डो	स्लेषा	ख	खो	खू	खे	श्रवण
म	मी	मू	मे	मघा	ग	गो	गू	गे	धनिष्ठा
मो	टा	टी	टू	पू० फा०	गो	शा	शि	शू	शतभिषा
टे	टो	प	पी	उ० फा०	से	सो	द	दो	पू० भा०
पू	ष	ण	ठ	हस्त	दू	थ	झ	ञा	उ० भाद्र०
पे	पो	र	री	चित्रा	दे	द	च	चो	रेवति

और नौ अक्षरों की एक राशि होती है जैसे चू चे चो ला ली लू ले लो आ मेष । इन नौ अक्षरों की मेष राशि हुई इन अक्षरों में जिनके नाम का अक्षर होगा उसकी मेष राशि होगी ऐसे ही यह बारह राशि हैं इन बारह राशियो के नाम आगे के पेज में लिखे हैं ।

नाम अक्षरों की राशि		दो अक्षरों की राशि	
चु-चे-चो-ला-ली-लू-ले-लो-आ	मेष	आ ला	मेष
इ-उ-ए-ओ-वा-वी-वु-वे-वो	वृष	ओ वा	वृष
क-की-कु-घ-ङ-छ-के-को-ह	मिथुन	का छा	मिथुन
हि-हू-हे हो-डा-डि-डू-डे-डो	कर्क	हा डा	कर्क
म-मी-मू-मे-मो-टा-टी-टू-टे	सिंह	मो टा	सिंह
टो-प-पी-पू-ष-ण-ठ-पे-पो	कन्या	पा ठा	कन्या
र-री-रू-रे-रो-ता-ति-तू-ते	तुला	रा ता	तुला
तो-न-नी-नू-ने-नो-या-यी	वृश्चिक	नो या	वृश्चिक
ये यो भ भी भू धा फ ढा भे	धन	भू धा	धन
भो ज जी ख खी खू खे ग गी	मकर	खा जा	मकर
गू गे गो शा सि सू से सो द	कुम्भ	गो शा	कुम्भ
दी दू थ झ ञ दे दो च ची	मीन	दा चा	मीन

और सवा दो नक्षत्रों का एक चन्द्रमा होता है जैसे अश्विनी भरणी कृतिका के एक चरण तक मेष के चन्द्रमा रहते हैं और जिसका अश्विनी नक्षत्र का जन्म होगा या भरणी का होगा और कृतिका के एक चरण तक होगा उसकी मेष राशि होगी।

चन्द्रमा देखना

अश्विनी भरणी कृतिका पादे मेषः। कृतिका नाम त्रयः पादा रोहिणी मृगशिर अर्द्ध वृषः। मृगशिर। अर्द्ध आर्द्रा पुनर्वसु पाद त्रयं मिथुन। पुनर्वसुपाद मेकं पुष्या श्लेषान्तो कर्क। मघाच पूर्वाफाल्गुणी

उत्तरापादे सिंह। उत्तराणां त्रयःपादा हस्तचित्राद्धं कन्या। चित्राद्धं स्वातिविशाखा पादत्रयं तुला। विशाखा पादमेकं अनुराधा ज्येष्ठान्त वृश्चिक। मूलं च पूर्वाषाढ़ उत्तरापादे धन। उत्तराणां त्रयः पादाः श्रवणधनिष्ठाद्धं मकर। धनिष्ठाद्धं शतिभिषा पूर्वा भाद्रपदपादत्रयं कुम्भः। पूर्वाभाद्रपद पादमेकं उत्तरा भाद्रपद रेवती मीन॥

टीका—अश्विनी के ४ चरण भरणी के ४ चरण कृतिका का १ चरण तक मेष के चन्द्रमा रहेंगे। कृतिका के ३ रोहिणी के ४ मृगशिरा के २ चरण तक वृष के चन्द्रमा रहेंगे॥ मृगशिर के २ आर्द्रा के ४ पुनर्वसु के ३ चरण तक मिथुन के चन्द्रमा रहते हैं॥ पुनर्वसु का १ पुष्य के ४ श्लेषा के ४ तक कर्क के चन्द्रमा रहेंगे॥ मघा के ३ पूर्वाफाल्गुनी के ४ उत्तरा फाल्गुन के एक चरण तक सिंह के चंद्रमा। उत्तरा फाल्गुनी ३ हस्त के ४ चित्रा के २ तक कन्या के चन्द्रमा॥ चित्रा २ स्वा० विशाखा तक तुला के चन्द्रमा॥ वि० १ अनु० ४ ज्ये० तक वृश्चिक के चन्द्रमा। मू० ४ पू० षा० ४ उ० षा० १ तक धन के चन्द्रमा॥ उ० षा० ३ श्र० ४ ध उ० षा० २ तक मकर के चंद्रमा। ध० २ श० ४ पू० भाद्र० ३ तक कुम्भ के चन्द्रमा। पू० भा० १ उ० भा० ४ रे० ४ तक मीन के चन्द्रमा रहेंगे। इस क्रम से सबके जान लें।

जब किसी लड़के का जन्म हो उस वक्त लग्न देखना कि इस वक्त क्या है॥ पहले तो देखे कि इस महीने में सूर्य काहे का है॥ जिस राशी का सूर्य हो उससे सातवीं राशी पर

सूर्य छिप जाता है । जिस राशि पर सूर्य हो उसको संक्राँति कहते हैं । उस राशि का एक अंश रोज घटता है ॥ २६ अंश तक ॥ ३० अंश पर दूसरी राशि पर हो जाता है ॥ वही संक्राँति है । एक महीना सूर्य एक राशि पर रहता है ॥ १२ राशियों पर इसी प्रकार घूमता है ॥ अब लग्न देखना चाहिए कि चैत्र के महीने में किसी के बालक हुआ तो चैत्र के महीने में मीन की संक्राँति होती है उसी रोज से मीन का सूर्य होता है । जिस दिन से संक्राँति शुरू होती है । अर्थात् मीन का सूर्य होता है जिस वक्त सूर्य उदय होता है उस वक्त मीन लग्न रहता है । और तीन घड़ी चौतीस पल भोगता है । यानी तीन घड़ी चौंतीस पल दिन चढ़े तक रहता हैं । फिर मेष आ जाता है ॥ ऐसे ही दिन रात में १२ लग्न भोग करते हैं और संक्राँति के जितने अंश बीतते जायेंगे वो लग्न उतना ही रात में बीतता जायगा ॥ अब देखिए कि मीन की संक्राँति के १० दिन गये जब किसी के बालक हुआ तो संक्राँति के दिन गये तो वह मीन लग्न तिहाई रात में बीत जाता है क्योंकि दसती तीस अब मीन लग्न ३ घड़ी ३४ पल एका है ॥ एक घड़ी बारह पल रात में बीता और २ घड़ी २२ पल दिन चढ़े तक रहा फिर मेष आ गया जो १० घडी १५ पल दिन चढ़े किसी के बालक हुआ तो १० घडी १२ पल का इष्ट हुआ ऐसे ही जोड़े, चाहे किसी के किसी वक्त बालक हुआ हो त्यों ही उसका इष्ट होता है ॥ २ घडी २२ पल मीन लग्न बाकी रहा और ३ । ३४ मेष और ४ । ७ वृष इनको जोडा तो १६ । ३ आया अब देखो इष्ट १० । १५ का है तो जानो मिथुन लग्न रहा ॥

एक कायदा और है इष्ट की घडी पल या जितन दिन चढ़ा हो या जितनी रात गई हो अर्थात् जितना इष्ट हो या देखे कि

संक्राँति के कितने अंश गये हैं पत्रे में देखे जितने सूर्य की राशि के अंश गये हों उतने अंश के कोष्ठ में लग्न सारणी में देखे उसी खाने की घड़ी पल इष्ट में जोड दे जो घड़ियाँ ६० से अधिक हों। फिर उसमें ६० का भाग दे जो अंक बचे लग्न सारणी में देखे इन अङ्क पर क्या लग्न है जहाँ अङ्क मिले वोही लग्न जानना।

अथ लग्न देखना

श्लोक

मीन मेषे २१४ कृत नेत्रे वृष कुम्भे २४७ मुनि वेद भजा मकर मिथुने ३०१ शशिरस्र वन्हिः कर्के धनुषि शराकृत रामा ३४५ वृश्चिक सिंह ३५१ रूप शराग्निः कन्या तुला ३४२ भुजा वेद गुणा।

अथ लग्न भोग चक्रम्

३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	४	३	घड़ी
३४	७	१	४५	५१	४२	४२	५१	४५	१	७	३४	पल
मेष	वृष	मि०	क	सिंह	क०	तु०	वृ०	धन	म०	कु०	मीन	लग्न

अथ तिथि गण्डान्त लिख्यते

नन्दा तिथिश्च नामादौ पूर्णान्ते च तथांतिके।
घटिकैका शुभा त्याज्यां तिथि गण्डे घटिद्वयम्॥

टीका—नन्दा तिथि के आदि की पूर्णा के अन्त की एक एक घड़ी अशुभ होती है।

अथ नक्षत्रगण्डान्तम्

ज्येष्ठा श्लेषा रेवती च नक्षत्रान्ते घटिकाद्वयम्।
आर्द्रा मूलमघाश्विन्या गण्डे घटिकाद्वयम् ॥

टीका—ज्येष्ठा श्लेषा रेवती के अन्त की घड़ी और मघा अश्विनी के आदि की दो घड़ी शुभ कार्य में अशुभ होती है।

अथ लग्नगण्डान्तमाह

मीन वृश्चिक कर्कान्ते घटिकार्धं परित्यजेत्।
आदौ मेषस्य चापस्य सिंहस्य घटिकार्द्धकम् ॥

टीका—मीन वृश्चिक कर्क के अन्त की आधी घड़ी, मेष, धन सिंह के आदि की आधी घड़ी में शुभ काम न कीजे।

तिथिगण्डे भगण्डे च लग्नगण्डे च जातकः।
न जीवति यदा जातो जीवेत् च धनी भवेत् ॥

टीका—तिथि, नक्षत्र, लग्न के गण्डांत में बालक जन्म हो तो न जीवे जो जीवे तो धनी हो, ये छः नक्षत्र गंड हैं। मू० ज्ये० श्ले० अ० रे० म०। ज्यो० मू० श्ले० इन तीन का रिवाज जारी है। अ० रे० म० इन तीन का कम है।

ज्येष्टा नक्षत्र फल

ज्येष्ठादौ जननी माता द्वितीये जननी पिता । तृतीये जननीभ्राता स्वयं माता चतुर्थके आत्मानं पञ्चमे हन्ति षष्ठे गोत्रक्षयो भवेत् । सप्तमे चोभयं कुलं ज्येष्ठभ्राता अष्टमे , नवमे श्वसुरं हन्ति सर्वं हन्ति दशांशकम् ॥

टीका—६० घडी के दस भाग करे फिर छः छः घडी का फल कहे ज्येष्ठा नक्षत्र की पहली ६ घडी में जो बालक का जन्म हो तो नानी को अशुभ ॥ दूसरी ६ घडी में नाना को कष्ट ॥ तीसरी ६ घडी में मामा को कष्ट ॥ चौथी ६ घडी में माता को कष्ट ॥ पाँचवीं ६ घडी में बालक को कष्ट ॥ छठी ६ घडी में गोत्र वालों को कष्ट ॥ सातवीं ६ घडी में नाना के परिवार को और कुटुम्ब को कष्ट ॥ आठवीं ६ घडी में भ्राता को कष्ट ॥ नवीं ६ घडी में ससुर को कष्ट ॥ दसवीं ६ घडी में सब कुटुम्ब को कष्ट कहे ॥

रवि ताम्बूल—सोम को दर्पण मङ्गल का गुड खाकर अर्पण बुध को धनिया ॥ गुरु को जोए ॥ सुक्र को सुक्र दही की पाडा कहे शनिश्चर अदरक खाओ, सुख सम्पति घर को आवो ॥

अथ मूल नक्षत्र फल

मूलेष्टौ मूलवृक्षस्य घटिकाः परिकीर्तिता ।
स्तम्भेषु षष्टघटिकास्त्वचि चैकादश स्मृता ॥
शाखायां च नव प्रोक्ताः पत्रे प्रोक्ताश्चतुर्दश ।
पुष्पे पञ्च फले वेदाः शिखायां च त्रयःस्मृता ॥

मूले नशोहि मूलयस्य स्तम्भे हानिर्धनयः ।
त्वचि भ्रातुर्बिनाशश्च शाखायां भ्रातृपीड़नम ॥
परिवारक्षयं पत्रे पुष्पे मन्त्री च भूपतिः ।
फले राज्यं शिखायां स्या दल्पजीवी च बालकः॥

टीका—अब मूल संज्ञक नक्षत्र के बिचारने की रीति मूल चक्र से कहते है । मूल वृक्ष बनाकर ८ घडी जड में धरे ६ घडी स्तम्भ मे ११ त्वचा में ६ शाखा में १४ पत्र में ५ पुष्प ४ फल में ३ शिखा में इस प्रकार ६० घडी धरिए ॥ फिर उसका फल कहें । जो मूल की ८ घडी में बालक का जन्म हो तो मूल नाश हो ॥ स्तम्भ की ३ घडी में होय धन हानि ॥ त्वचा की ११ घडी में होय तो भ्राता का नाश ॥ शाखा की ६ घडी में होय तो मामा को पीडा करे ॥ पत्तों की १४ में होय तो परिवार का नाश ॥ फलों की ४ घडी में जन्म हो ता राजा का मन्त्री हो ॥ फूलों की ४ घडी में होता राजा हो ॥ अथवा वंश या देश में श्रेष्ठ होय ॥ शिखा की तीन घडी में जन्म हो तो आयु अल्प पावे अर्थात उमर थोडी हो ॥

मूल वृक्ष फलम्

शिक्षा	फल	फूल	पत्र	शाखा	त्वचा	स्तंभ	मूल
३	४	१४	१४	६	११	६	८
अल्पायु	राजा	राज मं.	पर क्षय	भ्रा. कष्ट	भ्रा०ना०	धन हा०	मू० नाश

श्लेषा नक्षत्र फलम्

मूर्द्धास्यनेत्रगलकांसयुग च बाहू--हृज्जुन गुह्य पदमित्याह देहभागः ॥ वाणाद्रि नेत्र हुतभुक् श्रुति नाग रुद्र-षड् नन्द पंच शिरसः क्रमशस्तु नाङ ॥ १ ॥ राज्यं पितृक्षयो मातृनाशः कामक्रियारतिः । पितृभक्ता बली स्वघ्नस्त्यागी भोगी धनी क्रमात् ॥२॥

टीका—श्लेषा नक्षत्र के जिस भाग में बालक का जन्म हो उसका फल कहना ॥ श्लेषा नक्षत्र की पहली ५ घड़ी में बालक का जन्म हो तो राज प्राप्ति ॥ दूसरे भाग की ७ घड़ी में पिता को कष्ट ॥ तीसरे भाग की २ घड़ी में माता को कष्ट ॥ चौथे भाग की ३ घड़ी में पर स्त्री रति ॥ पांचवे भाग की ४ घड़ी में पिता का भक्त ॥ छठे भाग की ८ घड़ी में बलवान ॥ सातवें भाग की ११ घड़ी में आत्मघाती ॥ आठवें भाग की ६ घड़ी में त्यागी ॥ नवमें भाग की ६ घड़ी में भोगी ॥ दशमे भाग की ५ घड़ी में धनवान ॥ इस प्रकार ६० घड़ी के १० भाग कर के फल कहें ।

मूल ज्येष्ठ श्लेषा इन के अलग २ विचार

जो इन ३ नक्षत्र में से किसी नक्षत्र में बालक का जन्म हो तो इनका २८००० मन्त्र का जाप करवावे या जितनी श्रद्धा हो दसवें दिन साधारण दसट्टन करने के बाद और जब वह

नक्षत्र २८ दिन में फिर आवे जिस नक्षत्र का मन्त्र जपा हो, उस दिन शांति करे और जितना मन्त्र जाप होउसके दशांश का हवन करे ॥ और ७ या १४ या २१ या २८ ब्राह्मण जिमावे तब मूल आदि का दोष दूर होता है नहीं तो विघ्न होता है ॥

अथ मूल नक्षत्र मंत्र

ॐ मातेव पुत्रम्पृथिवी पुरीष्य मग्नि ँ स्वेयो नाव मारुषा तां विश्वेदे वैर्ऋतुभिः संविदानः प्रजापति विश्वकर्मा विमुञ्चतु ॥१॥

श्लेषा मंत्र

ॐ नमोस्तुसर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्य सर्पेभ्यो नमः ॥ २ ॥

ज्येष्ठा मन्त्रः

ॐ सइं पुहस्तैः सनिष [illegible] भिव्व शीस ँ स्त्रष्टा सयुध इन्द्रो गणेन। स [illegible] जित्सामपाबाहु [illegible] युं प्रधन्वाप्रति [illegible] ॥३॥

आश्विनी मन्त्र,

ओं अश्विनातेजसा चक्षुः [illegible] न सरस्वती वीर्यम्। वाचेन्द्र बलेन्द्रायदधुरिन्द्रि [illegible]। ओं अश्विभ्यांनमः ४

अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में [illegible] का जन्म हो तो पिता को बाधा दिन में जन्म हो तो पिता को कष्ट, रात्रि में जन्म हो तो माता को कष्ट, संध्या में हो तो आपे को कष्ट हो।

माघ मन्त्र

ओं पितृभ्यः स्वाधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वाधायिभ्यः स्वधानमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः अक्षन्नपितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतपन्त-पितरः शुन्धध्वम् ॥ ५

मघा के प्रथम चरणमें जन्म होतो मातृ पक्ष को कष्ठ द्वितीय में पिताको कष्ट। तृतीय चरण में सुख सम्पत्ति, चतुर्थ चरण में धन प्राप्ति हो।

रेवती मन्त्र

ओं पूषन तवव्रते वयन्तरिष्येम कदाचन स्तो-तारस्त इहस्मसि ॥ ६ ॥ ओं नमः

रेवती नक्षत्र के प्रथम चरण में राजा हो, दूसरे चरण में मंत्री तृतीय चरण में सुख सम्पति, चतुर्थ चरण में आप को कष्ट हो।

अथ सामग्री लिख्यते

घड़ा १, करवा १, सराई १० पचरंग –) नारियल २. सुपारी ५०. चून. चावल. फूल. हार. दूध. कुशा. बतासे)। धूप)॥ कपूर)। अंगाछे २. कपड़ा लाल दो गज चंदोये के वास्ते पांचों मेवा। –) केले ४. २७ खेड़ों की कङ्कर. २७ पेड़ों के पत्ते. २७ कुओं का पानी. आम की टहनी. गंगजल यमुनाजल. हरनन्दका जल. समुद्र का जल या समुद्र झाग. पंचरत्न. पंचपल्लव पंचगव्य. पंचमृत. बंदरबाल. हल. बांस की टोकरी. घड़ा कच्चा १ [illegible] का. घंटा १. छायादान की कठोरी २. बष दान. गौदान. मूर्ति सोने की १ मूल की चांदी की १ मूलनी की. सतनजा २७ सेर या श्रद्धा सहित मट्टी हाथी के नीचे की. घोड़े के नीचे की.

गौ के नीचे की रथ के नीचे की बम्बी की नदी आर पार की राजद्वार की ॥ हवन की सामग्री--चावल १ हिस्सा घी २ जौ ३ तिल ४ बूरा २ हिस्सा मेवा ।-) अष्टगंध इन्द्रजौ भोजपत्र पीली मिट्टी ५ सेर एक लक्ष मंत्र पै एक मन चरु होना चाहिए इसी हिसाब से जितना मंत्र जपा हो उतनी ही सामिग्री होनी चाहिए ।

अथ जन्म-पत्री लिखना

ओं श्रीगणेशायनमः ॥ यं ब्रह्म वेदान्तविदो वदन्ति परं प्रधानं पुरुषं तथान्ये । विश्वोद्गतेः कारण मीश्वरं वातस्मै नमो विघ्नविनाशनाय । १ । जननी जन्म सौख्यानां बद्धनी कुलसंपदाम । पदवी पूर्व-पुन्यानां लिख्यतेजन्मपत्रिका । अथ शुभ संवत्सरेऽस्मिन् श्रीनृपतिविक्रमादित्यराज्ये सम्बत् १९९२ शाके शालिवाहनस्य १८५७ उत्तरायणे वा दक्षिणायने वर्षा ऋतौ मासानां मासोत्तमे मासे भाद्रपदमासे कृष्णे पक्षे शुभतिथौ ३ तृतीयायां भौमवासरे घट्यः ३१ पलानि ०१ पूर्वाभाद्रपदनाम नक्षत्र ४३ । ०१ अतिगण्ड नामयोगे ०५ । ३१ बव नामकरणे ३१ । ०१ तत्र दिन प्रमाणम ३४ । ५७ रात्रिप्रमाणं २५ । ०३ कर्कार्क गतांशाः २५ शेषांशाः ५ तत्रेष्टम २४ । ५७ तत्समये मकरलग्नोदये विप्रवंशे वशिष्ठगोत्र मिश्र रामप्रसादजी

तत्पुत्रः मिश्र घासीरामजी तत्पुत्र मिश्र केदारनाथजी गृहे पुत्रो जातः । पूर्वा भाद्रपदभे ४ चरणे जन्म नाम मिश्र दिवानसिंहजी स चेश्वरकृपय । दीर्घायुष्मान् भवतु तस्यराशिः मीन, वरण विप्र, वैश्य जलचर योनि अश्व, राशीश गुरुः गण मनुष्य, नाड़ी आद्य, वर्ग सर्प्प, एते गुणा विवाहादि व्यवहारादो च विचारणीयाः शुभम् भूयात् ॥
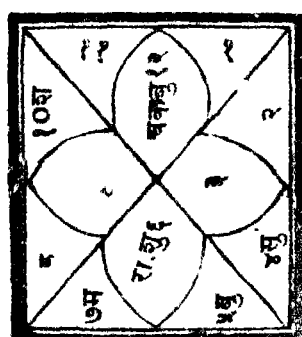
अथ जन्मकुण्डली (२)　　अथ चन्द्रकुण्डली (३)

लग्न परीक्षा और गृहों का फल

शब्द—मेषे वृषे सिंहे मकरे च तथा तुले ।
अर्द्ध शब्दो घटे कन्या शेषे शब्द विवर्जयेत् ॥

टीका—मेष वृष सिंह मकर तुल इन लग्नों में बालक का जन्म जन्म हो तो होते ही रोवे और कुम्भ, कन्या में रोकर चुप हो जाय अर्थात् थोड़ा रोवे और लग्नों में बालक रोवे नहीं ॥

शीर्षोदये विलग्ने मूर्धा प्रसवो न्यथोदये चरणो ।

उभयोदए च हस्तौ शुभदृष्ट. शोभनोऽन्यथा कष्टः ॥

५, ६, ७, ८, ३, ११, इन लग्नों में जन्म हो वो शिर से पैदा हुआ और १२ लग्न में हाथों के बल पहले दोनों हाथ आये और १, २, ४, ९, १० इन लग्नों में पैरों की तरफ से जन्म कहना लग्न पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो बिना कष्ट पापग्रह की दृष्टि से कष्ट हुआ।

मीन मेषे च द्वे भार्ये चतस्रो वृषकुम्भयो: ।
तुलायां च सप्त कन्यायां च वाणा: धनकर्कयो: । अन्य लग्ने भवे त्रीणि सूतिकायां विधीयते ॥

टीका—मीन, मेष लग्न में २ स्त्री कहे । वृष, कुम्भ में ४ स्त्री कहे । तुल कन्या में ७ स्त्री कहे । धन, कर्क में ५ स्त्री कहे । अन्य लग्नों में प्रसूति गृह में तीन स्त्री कहे ।

शशि लग्ने मध्ये धात्री ज्येगृहेशे दिगम्बर ।
ते बीच मन्दिर नारी बालकस्य युवा वृद्धः ॥

टीका—लग्न से जहाँ चन्द्रमा पड़े उस बीच में जे ग्रह हों उतनी स्त्री कहे बाल, युवा, वृद्ध ।

पापश्च विधवा नारी क्रूरग्रहे कुमारिका ।
सौम्यग्रहे सुभागा च सूतिकायां विधीयते ॥

टीका लग्न के और चन्द्रमा के बीच में जे पाप ग्रह हों उतनी विधवा स्त्री कहे । जै क्रूर ग्रह हों उतनी कुंवारी कहे । और जै शुभ ग्रह हों उतनी सुहागिन कहै ।

यत्र राहूस्तत्र शय्या मङ्गलं तत्र भंगद: ।
रविस्थाने दीपकश्च शनि: लोहं च जायते ॥

टीका—जहाँ राहु हो वहां खाट कहे । जहाँ मंगल हो खाट

पुरानी या पाया फटा हुआ कहे। जहाँ सूर्य हो वहां दीपक का स्थान कहे जहाँ शनिश्चर हो वहाँ लोहा कहे ॥

उदयस्थेपि वा मन्दे कुंजे वास्तं समागते।
स्थिते वात त्रपा नाथे शशांम सुत शुक्रयोः॥

टीका—जो शनि लग्न में हो या ७ मंगल हो या चन्द्रमा ३।६।२।७ इन राशियों का होय तो पिता घर नहीं था ऐसा कहना ॥

राशियों के स्थान

१ मेष, शिर, २ मुख, ३ स्तन, ४ हृदय, ५ उदर, ६ कंठ ७ नाभि, ८ लिंग, ९ गुदा, १० जंघा, ११ घुटना, १२ पैर। इन में से जन्म समय जिस राशि में पाप युक्ती ग्रह हों उसी जगह तिल या लहसन का निसान बताना ॥

सिंह कन्या धने मीने कर्के च तथा तुले।
अन्तरिक्षे भभेज्जन्म शेषो भूमौ [illegible]॥

टीका—सिंह, कन्या, धन और मीन, कर्क, तुल इन लग्नों में बालक का जन्म शय्या पर कहे या हाथों पर और लग्नों में पृथ्वी पर कहे ॥

दशम बुधजीवस्य केन्द्रस्थाने यदा भवेत्।
सूर्य तथा भौमस्य बालकस्य षडं गुला॥
सव्यहस्त करं चेव दक्षिणे करमेव च।
वामहस्ते भवेद्राज्यं सजातो कुलदीक॥

टीका—दशवें स्थान बुध या गुरु हो या केन्द्र १, ४, ७

१०, में हो या सूर्य मङ्गल हो बालक के ६ उङ्गली कहे ॥ बायें में दायें हाथ में या पैर में ॥ बाँये हाथ में छः उङ्गली अच्छी होती हैं ॥

तनुस्थाने यदा चन्द्रौ अथवा षष्टे वा भवेत् ।
बालकस्य भवेज्जन्म तैलं दीपे न दृश्यये ॥
शुक्रः शौरिर्दम्यां च पंचम राशिचन्द्रमा ।
तस्यबालस्य भवेज्जन्म दीपकं परिपूर्णकं ॥
खण्डदीपं तथा बुधे अष्टमे च बृहस्पतौ ॥

टीका–तनु स्थान में छटे स्थान में चंद्रमा हो तो दीपक में तेल नहीं था । शुक्र शनि दशवे स्थान हो, चंद्र पाँचवे हो तो दीपक में तेल भरा हुआ कहें । बुध हो तो आधा दीपक तेल से भरा हुवा कहे । अष्टम बृहस्पति हो तो थोड़ा तेल भरा हुआ ऐसा कहे । जो लग्न के आरम्भ में जन्म हो तो बत्ती पूरी थी और जो मध्य में हो तो आधी और अंत में नहीं रही थी ऐसा कहना चाहिए ।

चरलग्ने करे दीपं स्थिरे तत्रैव संस्थिते ।
द्विस्वभावे तथा लग्ने दीपं हस्ते प्रचालयेत् ॥

टीका–जो सूर्य चर राशि में हो या चर लग्न हो तो दीपक हाथ में उठाया हुआ कहे । स्थिर लग्न में वहीं धरा कहें । द्विस्वभाव में उठा के वहीं धर दिया था बत्ती और गेरी हो ॥

लग्नेन्दुमध्येशनिर्विष्टतैलं सूर्यो भवेत्तस्य घृतस्य दीपं ।
शेषग्रहे कटुमैं तैलं एवं प्रसूताखिलदीपमाहुः ॥

टीका—जो लग्न में चन्द्रमा या शनि हो तो दीपक में मीठा तेल कहे, सूर्य हो तो घी कहे और कोई ग्रह हो तो कड़वा तेल कहे।

द्वादशे भवने भौमे वामनेत्रं विनश्यति।
द्वादशे रवि राहुश्चल दक्षिणं चक्षुनाशयेत्॥

टीका—१२ स्थान मङ्गल हो तो बाँया नेत्र बिगड़ा कहे। और १२ सूर्य राहु हो तो दाहिनी आँख का नाश कहे।

शुक्रश्च तृतीये स्थाने सिंहे मेषे बृहस्पतौ।
दशमे अर्के भौमे च मूको भवति बालकः॥

टीका—तीसरे शुक्र हो, मेष का या सिंह का गुरु हो, और दशमें सूर्य हो या मंगल हो तो बालक गूंगा हो।

तुलालि कुम्भो अकुलीर लग्ने वाच्यं प्रसूता ग्रह पूर्व द्वारे। कन्या धनुमीननृयुग्नलग्ने स्त्रादुत्तरा पश्चिमनो वृषे च। मेषे च सिंहे मकरे च याम्ये निगद्यते सौमुनिद्वारदेशः॥

टीका—तुला, वृश्चिक, कुम्भ, कर्क, इन सब लग्नों में बालक का जन्म हो तो जच्चा के घरका दर्वाजा पूर्व को बतावे। और ६। ६। १२। ३ इनमें उत्तर को, २ में पश्चिम को, १। ५। १० में दक्षिण को दर्वाजा कहे।

अर्कसुतः कुजोराहुः पंचमस्थो प्रसूतिर्वा।
लशुनं वामकुक्षौ च गर्गावर्णे भाषितं॥

टीका—शनि, राहु, मंगल ये ग्रह पांचवे स्थान हों तो बाँई काँक में लस्सन कहना ऐसा गर्ग मुनि कहते हैं।

सिंहलग्ने यदा जातो यामित्रे च शनैश्वरः।
विप्रपुत्रोऽपि संजातो म्लेच्छो भवति बालकः॥

टीका—जो सिंह लग्नमें बालक का जन्म हो और सातवें स्थान में शनि हो तो ब्राह्मण के यहां भी बालक म्लेच्छ हो जाता है।

रिपुस्थाने यदा चन्द्रः षट् रात्रं नैव लंघते।
अथवा षष्ठमास च जातकाय विचारयेत्॥

टीका जिसके ६ स्थान में पाप ग्रह के साथ चन्द्रमा हो तो ६ दिन तक कष्ट कहें। या छः महने तक जीवे॥

रवि शशि मङ्गल बार स्या कृतिका भरणी युता।
श्लेषा छट आठें चौदस्या जो उपजे कन्या धन्या॥
आप मरे या मोह सतावे कुल क्षय करे कलंक लगावे

टीका—रवि, शनि, मङ्गल ये बार और कृतिका, भरणी, श्लेषा एक नक्षत्र ६। ८। १४ ये तिथि जो इनमें कन्या का जन्म हो तो कन्या मरे या माता मरे या कुल क्षय हो या कहीं कलंक लगे।

आदित्य नवमे तात माता चन्द्र चतुर्थके।
भौमे च दृष्टौ भ्राता बुध तृतीये च मातुले॥

टीका—सूर्य से नववें स्थान में पिता को देखे चन्द्रमा से ४ स्थान माता को देखे मङ्गल से ३ स्थान में भाई को देखे। बुध से ३ स्थान में मामा को देखे। अच्छा ग्रह हो तो अच्छा फल कहे बुरा हो तो बुरा कहे।

चौथ चतुर्दशी नवमी जानो, रवि गुरु मङ्गलवार

पहिचानो । जो तीनो में उत्तरा लहे, निश्चै बीच पराया कहै ॥

टीका—४ । १४ । ६ ये तिथी सूर्य, गुरु, मङ्गल ये बार और तीनों उत्तरा नक्षत्र में बालक हो तो और का बिंद कहे ॥

चतुष्पदगते भानौ शेषैर्वीर्यसमन्वितः
द्वितनुस्थैः चत्वयमयोभवः कोशवेष्टितौ ॥

टीका सूर्य चतुष्पद राशि । २ । ३ । ... मकर ... में होवे और सब ग्रह द्विस्वभाव में बलवान होय तो दो बालक का जन्म कहे ॥

षष्ठाष्टमे च मूर्त्तौ च राहुश्व भवति यदि ।
चतुर्वर्षे भवेन्मृत्युः रक्षति यदि शंकरः ॥

टीका—६ । ८ । १ । राहु हो तो चौथे वर्ष में मृत्यु कहें । जो महादेव भी रक्षा करें तो भी न जीवे ॥

चतुर्थे च गतो राहुः अथवा दशमो भवेत् ।
तस्य बालस्य जन्मेषु दशमे मासि न जीवित ॥

टीका ४ या १० स्थान राहु हों तो दसवें महीने कष्ट कहे ।
मीने च लग्ने गुरुर्भार्गवः स्यात् मेषे च सूर्यो मकरे कुजः स्यात् । महीपति छत्रधरोपि बालःदशापि जाता नृपतिर्भवति ॥

टीका-जो मीन लग्न हो और उसमें गुरु शुक्र पड़े हो और मेष राशि का सूर्य पड़े, मकर का मङ्गल पड़े तो वह बालक नृप हो या राजा का मंत्री हो या धनाढ्य हो ॥

लग्ने शुक्रो बुधो यस्य केन्द्रे बृहस्पतिः ।
दशमेऽङ्गारकोयस्य सजातो कुलदीपकः ॥

टीका--लग्न में शुक्र या बुध हो केन्द्र में १ । ४ । ७ । १० में गुरु और १० में मङ्गल हो तो बालक कुल में दीपक हो ।

लग्ने शुक्रो बुधो नास्ति नास्ति केन्द्रे बृहस्पतिः ।
दशमेऽङ्गारकोनास्ति सजातः किं करिष्यति ॥

टीका--लग्न में शुक्र बुध न हो और केन्द्र में गुरु भी न हो १०मङ्गल भी न हो तो वो जन्म लेकर क्या करेगा यानी टहलवा हो

लग्नस्थाने यदा सौरी रिपुस्थाने च चन्द्रमा ।
कुजश्च दशमस्थाने चमृतकः जायते पिता ॥

टीका-लगन में शनि ६ चंद्रमा १० मङ्गल हो तो उसके पिता की मृत्यु हो या कष्ट हो ॥

चतुर्थे कर्मणि सोमः सुखेन प्रसवं कराः ।
त्रिकोणेऽस्तगते पापाः कष्टतः प्रसवं कराः ॥

टीका--लगन से ४ । १० स्थान चंद्रमा हो तो माता को कष्ट नहीं हुआ और जो ६।५।७ पाप ग्रह हों तो माता को कष्ट हुआ ।

कृष्णपक्षे दिवा जन्म शुक्लपक्षे यदा निशि ।
षष्ठाष्टमो भवेत चन्द्र सर्वारिष्टं निवारयेत् ॥

टीका--जो कृष्णपक्ष में दिन में और शुक्लपक्ष में रात्रिमें बालक का जन्म हो और ६।८ घर में चन्द्रमा हो तो कष्ट दूर करे ।

लग्नस्थाने यदा शौरि षष्ठे भवति चन्द्रमा ।
कुजश्च सप्तमे स्थाने पिता तस्य न जीवति ॥

टीका—लग्न में शनि ६ चंद्रमा ७ मंगल हो तो पिता जीवे

दशमस्थाने यदा भौमः शत्रु क्षेत्रस्थितो यदि ।
मृतये तस्य बालस्य पिता शीघ्रं न जीवति ॥

टीका—१० स्थान मंगल हो और शत्रु की राशि में हो तो उस बालक का पिता शीघ्र मरे ।

त्रिभिरुच्चे भवेद्राज्यं त्रिभिः स्वस्थानि मन्त्रिणाँ ।
त्रिभि र्नीचै र्भवेद्दासः त्रिभिरस्त र्भवेत्शठः ॥

टीका—जिसके तीन ग्रह उच्च के पड़े हों वह राजा होता है और जो ३ ग्रह अपने स्थान के हों तो मंत्री और ३ ग्रह नीच के हों तो दास हो और जो ३ ग्रह अस्त के पड़े तो वह मूर्ख होता है ॥

जन्म लग्ने यदा भौमः चाष्टमे च बृहस्पतिः ।
वर्षे च द्वादशे मृत्युः यदि रक्षति शङ्करः ॥

टीका—जो जन्म लग्न में मंगल और ८ बृहस्पति हो तो १२ वर्ष में मृत्यु हो शंकर भी रक्षा करे तो भी न जीवे ॥

चतुर्थे च यदा राहुः षष्ठे चन्द्रोष्टमेपि वा ।
सद्य एव भयेन्मृत्युः शंकरो यदि रक्षति ॥

टीका—४ स्थान राहु हो ६ । ८ चन्द्रमा हो तो बालक तत्काल मृत्यु पावे । महादेव भी रक्षा करे तो भी न जीवे ॥

लग्न क्रूरश्च भवने क्रूरः पातालगोयदा ।
दसमें भवने क्रूरः कष्टे जीवित बालकः ॥

टीका—क्रूर ग्रह कर लग्न हो और क्रूर ग्रह ४ स्थान हों या दशमे स्थान हों तो भी बालक कष्ट से जीवे ॥

दशमे भवने राहुः पितामात्राः प्रपीडनं ।
द्वादशे वत्सरे मृत्युः बालकस्य न संशयः ॥

टीका—१० स्थान में राहु हो तो माता पिता को कष्ट और उसको १२ वें वर्ष में मृत्यु तुल्य अरिष्ट हो इसमें संशय नहीं ॥

शनिक्षेत्रे यदा भानुक्षेत्रे यदा शनिः ।
द्वादशे वत्सरे मृत्युः बालकस्य न संशयः ॥

टीका—शनि के क्षेत्र में सूर्य और सूर्य के क्षेत्र शनि हो तो १२ वर्ष में अरिष्ट हो (क्षेत्र स्थान घर को कहते हैं)

मूर्तौशुक्रबुधौ यस्य केन्द्रे चैव बृहस्पतिः ।
दशमे ऽङ्गारकस्चैव संजातः कुलदीपकः ॥

टीका—जिसमें जन्म लग्न में बुध, शुक्र हो केन्द्र ४, ५, ७, १० में गुरु हो और १० स्थान मङ्गल हो तो वह बालक कुल में दीपक हो ॥

पंचमे च निशानाथो त्रिकोणे यदि वाक्पतिः ।
दशमे च महीसुतः परमायु त जीवति ॥

टीका—लग्न में चन्द्रमा ५ स्थान त्रिकोण में बृहस्पति हो ५ । ६ । १० । मङ्गल हो तो उसकी परमायु जानना अर्थात् १०० वर्ष की उमर को ॥

धनस्थाने यदा शौरिः सहकेन्द्रे धरात्मजः ।
शुक्रो गुरु सप्तमो च अष्टमे रवि चन्द्रमा ॥
ब्रह्म पुत्रो यदि वापि वेश्यासु च सदा रति ।
प्राप्तो विंशतितमे म्लेच्छा भवति नान्यथा ॥

टीका—दूसरे स्थान में शनि राहु मङ्गल हो और सातवें स्थान शुक्र गुरु हो ८ स्थान रवि चन्द्र हो तो ब्राह्मण का पुत्र भी हो तो भी वेश्यागामी हो २० वर्ष की उमर में म्लेच्छ हो जाय ॥

अजे सिंहे कुजे शौरी लग्ने तिष्ठ तपञ्चमे ।
पितरं मातरं हन्ति भ्रातरं शिशुन क्रमात ॥

टीका—जो रवि राहु मङ्गल शनिश्चर ये ग्रह १० । ५ स्थानमें पड़े तो कष्ट देते हैं शनिश्चर रवि हो तो पिता को कष्ट दे राहु माता को, मंगल भ्राता को, शनिश्चर बालक को कष्ट करता है ॥

भौमक्षेत्रे यदा जीवे षष्ठाष्ठसु च चन्द्रमाः ।
वर्षेष्टमेपि मृत्युर्वो ईश्वरो रक्षादि यदि ॥

टीका—मंगल के क्षेत्र में बृहस्पति हो और ६ । ८ स्थान में चन्द्रमा हो तो ८ वर्ष में बालक को कष्ट कहना जो ईश्वर ही रक्षा करे तो ही बचे ॥

दशमेपि यदा राहु जन्मे लग्ने यदा भवेत ।
वर्षे तु षोडशे ज्ञेयो वुधमृत्यु नरस्य च ॥

टीका राहु १० में अथवा लग्न में हो तो १६ वर्ष में अरिष्ठ जानना ॥

षष्टे च भवने भौम राहुश्च सप्तमे भवेत ॥
अष्टमे च यदा शौरी तस्य भार्या न जीवति ॥

टीका—६ स्थान मंगल हो, और ७ स्थान राहु हो, और ८ स्थान शनि हो तो उसकी स्त्री को कष्ट कहे ॥

कन्या की जन्म पत्री में पाप ग्रह क्रूर ग्रह सातवें स्थान में न हों क्योंकि ये वैधव्य योग करते हैं । इसका इतना ही देखना बहुत है ॥

(शुभ और अशुभ ग्रह देखना)

टीका-चंद्रमा, बुध, बृहस्पति, शुक्र ये शुभ ग्रह हैं और सूर्य, मङ्गल, शनि, राहु, केतु ये पाप और क्रूरग्रह हैं।

स्त्री कुण्डली फलम्

सप्तमे भार्गव जाता कुलदोषकरा भवेत।
कर्कराशिस्थिते भौमे सौरः भ्रमति वेश्मसु ॥

टीका—सातमें घर में जिस स्त्री के शुक्र हो वो कुल को दोष लगावे कर्क राशि में मंगल हो या शनि हो तो वन्ध्या हो या घर घर वास करे ॥

बाल्ये च विधवा भौमे पतित्याज्या दिवाकरे।
तस्मै सौरि पापदृष्टे कन्यैव समुपेष्यति ॥

टीका—जिस स्त्री के ७ स्थान भौम हो उसको बाल विधवा जोग कहे सूर्य हो तो पति त्यागन करदे। शनि हो या पाप ग्रह की दृष्टि हो तो उस कन्या का विवाह बड़ी उमर में हो।

एव एव सुरराज पुरोवा केन्द्रगोनवपंचांगो वा।
शुभग्रहस्य विलोकयतोवा शेषखेचरबलेन किंवा ॥

टीका-जिस स्त्री के गुरु तो केन्द्र में १। ४। ७। १० हो या ९। ५ हों तो और शुभ ग्रहों की उन पर दृष्टि हो फिर खोटे ग्रह कुछ नहीं कर सकते।

भाषा—सूर्य से ९ स्थान पिता का हाल कहना अच्छा या बुरा और चंद्रमा से ४ स्थान माता का हाल कहना मंगल से ३ स्थान भाई का शनि से ८ स्थान मृत्यु का कहना।

बुध से ६ स्थान रोगों का हाल कहना । मामा और शत्रु का कहना । गुरु से ५ स्थान सन्तान का कहना । शुक्र के ७ स्थान स्त्री का कहना । यह दूसरा कायदा है जो ग्रह शुभ पड़े अच्छा कहे पापी या क्रूर पड़े तो खोटा कहे ।

जिस स्थान का स्वामी अपने स्थान से दूसरे स्थान को देखता हो उस स्थान को बढ़ावेगा. पाप ग्रह और क्रूर ग्रह घटावेगा ये ग्रहों का देखना है जिस स्थान में शुभ ग्रह हो तो उसे बढ़ावेगा और पापी और क्रूर ग्रह नाश करेगा ।

भूर्तौं करोति विधवां दिनकृत् कुजश्च राहुविनष्ट तनया रविजोदरिद्राम् । शुक्रः शशांकतनयश्च गुरुश्च साध्वीमायःक्षय प्रकुरुतेत्र च शर्वरीशः ॥

जिसके लग्न में सूर्य और मङ्गल हो वह स्त्री विधवा होती है राहु केतु सन्तान का नाश करता है. शनिश्चर हो तो दरिद्री होती है. और शुक्र बुध अथवा बृहस्पति होय तो साध्वी (भली हो) और चन्द्रमा हो तो आयु कम करता है ।

कुर्वन्ति भास्करशनैश्चर राहुभौमाः दारिद्रयदुःख मतुल सततं द्वितीए वित्तेश्वरीमविधवां गुरु शुक्रसौम्याः नारी प्रभूततनयां कुरुते शशांक ॥

टीका—सूर्य शनिश्चर राहु केतु और मङ्गल यह ग्रह दूसरे स्थान में स्थित हो तो वह स्त्री अत्यन्त दरिद्र और दुखिता होती है बृहस्पति शुक्र या बुध हो तो वह स्त्री सौभागवती और अधिक धनवती होनी चाहिये और चन्द्रमा बहुत पुत्रवती करता है ।

शुक्रेन्दुभौमगुरुसूर्य बुधास्तृतीये कुर्युः सती वहु

सुतां धनभोगवती च । कन्यां करोति रविजो बहु वित्तयुक्ताम् पुष्टिं करोति नियतं खलु संहिकेरः ।

टीका—जिस स्त्री के तीसरे स्थान में शुक्र चन्द्रमा मङ्गल गुरुवार सूर्य अथवा बुध इनमें से कोई ग्रह बैठा होय तो वह स्त्री पतिव्रता अनेक पुत्रवती और धन संपन्न वाली होती है, शनि बैठा होय तो उसके विशेष धन होता है, उसी स्थान में राहू केतू बैठा हो तो शरीर को पुष्ट करता है ।

स्वल्पं पयःक्षितिजसूर्यसुते चतुर्थे सौभाग्यशील रहितां कुरुते शशांकः । राहुः सपत्निसहितां क्षिति वित्तलाभम् दद्याद बुधः सुरुगुरुभृगुजश्च सौख्यम् ॥

टीका—चतुर्थ स्थान में मंगल अथवा सूर्य स्थित हों तो उस औरत के दुग्ध स्वल्प अर्थात थोड़ा होता है । चंद्रमा सौभाग्य और सुशीलता का नाश करता है राहू केतु हो तो उसके कन्या ज्यादा होती हैं और उसको भूमि तथा धन का लाभ भी होता है बुध गुरुवार और शुक्र हो तो उसे अनेक प्रकार के सुख की प्राप्ति होती है ॥

नष्टात्मजों रविकुजौ खलु पंचमस्थौ—चन्द्रात्मजा वहुसुतां गुरुभार्गवौ च । राहुर्ददाति मरणं रवि जश्च रोगं, कन्यानिधानमुदरं कुरुते शशांकः

टीका—पंचम स्थान में यदि सूर्य अथवा मंगल हो तो सन्तान को नष्ट करता है, बुध गुरुवार और शुक्र हो तो वह औरत अनेक पुत्रवती होती है । राहु केतु मरण करता है और शनिश्चर ज्यादा रोग उत्पन्न करता है । और यदि चन्द्रमा इस स्थान में हो तो कन्या ज्यादा होती हैं ॥

षष्ठेशनैश्चर कुजौ रविराहूजीवाः । नारी करोति शुभगां पतिसेविनी च । चन्द्र करोति विधवामुशना दरिद्राम् वेश्या शशांकतनयः कलहप्रिया वा ॥

टीका—जिस स्त्री के छठे स्थान में शनिश्चर सूर्य राहू केतू गुरुवार अथवा मङ्गल इनमें से कोई ग्रह बैठा होय तो वह औरत अच्छी (सदा चारण करने वाली) और पति की अत्यन्त सेवा करने वाली होती है। छटे स्थान में चन्द्रमा होय तो विधवा करती है।

और इसी स्थान में शुक्र स्थित होने से वह स्त्री दरिद्री होती है और उस स्थान में बुध बैठा होय तो वह स्त्री वेश्या अथवा नित्य कलह करने वाली होती है ॥६॥

सूर्याऽऽरसौरिशशिसौम्यगुरु बिन्दुशुक्रा नारी करोति सतत निज जन्मलग्नात् । ईशैर्विहीनविधवां च जरासमेतां सौन्दर्य भर्तृ सुखभोगयुतां क्रमेण ॥

टीका—जिस स्त्री के सूर्य के सप्तम हो तो वो पति को त्याग दे, मंगल हो तो विधवा हो, शनि हो तो बहुत बड़ी का विवाह हो चंद्रमा हो तो सुन्दर हो बुध हो तो सौभाग्यवती वृहस्पति हो तो सर्व सुख वाली, शुक्र हो तो भोग भोगने वाली भाग्यवान हो।

स्थानेऽष्टमे गुरुबुधौ नियत वियोगं मृत्यु शशांक भृगुश्च तथैव राहुः । सूर्यः करोति विधवां शुभगां महीजः सूर्य्यात्मजा बहुसुतां । पतिवल्लभां च ॥

तथैव सौम्योराहुः करोति विधिवांभृगुरर्थयुक्ताम् ॥

टीका—स्त्री के ग्यारहवें स्थान में सूर्य हो तो वह सुपुत्रवती होती है। उस ही स्थान में मङ्गल पड़ा हो तो उसे पुत्र की सद व अभिलाषा बनी रहे. और चन्द्रमा धनवती करता है, वृहस्पति आयु की बृद्धि करते हैं, बुध और राहु केतू विधवा कर देते हैं, तथा शुक्र अनेक प्रकार के धन का लाभ कराते हैं।

अन्तेगुरुर्हि विधवाकुनरुद्रिद्रां चन्द्रो धनव्ययकरी कुलटां च राहुः साध्वी भवेत् भृगुबुधौ बहुपुत्र पौत्रां प्राणप्रसक्तहृदयां सुहृदां [illegible]

टीका—बारहवें स्थान में जिस स्त्री के बृहस्पति हो तो विधवा करते हैं, सूर्य दरिद्रा (धनहीन) कर देता है, चन्द्रमा धन खर्च कराता है, राहू केतू कुलटा (व्यभिचारिणी) करता है, यदि उस स्थान में शुक्र अथवा बुध हो तो वह स्त्री पतिव्रता होती है और मङ्गल अनेक पुत्र पौत्र युक्त करके सुखी बनाता है।

छटी जसुठन को [illegible]

टीका—६ दिन को छटी और १० दिन या ११ दिन का दसूठन शुभ बार का हो और जन्म पत्री में जहां चन्द्रमा पड़े हों वो उसकी राशि समझनी चाहिये।

वर्ग देखना लिख्यते

अवर्गोगरुडो ज्ञेयो विडालः स्यात्कवर्गकः। चवर्ग सिंहनामास्य।टटवर्गः कुक्कुरः स्मृतः। सर्पाख्यः स्यात्त-

वर्गोपि पवर्गो मूषकः स्मृतः । यवर्गो मृगनामां स्याच्चया मेषः शवर्गकः ॥

＊ वर्ग चक्रम ＊

अ	क	च	ट	त	प	य	श
आ	ख	छ	ठ	थ	फ	र	ष
इ	ग	ज	ड	द	ब	ल	स
उ	घ	झ	ढ	ध	भ	व	ह
ए	ङ	ञ	ण	न	म	०	०
गरुड़ वर्ग	बिलाव वर्ग	सिंह वर्ग	कुत्ता वर्ग	सर्प वर्ग	मूषा वर्ग	मृग वर्ग	मेंढा वर्ग

वर्ग बैर देखना

बैर मूषकमार्जारं तद् बैरं मृगसिंहयोः बैर गरुड़सर्पस्च तद बैरं स्वानमेषयोः ॥

टीका- मूसे का और बिलाव का बैर । मृग और सिंह का बैर गरुड़ सर्प का बैर कुत्ते और मेंढा का बैर ।

वर्गफल देखना

स्ववर्गात् पंचमे शत्रुस्चतुर्थे मित्रसंज्ञकः ।
उदासीने तृतीयस्च वर्गभेदस्त्रिधोच्यते ॥

टीका-अपने वर्ग से ५ वां वर्ग हो तो वैर जानो चौथा हो तो मित्रता । तीसरा हो तो उदासीन जानना ॥

(द्वादश भाव संज्ञा) बारह स्थानों के नाम

तनु १ धन २ सहोत्थाख्य ३ सुहृत ४ पुत्रा ५ रि ६ योषितः ७ निधनं ८ धर्म ९ कर्म्मा १०आय ११ व्यया १२ भावा-स्ततोः क्रमात ॥

तनुधनुं सुहृत सुखं, पुत्र शत्रुः कलत्रकाः ।
मरणं धर्म कर्मा व्ययं द्वादश शंशयः ॥

टीका—इन बारह स्थानों के नाम ऊपर के चक्र में लिखे हैं ।

ग्रहों की दृष्टि

टीका—जिस स्थान को जो ग्रह देखता है उसका नाम दृष्टि है ।

पादैकदृष्टिर्दसमे तृतीये द्विपददृष्टि. वि पंचमे वा ।
त्रिपाद दृष्टिश्चतुरष्टके च संपूर्णदृष्टिः समसप्त के च
तृतीये ३ दशमे १० मंदो नवमे ९ पंचमे ५ गुरु ।
चतुरा ४ ष्टम ८ भवेत्भौम शेषं सप्त ग्रहा स्मृता ॥

टीका-सब ग्रह अपने स्थान से तीसरे दशवें घर में एक पदा दृष्टि से देखते हैं ९ वें ५ वें घर में दो पाद दृष्टि ४ । ८ वें घर में तीन पाद और सब ग्रहों की ७ वें घर में संपूर्ण दृष्टि

होता है ॥ शनि ३ । १० वें घर में भी । गुरु ५ । ६ वें घर में भी मङ्गल ४ । ८ वें घर में भी । संपूर्ण देखते हैं ॥

ग्रहों की अवधि

मासं शक्रबुधादित्याश्चंद्रः सपःदिनद्वयम ।
भोमस्त्रिपच्च जीवोऽद्धं साद्धंवर्षद्वयं शनिः ॥
राहुः केतुः सदाभुक्ते साद्धमेकंतु वत्सरं ।

टीका—सूर्य शुक्र बुध एक २ महीना एक राशि पै भोग करते हैं यानी रहते हैं । चन्द्रमा सवा दो दिन रहता है । मंगल १॥ महीने ब्रहस्पति १ वर्ष शनिश्चर २॥ वर्ष । राहु-केतु-डेढ़ वर्ष भोग करते हैं ।

नवग्रहों की जात

ब्राह्मणौ जीवशुक्रो च क्षत्रियौ भौमभास्करौ ;
सोमसौम्यौ विशौ प्रोक्तौ राहुमंदो तथाऽसुरौ ॥

टीका-शुक्र गुरुवार की ब्राह्मण जाति है । मंगल व सूर्य की क्षत्री । बुध, चन्द्रमा की वैश्य । शनिश्चर, राहु-केतु इनकी राक्षस जाति है ।

राशिभाव संज्ञा

१ मेष शिर, २ मुख, ३ बाहु, ४ हृदय, ५ जंघा ६ कमर, ७ सूंडी, ८ लिंग, ९ गुदा, १० पेट, ११ घुटना, १२ चरण ॥

बारह राशियों रङ्ग

१ अरुण, २ श्वेत, ३ हरित, ४पाटल, ५ पांडु, ६ पिंगल, ७ चित्रा, ८ श्वेत, पूर्वार्ध सुवर्ण उत्तरार्ध पिंगल, १० पिंगल, ११ विचित्र, १२ भूरा ।

राशियों के भाव

एक चर, दूसरी स्थिर, तीसरी द्विस्वभाव इसी प्रकार १२ राशियों को गिने इनकी यही तान संज्ञा हैं ।

गृहों का रङ्ग लिख्यते

रक्तावङ्गारकादित्यो श्वेतो शुक्रनिशाकरौ ।
हरितः बुधो गुरू पीत शनिः कृष्णस्तथच ॥
राहु केतु स्तथा धूम्रं कारयेञ्च विचक्षणः ॥

टीका—मंगल सूर्य इनका लाल रंग—चन्द्मा शुक्र का सफेद रंग, गुरुवार का पीला, बुध का हरा, शनि का काला, राहु केतु का धुंवे के सा । ग्रह स्थान कहते हैं। सूर्य तो शरीर चन्द्रमा मन, मंगल सत्व, बुध वाणी, गुरुवार ज्ञान, व सुख शुक्र, वीर्य अर्थात् कामदेव शनि दुख । और बलवान ग्रह पुष्ट और निर्बल ग्रह बलहीन होते हैं ।

टीका—सूर्य राजा, चन्द्रमा मंत्री, मंगल सेनापति, बुध, गुरु, शुक्र मंत्री, शनि दूत, जो गृह फल देने वाला है वह ऐसे ही अधिकारी के द्वारा फल देता है ।

स्वामी देखना

मेषवृश्चिकयोर्भौमः शुक्रोवृषतुलाधिपः । बुधः

कन्यामिथुनयोः पति कर्कस्य चन्द्रमा. ॥ स्वामी मीनधनुर्जीवः शनिर्मकरकुम्भयो. । सिंहस्याधिपतिः सूर्यः कथितो गणकोत्तमैः ॥ कन्याराहोगृह प्रोक्तं केतोश्चमीनसंज्ञकम् ॥

१	२	६	९	१०	४	५	६	१२
८	७	३	१२	११	●	●	०	●
मीन स्वामी	शुक्र स्वामी	बुध स्वामी	गुरु स्वामी	श० स्वामी	चन्द्र० स्वामी	सू० स्वामी	रा० स्वामी	के० स्वामी

उच्च नीच गृह देखना

रविमेषे तुले नीचो वृषे चन्द्रास्तु वृश्चिके । भौमो नक्र च कर्के च स्त्रियांसौमो झषेतथा । गुरु कर्के च नक्रे च मीने कन्ये सितस्य च । मन्दस्तालयां मेषे च कन्या राहु गृहस्य च ॥ राहुर्युग्मे च चापे च ततोवत केतु जं फलं । प्रोक्तम ग्रहाणामुच्चत्वं नीचत्वं चक्रमादबुधैः ।

ग्रह	सू०	च०	म०	बु०	गु०	शु०	श०	रा०	के०
ऊंच	१	२	१०	६	४	१२	७	३	९
नीच	७	८	४	१२	१०	६	१	९	३

टीका—जो ग्रह उच्च का होता है उससे वो ही ग्रह ७ वीं राशि का नीच का होता है।

ग्रहों के दान

सूर्याय धेनुन्ताम्रं चगोधूमं रक्तचंदम्। चंद्र शंख चन्दन च सितवस्त्रं च तण्डुलम् ॥ कुज वस्त्र प्रदाद्रव्या रक्तवस्त्रं गुडोदनं। बुधे कर्पूरमुग्धे च हरितवस्त्रं हरिन्मणि। पीतवस्त्रद्वयं जीवो हरिद्रा गणिकं मणिम। अश्वं शुकः सितं देया च्छुक्ल धान्यानि यानि च ॥ शनौ तैलबिबे देया त्कृष्ण गोदानमुत्तमम। राहुश्चमहिषी छागो माश्च तिल सर्षपा ॥ अजा मेषश्च दातव्यो कबुश्चन्नं च मिश्रितं स्वर्णगोविप्रपूजाभिः सर्वेषु शांतिरुत्तमा ॥

ग्रह दान वस्तु चक्रम्

सू०	गुड़, लाल गेहूं, लाल कपड़ा, सोना तांबा, लाल चन्दन, लाल फूल, घृत, केशर, मूंगा, लाल गौ माणिक यानी मणी कुसुम्भ
चं०	सफेद चावल, कपूर, चांदी, घी, चन्दन, श्वेत वस्त्र, दही, सफेद फूल, बूरा, मोती, शंख, मिसरी, सफेद बैल।
मं०	मूंगा, गेहूं लाल, तांबा, गुड़, लाल कन्नेर का फूल, घी, लाल कपड़ा, लाल चन्दन, मसूर, लाल बैल, सोना, केशर, कस्तूरी।
बु०	मूंग, कांसी का पात्र, सोना घी, हाथी दांत, हरा वस्त्र, हरी मणी, हरा फूल, पान हरे, फल, मिसरी, पन्ना, खांड, कपूर, शस्त्र

गुरु	हल्दी, पुस्तक, पीला कपड़ा, घृत, पीले फूल, पुखराज, चने की दाल, सोना, घोड़ा, शक्कर, कांसा, पीला फल, केशर।
शुक्र	सफेद कपड़ा, चावल, गाय, सोना, चांदी, सफेद घोड़ा, चन्दन सफेद, शंख, घृत, बूरा, हीरा, दही, मिसरी, सफेद फूल।
शनि	उड़द, तिल, तेल, काला कपड़ा, भैंस, लोहा, घोड़ा, सरसोंकाली, गौ, काला कम्बल, काला फूल, नीलम, सोना कस्तूरी।
राहु	काली गौ, तिल, तेल, नीला कपड़ा, लोहा, घोड़ा, सरसों, बकरी सतनजा, नील, काला कम्बल, काला फूल, सोना शीशा।
केतु	केड, तिल, तेल, सोना, कस्तूरी, मैंढा, छुरी, सतनजा, काला कम्बल, लोहा, काले फूल, राहु केतु का दान बुध या शनिवार को करे।

टीका-ब्राह्मणों साधुओं को और भूखों को भोजन कराने से और पीपल की पूजा करने से वेद ब्राह्मण को प्रणाम करने से गुरु जनों की आज्ञा पालन से कथा के पढ़ने सुनने से हवन, दान, जप करने से सब ग्रह प्रसन्न हो जाते हैं।

होरा देखना

वारातु षष्ठ षठस्य, होरा सार्द्ध' द्विनाडिका:। अर्क', शुक्रोबुधश्चन्द्रो मन्दोजीवी धरासुत ॥ गुरोर्विवाहे गमने भृगुपुत्र सुभावहा ज्ञाने सौम्यस्य वै चन्द्रः सर्व कार्ये शुभप्रदा ॥ युद्धे तु भूमिपुत्रस्य सेवायां भूपतेः स्वे। धनम चये तु मन्दस्य शुभा होरा प्रकी-

र्तिता ॥ यस्य गृहस्त वारेतु यत्कर्म्म मुनिभिस्मृतम् कालहोरा सुतस्यस्यात् तत्तकर्म्म शुभप्रदम् ॥

टीका—जिस दिन जो वार हो उसी वार का होरा २॥ घड़ी रहता है फिर छठे वार का होरा २॥ घड़ी जैसे रविवार से शुक्र की। फिर २॥ घड़ी बुध की। फिर २॥ घड़ी चन्द्रमा की। फिर २॥ घड़ी शनिश्चर की। फिर २॥ घड़ी गुरु की। फिर २॥ घड़ी मंगल की। इसी रीति से सब दिन की होरा जानो। सोमवार के दिन पहले चन्द्रमा की २॥ घड़ी दिन चढ़े तक होरा रहती है। फिर छठे ग्रह की उसी दिन फिर उससे छठे की ऐसी दिन रात्रि में २४ होरा सातों वार को होतीं हैं। जरूरी कार्य्य जिस वार में करना लिखा है उस दिनको वारान हा तो उसकी होरा में कर ले जौनसा वार हो २॥ घड़ी की पहले उसकी होरा होती है फिर छठे छठे की आयेगी। गुरु की होरा में विवाह शुभ है। यात्रा में शुक्र की होरा। ज्ञान कार्य्य में बुध की। सर्व्व कार्य्य में चंद्रमा की युद्ध में मंगल की। राज सेवा में सूर्य्य की धन इकट्ठा करने में शनि की होरा ये सब शुभदायक होती हैं।

गृह जप संख्या

रवेः सप्त सहस्राणि चंद्रस्यैकादशैवतु। भौमे दश सहस्राणि बुधे चासहहस्रकं ॥ एकोनविंशतिर्जीवे शुक्रस्यैकादशैव तु।इयोर्विंशति मंदे च राहोरष्टादशैव तु। केतोः इप्तसहस्राणि जय संख्याःप्रकीर्तिताः ॥

टीका—सूर्य का जप ७००० बार कराना चाहिये। चंद्रमा का

११ हजार मंगल का १० हजार बुध का ८ हजार बृहस्पति का १६ हजार शुक्र का ११ हजार शनि का २३ हजार राहु का १८ हजार केतु का ७ हजार, इस प्रकार जप कराने चाहिये।

गृह दान समय

बुधस्य घटिका पंच शौरिर्मध्यान्हमेवच । चन्द्रे जीवेच सन्ध्यायां भौमेच घठिकाद्वयं ॥ राहुकेत्वो रर्धरात्रे सूर्यशुक्रे अरुणोदये अन्यकाले न कर्तव्यं कृते दानन्तु निष्फलं ॥

टीका--बुध का ५ घड़ी दिन चढ़े दान करना। शनिश्चर का दुपहरी में। चन्द्रमा और वृहस्पति का सन्ध्या को। मंगल २ घड़ी दिन चढ़े तक। राहु, केतु का आधी रात को सूर्य और शुक्र का सूर्य उदय पर। और समय करे तो निष्फल होता है॥ और छायादान कांशि की कटोरी में घी भरकर सूर्य उदय पर होना चाहिये।

अथ वर्ण देखना

मीनालिकर्कटाविप्राः क्षत्रिमेषो परिर्धनुः ।
शूद्रोयुग्मं तुलाकुम्भो वैश्यो कन्या वृषोमृगाः॥

अथ वर्ण चक्रम्

मीन राशि का	वृश्चिक का	कर्क का	ब्राह्मण वर्ण
मेष का	सिंह का	धन का	क्षत्री वर्ण
मिथुन का	तुला का	कुम्भ का	शूद्र वर्ण
कन्या का	वृष का	मकर का	वैश्य वर्ण होता है

अथ वर्ण फलम्

नोत्तमामामुद्वहेत्कन्यां ब्राह्मणी च विशेषतः,
म्रियते हीनवर्णास्च ब्रह्मणा रक्षितो यदि ॥
विवर्णो च वा नारी शूद्र वर्णो च यः पतिः ।
ध्रुव भवति वैधव्यं शक्रस्य दुहिता यदि ॥

टीका-जो उत्तम वर्ण की कन्या और नीच वर्ण का पुरुष हो तो पुरुष की मृत्यु हो इस वास्ते उत्तम वर्ण की कन्या से विवाह करना वर्जित है। ब्राह्मण वर्ण की पिशेष करके मना है। ब्राह्मण वर्ण की कन्या और शूद्र वर्ण का पति हो तो इन्द्र की भी पुत्री हो तो भी विधवा होय ॥

अथ वैश्य देखना

मकरस्य पूर्वभागो मेष सिंह धनत्रेषाः ।
चतुष्पदाः कीटसं कर्कः सर्पश्च वृश्चिकः ।३६।
तुला च मिथुनं कन्या पूर्वार्द्धं धनुषस्च यत् ।
द्विपदास्तु मृगार्द्धन्तु कुम्भमीनौ जलाश्रितौ ।३७।

टीका-मकर राशि का पहला अर्थ भाग (उत्तराषाढ़ के तीनों चरण, और श्रवण के डेढ़ चरण पर्यन्त का चन्द्रमा) मेष, सिंह आधा धन का पिछला भाग वृष पे चतुष्पद (चौपाये) की संज्ञा जानिये और कर्क राशि की कटि संज्ञा है. वृश्चिक की सर्प संज्ञा है और तुला, मिथुन, कन्या और आधा धन का पहला भाग इनको द्विपद जानिए: मकर का पिछला भाग कुम्भ मीन को जलचर जानिए ॥

अथ वैश्य फलम्

द्वित्वा मृगेन्द्रं नरराशिवश्या । तथैषां जल जास्व भक्ष्याः । सर्वेऽपि सिंहस्य वशे विनाऽलिङ्गं नराणां व्यवहारतोऽन्यत् ॥

टीका—सिंह के बिना मनुष्य राशियों के सब वश में हैं जलचर राशि तो मनुष्यों का भोजन ही है और वृश्चिक को छोड़ सिंह के सब वश में हैं और सब मनुष्यों के व्यवहार से जानों अर्थात वर की राशि के वश में कन्या की राशि हो तो सुभ है ।

अथ तारा देखना

जन्मभादगणयेद्धीमान क्रमाच्च दिनभावधि ।
नवभिस्तु हरेद्भागं शेष तारा विनिर्दिशेत् ॥

टीका—जन्म नक्षत्र से विवाह के दिनके नक्षत्र तक गिने उसमें नौ का भाग दे शेष बचे सो तारा जानिये ।

अथ तारों के नाम

जन्म संपद्विपत्क्षेम प्रत्यारिः साधको वध;
मैत्रातिमैत्र तारां स्युस्त्रिरावृत्या नवैव हि ॥

टीका—जन्म तारा, सम्पत्ति, विपत्ति, क्षेम, प्रत्यारि, साधक, वध मैत्र, अति मैत्र, ये ९ तारों के नाम हैं ॥

तारा शुभाऽशुभ फलम्

जन्म तारा द्वितीया च चतुचतुष्टाष्टमी तथा ।

नौमी षष्ठीं शुभा तारा: शेषास्तिस्रोऽशुभावहा: ॥

टीका—जन्म तारा, संपत्, क्षेम, साधक मैत्र अति मैत्र, ये छः तारे शुभदायक हैं विपत्ति, प्रत्यरि, वध ये तीन तारे अशुभ होते हैं ।

अथ योनि देखना

अश्विनी वारुणश्चावो रेवती भरणी गजः ।
पुष्यश्च कृत्तिका छागो नागश्च रोहिणी मृगः ॥
आर्द्रा मूलमपिश्वानं मूषकः फाल्गुनी मघा ।
मार्जारो दितिराश्लेषा गोजातिरुत्तराद्वयम् ॥
महिषः स्वातिहस्तौच मृगो ज्येष्ठाऽनुराधिका ।
व्याघ्रश्चित्रा विशाखा चवश्रुत्याषाढौ च मर्कटः ॥
वसुभाद्रपदौ सिंहो नकुलोऽभिजिद्विश्वयोः ।
योनयः कथिना भानां वैरमैत्री विचार्यताम् ॥

अथ योनि चक्रम्

अश्वनी भिषा की घोड़योनो	रेवती, भरणी हाथी की	पुष्य, कृतिका बकरी	रोहिणी मृगशिरा नाग	आर्द्रा मूल श्वान
पूर्वा फाल्गुणी मघा मूषा	पुनर्बसु, अश्लेषा विलाव	उत्तरा फा० उत्तरा भा० गौ	स्वात हस्त भेंस	अनुराधा ज्येष्ठा मृग
चित्रा-विशाखा भेड़िया	पूर्वाषाढ श्रवण बन्दर	धनिष्ट, पूर्वा भाद्रपद की सिंह	अभिजित उत्तर.षाढ़ नेवले	इस प्रकार योनी देखना

अथ नाड़ी फलम्

एकनाडीस्थ नक्षत्रे दम्पत्योर्मरणं ध्रुवम् ।
सेवायांच भवेद्धानिर्विवाहेचाशुभं भवेत् ॥

टीका—जो वर कन्या दोनों की एक नाड़ी हो तो दोनों की मौत हो और नाड़ी के बेध में विवाह करे तो हानि हो ।

आदि नाडी वरं हन्ति मध्य नाडी च कन्यकाम् ।
अन्त्यनाडी द्वयोर्मृत्युर्नाडीदोषं त्यजेद् बुधः ॥

टीका-जो आदि नाड़ी का बेध होय तो वर को अरिष्ट करे और मध्य नाड़ी का बेध होय तो कन्या को कष्ट करे । अन्त्य का बेध लगे तो दोनों की मौत हो । बेध नाड़ी को ही कहते हैं ।

एक नक्षत्र जातानां नाडीदोषो न विद्यते ।
अन्यर्क्षपतिवेधेषु विवाहो वर्जितः सदा ॥

टीका-जो वर कन्या दोनों का एक ही नक्षत्र का जन्म होय तो एक नाडी का दोष मानिये । अन्य नक्षत्र में जन्म होय विवाह वर्जित है ।

अथ गोचर गृहा

त्रिषष्टैकादशे भौमो राहुः केतुः शनिः शुभः ।
षष्ठाष्टमे द्वितीये वा चतुर्थे दशमे बुधः ॥
द्वितीये पंचमे जीवः सप्तमे शुभः ।
एकादशे ग्रहाः सर्वे सर्वकार्येषु शोभनाः ॥

अथ गण चक्रम्

अश्विनी	मृगशिरा	रेवती	हस्त	पुष्य
पुनर्वसु	अनुराधा	श्रवण	स्वाति	देवता गण
पूर्वा फाल्गुन	पूर्वाषाढ	पूर्वा भाद्रपद	उत्तराफा ल०	उत्तराषाढ
उत्तराभाद्र०		रोहिणी	भरणी	मनुष्यगण
कृत्तिका	मघा	श्लेषा	विशाखा	शतभिषा
चित्रा	ज्येष्ठा	धनिष्ठा	मूल	राक्षसगण

अथ गण फलम्

स्वगणे परमा प्रीतिर्मध्यमा देवमर्त्ययोः ।
मर्त्यराक्षसयोर्मृत्युः कलहो देवरक्षसोः ॥

टीका—जो स्त्री पुरुष दोनों का एक ही गण हो तो उनमें ज्यादा प्रीति होती हो । और जो देवता और मनुष्य गण हो तो मध्यम प्रीति हो । मनुष्य और राक्षस गण हो तो मृत्यु हो । देवता और राक्षस गण हो तो क्लेश रहे ।

एकाधिपत्ये राशीश मैत्र्यां दुष्ट भकूटके ।
नाड़ी नक्षत्रशुद्धिश्चेद् विवाहःशुभदस्तदा ॥

टीका—वर और कन्या दोनों की राशि का स्वामी एक ही ग्रह

हो अथवा दोनों राशि में मित्रता हो और नाड़ी नक्षत्र शुद्ध रहें तो दुष्ट भकूट आदि में भी विवाह शुभ होता है ।

* अथ नाड़ी देखना *

आदिमध्यान्तकेवापि अन्तमध्यादिभानिच । अश्विन्यादिक्रमेणैव रेवत्यन्तं सुसलिखेत ॥ ऊर्ध्वगावेदरेखाः स्युस्तिर्यग्रेखा दशा स्मृताः । सर्पाकर लिखेदमानां नाड़ीचक्रवदेदबुधः ॥

टीका—आदि मध्य अंत-अंत मध्य, आदि इस प्रकार अश्विनी से रेवती तक गिने ४ रेखा खड़ी और १० रेखा तिर्छी इसी प्रकार सत्ता ईस कोठों को नाड़ी चक्र कहते हैं ।

अथ नाड़ी चक्रम्

आदि	मध्य	अन्त
अ०	भरणी	कृ०
आ.	मृ०	रो०
पु०	पुष्य	श्लेष
उ.फा.	पू.फा.	म०
ह०	चि०	स्वा.
ज्ये०	अनु	वि०
मू०	पू.षा.	उ.षा.
श०	ध०	श्र०
पू.भा.	उ.भा.	रे०

नाड़ी दोष देखना

नाड़ीदोषस्तु विप्राणां वर्णदोषश्च क्षत्रिये ।
गणदोषश्च वैश्येषु योनिदोषस्तु पादजान् ॥

टीका—नाड़ी का विचार ब्राह्मण को अवश्य करना चाहिए । वर्ण का विचार क्षत्री को करना चाहिये । गण का विचार वैश्य को मानना चाहिए । योनी का विचार शूद्र को करना चाहिए ।

शुक्रस्य शेषावरौ ॥ शुक्रज्ञौ सुहृदौ समौसुरगुरुः सौरेस्तथान्येरयः । ये प्रोक्ताः सुहृदस्त्रिकोणभाववनात्तेऽमी मया कीर्तिताः ॥

गृह शत्रु मित्र चक्रम्

गृह	रवि	चंद्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्र	चं० मं० बृ०	र० बु०	र० चं० गु०	र० शु०	र० म० च०	बु० श०	बु० शु०
सम	बु०	मं० वृ० शु० श०	शु० श०	बृ० श० मं०	शनि	बृ० म०	गुरु
शत्रु	श० शु०	० ० ०	बुध	चंद्रमा	बु० शु०	र० चं०	चं० मं०

अथ गण देखना

अश्विनी नृगरेत्योर्हस्तः पुस्यः पुनर्वसुः ।
अनुराधा श्रुतिः स्वाती कथ्यते देवतागणः ॥
तिस्र पूर्वाश्चोत्तराश्च तिस्रोऽप्यार्द्रा च रोहिणी ।
भरणी च मनुष्याख्या गणश्च कथितो बुधैः ॥
कृतिका च मघा श्लेषा विशाखा शततारका ।
चित्रा ज्येष्ठा धनिष्ठा च मूलं रक्षोगणःस्मृतः ॥

टीका—जो धनेष दूसरे घर का मालिक केन्द्र १ । ४ । ७ । १० । इन स्थानों में पड़े तो वो धनवान हो और ३ । ६ । ८ । १२ । घर में पड़े तो धन का सुख नहीं हो ।

३ भ्रातृभाव फलम्

सहजे सहजाधीशे भ्रातृ सौख्यं प्रजायते ।
केन्द्रेपि तद्धज्ञेयं त्रिकस्थे चाशुभं भवेत् ॥

टीका—जो तीसरे स्थानों का मालिक ३ । १ । ४ । ७ । १० इन स्थानों में पड़े तो भाई का सुख हो । ६ । ८ । १२ । में पड़े तो भाई का सुख नहीं है ॥

४ मातृभाव फलम्

शनिभौमकयोर्मध्ये यदि तिष्ठति चन्द्रमाः ।
तदा मातृभयं विद्याच्चतुर्थे दशमे पितुः ॥
तुर्येशः स्यातु शुभे राशौ पापग्रहैवर्जितां ।
केन्द्रे चेन्मातुः सौख्यं स्यादन्यत्र नाशयेत्तथा॥

टीका—जो शनि मङ्गल के बीच चंद्रमा चौथ स्थान में पड़े तो माता नष्ट कहै दशवें स्थान हों तो पिता नष्ट कहै ॥ और जो चौथे स्थान का मालिक केन्द्र में १ । ४ । ७ । १० में और पाप ग्रहों से वर्जित हो तो माता का सुख कहै अन्यथा नहीं ॥

५ पुत्रभाव फलम्

सुतेशः सप्तमे यस्य तस्य गर्भो विनश्यति ।
अन्यत्र यदि पुत्रेशः सुखं त्रिकं विहायत्रा ॥

टीका—जो पाँचवे घर का मालिक सातवे स्थान में हो तो गर्भ नष्ट हो। यदि ६ । ८ । १२ इन स्थानों को छोड़कर और स्थानों मे होवे तो पुत्र का सुख कहे ॥

६ रिपु भाव फलम्

षष्ठे लग्नगेहस्थो रिपुहता नरो भवेत् ।
केन्द्रे चेद्रिपुभिः किंचित् व्यथाऽष्टरिपुगे नहिं॥

टीका—जो छठे स्थान का स्वामी लग्न में हो तो दुश्मन के नाश करने वाला हो यदि वह ग्रह केन्द्र में हो तो दुश्मनों का भय अधिक रहे और ६ । ८ । १२ इन घरों में हो तो दुश्मन नष्ट कहना और मामाओं को भी कष्ट करता है ॥

७ स्त्री भाव फलम्

सप्तमेशः केंद्रगा वा पित्तादिभिविकारवान् ।
स्त्रीसौरूय विजानीयात् भ्रातृवान् धनवानपि ॥
अन्यत्रयादि गेहस्थे स्त्री विहीनो नरो भवेत् ।
धने गहजे ऽथलाभे वा स्त्री सौरूयं महद्भवेत् ॥

टीका—जो सप्तमेश यर्थात् ७ वें स्थान का मालिक केन्द्र १ । ४ । ७ १० इन स्थान में हो तो पित्तादि विकार युक्त और स्त्री का सुख भी अच्छा हो और भाई का सुख, धन का सुख बढ़ता है और इनके सिवा और स्थानों में हो तो स्त्री का सुख नहीं हो और जो या ११ स्थान में हो तो स्त्री का सुख अच्छा हो ।

सर्वोपरिक्रम

व वर्गवर्णौं न गणौ न योनिः, द्विर्द्वादशे चैवषडाष्टके वा । तारा विरुद्ध नव पंचम स्याद राशीश मैत्री शुभदो विवाहे ।

टीका—वर्ग वर्ण, गण, योनी' राशि, षडाष्टक, तारा, नाडी नवें, पांचवे, इतने गणों में से कोई भी मत मिलो और वर कन्या का एक स्वामी हो या दोनों में से मित्रता हो तो जानो सब चीज मिल गई । यह विवाह शुभदायक होता है ।

अथ मङ्गली देखना

लग्ने व्यये च पाताले यामित्रे चाष्टमे कुजे ।
पत्नी हन्ति स्वभर्तार भर्त्ता भार्य्या हनिष्यति ॥

टीका—१ । १२ । ४ । ७ । ८ इन स्थानों में जिसके मङ्गल हो वो मङ्गली होता है जो वर कन्या मङ्गली हों और उनका विवाह हो तो शुभ है । जो वर मङ्गली और कन्या शादी या कन्या मङ्गली वर सादा हो तो अशुभ है जो सादी होय तो उसी की मृत्यु लिखी है ।

मङ्गली दोष दूर होना

यामित्रे च यदो सारिलग्न वा हिबुकेथवा ।
अष्टमे द्वादशे चैव, भौमवाधो न विद्यते ॥

टीका—जिसके ७, १, ४, ८, १२ इन स्थाना में शनिश्चर हो तो मङ्गली का दोष उसको नहीं होता ।

अथ भद्रा देखना।

दशम्यां च तृतीययां कृष्णे पच्चे परे दले।
सप्तम्यां चतुर्दश्यां विष्टः पूर्वदले स्मृता ॥
एकादश्याम चतुर्थ्याम च शुक्ले पच्चे परे दले।
अस्टम्यां पूर्णिमायां च विस्टिः पूर्वदलेस्मृता ॥

भद्रावास चक्रम्

तिथि	१०	३	कृष्ण पक्ष में	भद्रा * पर दल में वास करते हैं।
तिथि	७	१४	कृष्ण पक्ष में	भद्रा * पूर्व दल में वास करते हैं।
तिथि	११	४	शुक्ल पक्ष में	भद्रा पर दल में रहते हैं।
तिथि	८	१५	शुक्ल पक्ष में	भद्रा पूर्व दल में रहते हैं!

चन्द्रमा के साथ भद्रा का वास देखना।

मेष मकर वृष कर्कट स्वर्गे कन्या मिथुन तुलाधनुर्नागे।
कुम्भ मीन अलिकेसरि मृत्यो विचरति भद्रा त्रिभुवनमध्ये

भद्रा चक्रम्

मेष १	मकर १०	वृष २	कर्क ४	के चन्द्रमा मे	स्वर्ग में भद्रा रहते हैं।
कन्या ६	मिथुन ३	तुला ७	धन ९	के चन्द्रमा में	पाताल लोक में भद्रा रहते हैं।
कुम्भ ११	मीन १२	वृश्चिक ८	सिंह ५	के चन्द्रमा में	मृत्युलोक में भद्रा रहते हैं।

* पूर्व नाम पहला और पर नाम पिछला है।

अथ भाग देखना

पौष्णादिकं षट्कमुशन्ति पूर्वामार्द्रादिकं द्वादश मध्यभागम्। पौरन्दराद्यं नवकं भचक्रम् परंचभागं गणको विदग्धा ॥

टीका—पौष्णा जो कहिए रेवती इसको आदि लेकर ६ नक्षत्र रेवती, अश्विनी, भरणी, रोहिणी, मृगशिरा ये ६ नक्षत्र पूर्व भाग के हैं और आर्द्रा को लेकर १२ नक्षत्र आर्द्रा पुनर्वसु, पुष्य, श्लेषा मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा स्वाति, विशाखा, अनुराधा ये मध्य भाग के हैं और पौरन्दर कहिए ज्येष्ठा इसको आदि लेकर ९ नक्षत्र ज्येष्ठा मूलः पूर्वाषाढ़ उत्तराषाढ अभिजित श्रवण धनिष्ठा शतभिषा पूर्वाभाद्रपद उत्तराभाद्रपद ये पर भाग के हैं ॥

भाग फल देखना

पूर्वभागे पतिः श्रेष्ठो मध्यभोगे च कन्यका।
परभागे च नक्षत्रे द्वयोः प्रीतिर्महीयसी ॥

टीका—पूर्व भागी नक्षत्रों वाला लड़का श्रेष्ठ होता है ॥ मध्य भाग वाले नक्षत्रों की कन्या श्रेष्ठ होती है और जो दोनों पर भाग के हों बड़ी प्रीति रहती है ॥

अथ ग्रहनपुन्सक देखना

बुधसूर्यसुतौ नपुन्सकाख्यौ शशिशुक्रौ युवती नराश्च

शेषा । शिखिभूखपयो मरवूगणानामभिधया भूमिसुता
दयः क्रमेण ॥

टीका—बुध शनि नपुंसक हैं चन्द्रमा शुक्र स्त्री हैं सूर्य मङ्गल बृहस्पति ये पुरुष हैं जन्म में बलवान ग्रह का रूप कहना ।

अथ भकूट मेल देखना

मरणं पितृमात्रीश्च संग्राह्यं नवपंचकम् ।
वरस्य पंचमे कन्या कन्याया नवमे वरः ॥
एतत्त्रिकोणकं ग्राह्यं पुत्रपोत्र सुखावहम् ।
षडष्टके भवेन्मृत्युर्यत्न तस्य विचारयेत ॥

टीका—जो वर की राशि से कन्या की राशि ९ वें होय तो उसके पिता की मृत्यु हो और जो कन्या की राशि से वर की राशि पांचवें होंय तो उसकी माता की मौत हो. और जो वर की राशि से पांचवे कन्या की राशि हो और कन्या से नवें वर की राशि हो तो यह त्रिकोण शुभ होता है । पुत्र पौत्र के सुख को देने वाली है । ६, ८ वे होवे तो मौत हो । अतः यत्न कर विचारिए ।

अथ पाये देखना

जन्म रसेरुद्र सुवर्ण पाद द्विप च नवम रजतं शुभम् च।
त्रिसप्तदिक ताम्रपदं वलिष्ठम तूर्येष्टसूर्गेइतिलोहकष्टम

टीका—अगर चंद्रमा लग्न में १ या लग्न से ६ या ११ हो तो सोने के पाये जानिए और २।५।९ हो तो चाँदी के पाये जानिए और ३ । ७ । १० हों तो ताँबे के पाए जानिए ।

८ मृत्युभाव फलम्

अल्पायुर्दिननाथस्य शत्रौ लग्नाधिपे यदि ।
समत्वे मध्यमायुः स्यान्मित्रेदीर्घायुरादिशेत ॥

टीका—जो लग्नेश नाम लग्न का स्वामी सूर्य का शत्रु हो तो अल्पायु ३२ वर्ष की उमर कहे और जो सूर्य से (सम) हो तो मध्यमायु ६४ वर्ष की उमर कहे और जो (मित्र) हो तो पूर्ण आयु ९६ वर्ष की उमर कहना ।

९ धर्म भाव फलम्

धर्मेशोधर्मगेहस्थो धर्मवान् भाग्यवास्तथा ।
केन्द्रेपि च तदागेयोऽन्यत्रस्थे प्यशुभो भवेत् ॥

टीका—धर्म स्थान का मालिक धर्म स्थान में हो वा केन्द्र १ । ४ । ७ । १० इन स्थानों में पड़े तो धर्मवान् व भाग्यवान हो और जगह पड़े तो अशुभ है ॥

१० कर्मभाव फलम्

कर्मेशे लग्नगे वापि राजतुल्यो नरो भवेत ।
पितृसौख्यं विशेषेण लक्ष्मीः पूर्णा च जायते ॥

टीका—कर्मेश १० स्थान का मालिक लग्न में हो तो राजा के समान आचरण करने वाला मनुष्य हो. पिता को पूर्ण सुख हो और धन बहुत हो ।

११ लाभाभव फलम्

लाभेशे लग्नगे वापि केन्द्रे वाप्यथवा भवेत ।

दिने दिनेपि लाभ तु त्रिके हानिः प्रजायते ॥

टीका—जो लाभ स्थान का मालिक लग्न में हो अथवा केन्द्र १ । ४ । ७ । १० में पडे तो दिन प्रतिदिन लाभ ही हो और जो ८ । ६ । १२ हो लाभ की हानि कहे ॥

१२ खर्चभाव देखना

व्ययेशे च त्रिकस्थे वा सर्वसंपद्युतो नरः ।
केन्द्रे वाथ त्रिलाभे वा दरिद्री जायते ध्रुवम ।

टीका—जो बारवें स्थान का मालिक ६ । ८ । १२ पडे तो सम्पूर्ण सुख और केन्द्र १ । ४ । ७ । दसवें पडे या ३ । ग्यारहवें पडे तो दरिद्री हो ये निश्चय जानो जिसके चन्द्रमा से और बारहवें कोई ग्रह नहीं हो तो वो मनुष्य दरिद्री होता है ॥ यदि चन्द्रमा को बृहस्पति देखता हो तो उसको दरिद्री ॥ योग नहीं कहना ।

ग्रह वाहन चक्रम्

सूर्य अश्व	चंद्रमा मृग	मंगल मेंढा
बुध सिंह	गुरू हाथी	शुक्र घोड़ा
शनि बल	राहु चीता	केतु नाका

वाहन सवारी को कहते हैं ॥

ग्रह शान्ति रत्न चक्रम्

सूर्य चुन्नी	चंद्रमा मीसो	मंगल मूगा
बुध पन्ना	गुरू पुष्प	शुक्र हीरा
शनि नीलम	राहु लस्सन	केतु मरकतमणि

इन चीजों के देने से ग्रह प्रसन्न हो जाते हैं ॥

अथ भद्रा फल देखना

स्वर्गे भद्रा शुभम कार्ये पाताले च धनागमम ।
मृत्युलोके यदा विष्टि सर्वकार्य विनाशिनी ॥

टीका—जो स्वर्गलोक में भद्रा हो तो शुभ काम करे ॥ और पाताल की भद्रा से लाभ हो ॥ मृत्युलोक की भद्रा में सर्व कार्य का नाश होता है ॥

यावत भद्रा जो पत्र में लिखी रहती है तो जानो कि बीत गई जितनी घड़ी पल लिखो उतने ही घड़ी पल दिन चढ़े तक और जो उपरान्त भद्रा जितनी घड़ी पल लिखी हों उतनी घड़ी और पल में २० घड़ी और जोड़े फिर जोड़ जितनी घड़ी पल आवें जब से सब घडी पल बीत जावें तो जानो कि भद्रा बीत गई ।

कन्या व पुत्र बतलाना

दम्पती पुत्र संयुक्तौ द्विगुणौ चन्दुसंयुतौ ।
पंचघ्नौ कन्यकायुक्तौ पच विशांल शोधितौ ॥
वामे पुत्रम विजानीयाद दक्षिणे कन्यकां तथा ।

टीका—जो कोई बूझे कि मेरे कितने लड़के और लड़की हैं तो स्त्री पुरुष यानी दो में जितने पुत्र हों मिलादे फिर दुगने करके एक और मिलावे फिर पाँच का गुणा करके कन्या भी मिलादे फिर २५ घटा दे शेष जो बचे उनमें बाँई तरफ का जोड़ है वो तो पुत्र और दाहिनी तरफ की कन्या जानना चाहिए ।

टीका—संक्रांति के पहिले और पीछे १६ घड़ी पुण्य काल माना जाता है ॥ आधी रात पहिले बैठी हो तो दिन के तीसरे भाग में पुण्य काल मानना ॥ और आधी रात के बाद बके तो दूसरे दिन के पू' भाग पहिले सवेरे अगले दिन मानें और ठीक आधी रात बैठे तो दोनों दिन मानना चाहिए ॥

त्रिंशतिः कर्कटेनाड्या मकरस्य दशाधिकाः ।
तुलामेषस्य विंशास्यात् शेषाः षोडश षोडश ॥

कर्क की संक्रांति का ३० घड़ी पुण्य काल होता है ॥ और मकर संक्रांति का ४० घड़ी पुण्य काल माना जाता है ॥ तुला मेष की संक्रांति का २० घड़ी पुण्य काल माना जाता है ॥ और राशिया की जो संक्रांति रहीं उनका १६ घड़ी पहिले या पीछे पुण्य काल जानो ।

आदि मध्य अन्त्य भोगनी चक्रम्

२	५	८	४	इन राशियों क सं क्रांति आदि भोगनी है ।
१	७	O	O	इन राशियों क स क्रांति मध्य भोगनी है ।
३	६	९	१०	११ | १२ इन [illegible]यो को सत्य भोगनी है ।

यायुत्तरा पुण्यतमा मयो [illegible] सायं भवेत्सा यदि सापि पूर्वा । पूर्वा तु योक्ता यदि स विभाते साप्युत्तरा रात्रि-निशीथिनी स्यात् ॥१॥ * वोड् निशीथे यदि संक्रमः स्यात्पूर्वेन्हि पुण्य परतः परेन्हि ॥

टीका--जो संक्राँति अन्त भोगनी चक्र में लिखी हैं, वो सायंकाल में अर्के तो आदि भोगनी हो जाती है और जो आदि भोगना लिखी है वो प्रात:काल में अर्के तो वो अन्त भोगनी हो जाती है और जो आधी रात म पहले अर्के तो वो आदि भोगनी उसका पुण्यकाल पहले दिन ॥ आधी रात के पीछे अर्के तो अन्त भोगनी अगले दिन जानो । जो ठीक आधी रात प बैठे तो दिन दिन उसका पुन्यकाल जानो ॥ अर्के नाम बैठने का है ॥

अथ संक्रांति महुर्ति भेद

संक्रान्तौ मुहूर्त भेद: [illegible] नयमे वारुणे सार्परौद्रे एषा पंचेन्दुसंज्ञा गुरुकरागतृभे [illegible]ग्निदस्रे च सौम्ये । त्वाष्ट्रमैत्रे च मूले श्रु[illegible]तिवसुवपुष्प त्रीणि पूर्वा स्वरामे ब्राह्मे [illegible]दित्ये [illegible]द्रदैवे भवन्ति शरकुला [illegible]त्तरा त्रीणि ऋक्षम् । बाणवेदै: समर्घं स्यान्मध्यस्थ व्योमरामयो: । मूर्तो पञ्चदशे [illegible] दुर्भिक्ष च प्रजायते ॥

टीका—आद्रा, स्वाति भरणी, शतभषा, श्लेषा, ज्येष्ठा जो इन नक्षत्रों म संक्रांति बैठे तो १५ मुहूर्त जानो प्रजा में दुर्भिक्ष पड़े पुष्य, हस्त, मघा, कृतिका, अश्विनी, मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, श्रवण, मूल, धनिष्ठा, रेवती, तीनों पूर्वा इन नक्षत्रों में अर्के तो ३० मुहूर्त जानो इसका फल साधारण है । रोहिणी, पुनर्वसु, विशाखा तीनों उत्तर इन नक्षत्रों में अर्के तो ४५ मुहूर्त जानो इसका फल बहुत उत्तम और श्रेष्ठ है ॥

पञ्चद्व्यद्रि कृताष्ठ रामरतभू यामादि घठ्यःशराः ।
विष्टे राश्यसमदग बेन्द्र रसरामाद्रयाविश्ववाणाब्धिषु ।
याम्येष्वन्त्यघटो त्रयं शुभकरं पुच्छं तथा वासरं ।
विष्टिस्तिथ्य परार्द्धजा शुभकरा रात्रौतु द्रूवार्द्धजा

भद्रा के मुख पुच्छ देखने का चक्र

तिथि	०४	०८	११	१५	०३	०७	१०	१४
प्रहर	०५	०२	७०	०४	०८	०३	०६	०१
आदि	आ.	आ.	आ.	आ.	आ.	आ.	आ.	आ.
घ.पु.	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०५
प्रहर	०८	०१	०६	०३	०७	०२	०५	०४
अन्त	म०	अं०	अं.	अं.	अं.	अं.	अं.	अं.
घ पु.	०३	०३	०३	०३	०३	०३	०३	०३

भद्रा के मुख की घड़ी त्याज्य और पुच्छ की शुभ काम मे लाने हैं।
नोट—प्रहर की गणना तिथि के आरम्भ से करनो चाहिये।

अथ संक्रांति समय फलम्

सूर्योदय [illegible] मध्यान्हे सकलशस्य विनाशकारिणी : अस्तंगते फल तृप्तं च सौख्यं सुभिक्षं मंजुलं निशिनार्द्ध रात्रौ ॥

टीका—जो सूर्य्य निकले पै संक्रान्ति बैठे तो प्रजा को भारी और दोपहर में बैठे तो नाश के करने वाली हो। सूर्य्य छिपे पै बैठे तो राजा को अशुभ हो ॥ जो रात्रि में बैठे शुभदायक जाननी चाहिये ॥　　　　इति जातक प्रकरणम् ॥१॥

विवाह प्रकरण

भाषा टीका भाग दूसरा

अथ सगाई का मुहूर्त

धरणीदेवोऽथवा कन्यकासहोदरः शुभदिने गीत वाद्यादिभिः संयुक्तः। वरवृणि वस्त्रयज्ञोपवीतादिना ध्रुवयुतैर्वन्हिपूर्वात्रयै अर्चयेत् ॥

टीका—पुरोहित या ब्राह्मण या कन्या का छोटा भाई या बड़ा भाई शुभ दिन वर का बर्ण करे यानी तिलक करे। वस्त्र यज्ञोपवीत आदि लेकर गाजे बाजे के साथ रोहिणी तीनों उत्तरा कृतिका तीनों पूर्वा ये नक्षत्र और शुभ वार चन्द्रमा, बुध, शुक्र, गुरु होने चाहिये परन्तु सगाई के पहले दोनों ठेवे वर कन्या के मिला लेने चाहिए जो नहीं मिलाते हैं उनको चाहिए कि विवाह से सुझाने में या टेवे न दे वर कन्या के नाम से सुझावें या जन्म से सुझावें या दोनों नाम बोलते हों या दोनों नाम जन्म के हों तो शुभ हैं ॥

जन्मपत्र मिलाने में जो जो गुण चाहिये सो लिखते हैं

वर्णो वश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकं ।
गणमैत्रं भकूटं च नाडी चैते गुणाधिकाः ॥

टीका—वर्ण, वैश्य, तारा, योनि, ग्रह, मत्री: गण मैत्री भकूट नाड़ी ये मिलाने चाहिए ॥

अथ विवाह सुभाना

दैवज्ञं पूजयेत्पूर्वम फलं ताम्बूलं गृह्यते ।
विप्राय भेटकं दद्याद्विवाहे प्रश्न कारयेत् ॥

टीका—कन्या का पिता या कन्या का भाई जब विवाह करना चाहे तो पहले पंडित के पास जावें, नारियल, या सुपारी, पान, फूल, चावल, दक्षिणा ब्राह्मण की भेटकर तब प्रश्न करें तो वो विवाह शुभदायक होता है ॥

ऋग्वेदाय यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ।
ब्राह्मणाश्च सदा नित्यं हन्यन्तो तव शत्रवः ॥

टीका—चारों वेदों का यही सिद्धांत है ब्राह्मणों के आशीर्वाद से तुम्हारे शत्रुओं का नाश हो ॥

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रायां गृहगोचरे ।
जन्मराशिप्रधानत्वं नामराशि न चिन्तयेत ॥

टीका-विवाह में और शुभ काम में यात्रा में घर बनाने में

प्रतिष्ठा में गोचर ग्रह देखने में और जितने शुभ काम हैं सब में जन्मराशि प्रधान है ।

देशे ग्रामे पुद्धे सेवायां व्यवहारके ।
नाम राशि प्रधानत्वं जन्म राशि न चिंतयेत ।

टीका-देश गाँव घर के विषय में नौकरी और व्यापार के विषय में नाम राशि से देखे जन्म से नहीं ।

जन्मभं जन्मधिष्ण्येन नाम धिष्ण्येन मामभम् ।
व्यत्ययेन यदा योज्यं दम्पत्योर्निधनप्रदम् ॥

टीका-वर का जन्म नक्षत्र हो तो कन्या का भी जन्म का नक्षत्र हो या दोनों का बोलता नाम हो । एक का जन्म का एक का बोलता हो तो अशुभ होता है ।

जन्ममासे जन्मभे च न च जन्मदिनेपि च ।
ज्येष्ठे न ज्येष्ठ गर्भस्य विवाह कारयेत क्वचित ।

टीका--जन्म का मास जन्म का दिन जन्म का नक्षत्र प्रथम गर्भ वाले का उत्पत्ति का विवाह ज्येष्ठ में वर्जित है ।

ज्येष्ठ विचार देखना

न कन्यावरयोज्येष्ठे ज्येष्ठयोः पाणिपीडनम् ।
द्वयोरेकतरे ज्यष्ठे न ज्येष्ठो दोषभावहेत ॥

टीका—जो वर कन्या दोनों प्रथम गर्भ के हों तो ज्येष्ठ के महीने में ब्याह नहीं करे और जो एक जेठा हो तो विवाह करने में कुछ दोष नहीं जेठा उसे कहते हैं जो पहिले पैदा हुआ हो यानी तीन ज्येष्ठ नहीं मिलने चाहिए ।

मिंहे गुरौ गते कार्यो न विवाहः कदाचन ।
मेषस्थिते दिनानाथे सिंहेऽप्ये च शुभप्रदः ॥

टीका—सिंह की बृहस्पति में विवाह न करे मेष के सूर्य में सिंह की बृहस्पति हो तो विवाह करने में कुछ दोष नहीं होता है ।

विवाह के नक्षत्र देखना

रोहिण्युत्तररेवत्यो मूलं स्वातिमृगो मघा ।
अनुराधा च हस्तश्च विवाहे मङ्गलप्रदाः ॥

टीका—रोहिणी, तीनों उत्तरा रेवती, मूल, स्वाति, मृगशिरा मघा, अनुराधा, हस्त, ये ग्यारह नक्षत्र विवाह के हैं ॥

विवाह के मास देखना

माघे धनवती कन्या फाल्गुने शुभगा भवेत् ।
वैशाखे च तथा ज्येष्ठे पत्युरत्यन्त वल्लभा ॥

टीका—माघ के महीने में विवाह करे तो कन्या धनवती हो फाल्गुन में सौभाग्यवती वैशाख में तथा ज्येष्ठ में विवाह होय तो पति की प्यारी हो ।

आषाढे कुलवृद्धिः स्यादन्यमासाश्च वर्जिताः ।
मार्गशीर्षं तु मासं च विवाहे केऽपि कोविदाः ।

टीका—आषाढ़ में विवाह करे तो कुल की वृद्धि हो, और महीने विवाह में वर्जित हैं, मार्गशिर के महीने को भी कोई कोई आचार्य शुभ कहते हैं ।

विवाह में तिथि वार नक्षत्र वर्जित

अमावस्या च रिक्ता च गारबेला च जन्मभम् ।
गण्डन्तं क्रूरवाराश्च बर्जनीयाः प्रयत्नतः ॥

टीका—अमावस्या और रिक्ता तिथि, ४, ६, १ वार वोला और जन्म का नक्षत्र और क्रूर वार, रवि, शनि, मङ्गल और गंडांत नक्षत्र ये विवाह में वर्जित हैं ।

विवाह बर्जित योग देखना

भद्राकर्कटयोग च तिथ्यंतं यमघंटकम् ।
दग्धा तिथिं च भांतं च कुलिकं च विवर्जयेत ॥

टीका—भद्रा, कर्कट, योग और तिथि के अन्त की २ घड़ी यमघन्टक योग दग्धातिथि, और नक्षत्र के अन्त की ३ घड़ी और कुलिक योग, ये विवाह में वर्जित हैं ।

मांसातादि देखना

मासान्ते दिनमेकन्तु तिथ्यन्तं घटिकाद्वयम् ।
घटिका त्रयं भान्ते विवाहे परिवर्जयेत ॥

टीका—मासान्त कहिये संक्रान्ति के अन्त का एक दिन तिथ्यन्त कहिए तिथि के अन्त की दो घड़ी, भाँत कहिए नक्षत्र के अन्त की ३ घड़ी ये विवाह में वर्जित हैं ।

मासान्ते म्रियते कन्या तिथ्यन्ते स्यादपुत्रिणी ।
नक्षत्रान्ते च वैधव्यं विष्ठा मृत्युर्द्धर्थेभवेत ॥

टीका—महीने के अंत में कन्यादान करे तो कन्या की मृत्यु हो तिथि के अंत में कन्यादान करे तो अपुत्रणी हो नक्षत्र के अंत में विवाह होय तो विधवा हो भद्रा में विवाह हो तो वर कन्या दोनों की मृत्यु हो सो यत्न कर विचारिए।

विवाह में किस २ का बल देखना

वरस्य भास्कर छलं कन्यायाश्च गुरोर्बलम्।
द्वयोचद्रवलं ग्राह्यं विवाहे नान्यथा भवेत॥

टीका-वर को सूर्य का बल देखे; कन्या को बृहस्पति का बल देखे, वर कन्या दोनों को चंद्रमा का बल देखे।

अष्टमे च चतुर्थे च द्वादशे च दिवाकरे।
विवाहितो बरो मृत्युं प्राप्नोत्यत्र न संशयः॥

टीका—जो वर की राशि से सूर्य ४।८।१० हो तो विवाह न करे जो करे तो वर की मृत्यु हो इससे झूंठ नहीं है।

जन्मन्यथ द्वितीये वा पंचमे सप्तमेपि वा।
नवमे च दिवानाथे पूज्या पाणिपीनम्॥

टीका--जो बर की राशि से सूर्य १।२।५।७।९ हो तो पूजा का विवाह होता है। सूर्य का जप दान पूजादिक करने से विवाह शुभ होता है।

एकादशे तृतीये वा षष्ठे वा दशमेपिवा।
वरस्य शुभदो नित्यं विवाहे दिननायकः॥

टीका--जो वर की राशि से ११।३।६।१० सूर्य हो तो शुभदायक और कल्याण का करने वाला होता है।

सूर्य बल चक्रम्

८	४	१२	सूर्य	अशुभ होता है।	
१	२	५	७	९	पूजा का
११	३	६	१०	शुभ होता है	

गुरू बल देखना

अष्टमे द्वादशे वापि चतुर्थे वा वृहस्पतौ।
पूजा तत्र न कर्तव्या विवाहे प्रणनाशकः॥

टीका-कन्या की राशि मे वृहस्पति ४। ८। १२ हो तो अशुभ होती है; प्राणघात के करने वाली है।

षष्ठे जन्मनि देवेज्ये तृतीये दशमेपि वा।
भूरिपूजापूजितः स्यत्कन्यायाः शुभकारकः॥

टीका—जो कन्या की राशि मे बृहस्पति ६।१।३।१० होय तो बहुत सी पूजा दान जप आदि करने से शुभ होता है॥

एकादशे द्वितीये वा पञ्चमे सप्तमेपि वा।
नवमे च सुराचार्ये कन्यायाः शुभकारकः॥

टीका—जो कन्या की राशि से ब्रहस्पति ११।२।५।७ ९ कन्या को विवाह में शुभदायक होता है।

गुरु बल चक्रम्

११	२	५	७	९	शुभ होता है
६	१	३	१०	गुरु	पूजा का है
४	८	१२	बृहस्पति		अशुभ होता है

उच्चादि गुरुफलम्

स्वोच्चे स्वभे स्वमैत्रे वा स्वांशेवर्गोत्तमे पि वा ।
रिष्फाष्टतूर्यगापोष्टो नीचारिस्थः शुभोप्यसत् ॥

टीका—जो उच्च का बृहस्पति हो या अपने घर का हो या वर्गोत्तम का हो या मित्र के घर का हो या अपने नवाँशक में हो तो ४, ८, १२ इनमें भी दोष नहीं माना जाता ।

झषचापकुलीरस्थो जीवावाप्य शुभोवरः ।
अतिशोभनतां याति विवाहोपनयादिषुः ॥

टीका—मीन, धन, कर्क जो इन राशि का बृहस्पति अशुभ भी हो तो भी शुभ जानना विवाह और यज्ञोपवीत में ॥

कन्या को संज्ञा देखना

अष्टवर्षा भवेद् कन्या गौरी नववर्षा च रोहिणी ।
दशवर्षा भवेत् कन्या अत ऊर्ध्वं रजस्वला ॥

टीका—आठ वर्ष तक कन्या की गौरी संज्ञा जानो । नव वर्ष तक रोहिणी संज्ञा । दश वर्ष में कन्या संज्ञा जानो इसके उपरान्त रजस्वला नाम स्त्री संज्ञा जानो ।

रजस्वला दोष देखना

संप्राप्तेकादशे वर्षे कन्या या ना विवाहिता ।
मासे मासे पिता भ्राता तस्यर्पिबति शोणितम् ॥

टीका—जो ग्यारहवे वर्ष कन्या का विवाह नहीं हो तो महीने महीने प्रति जो रजस्वला हो उसके दोष का भागी पिता और बड़ा भाई होता है ।

द्वादशैकांशे वर्षे तस्याः शुद्धिर्न जायते ।
पूजाभिः शकुनोपि तस्वया लग्नं प्रदापतत् ॥

जो ग्यारह बारह वर्ष की कन्या होय और बृहस्पति भी अच्छा न हो तो लग्न ही विचार पूजा दान करके विवाह करदे ॥

माता चैव पिता चैव ज्येष्ठभ्रा तथैव च ।
त्रयश्च नरकं यांति द्रष्ठवा कन्यां रजस्वलाम्॥

टीका-जो रजस्वला कन्या को माता, पिता, बड़ा भाई देखें तो नरक के अधिकारी होते हैं ।

गुर्विन्द्वर्कवत्ता गौरी गुविन्दुबल रोहिणी ।
रवीदुगलजा कन्या प्रोढा लग्नबला स्मृता ॥

टीका—गौरी जो है उसको बृहस्पति चन्द्रमा सूर्य तीनों का बल देखे तो शुभ है । रोहिणी को गुरु और चन्द्रमा का बल देखे, कन्या को सूर्य और चंद्रमा का बल देखे, प्रौढा नाम ११ वर्ष की या इससे ऊपर को लग्न बल ही विचार के विवाह करदे ।

गौरी ददन्नागलोके वैकुण्ठे रोहिणी ददत् ।

कन्यां ददन्मृत्युलोके रौरवं तु रजस्वलाम् ॥

टीका – गौर का दान करे तो पाताल लोक में सुख पावे रोहिणी का दान करे तो बैकुंठ लोक में सुख पावे कन्या का दान करे तो मृत्यु लोक में सुख प्राप्त हो और रजस्वला का दान करे तो नर्क में पड़े।

जीवो जीवप्रदामा च द्रव्यदाता च चंद्रमा।
तेजोदाता भवेत्सूर्यो भूमिदाता महीसुतः॥
जीवहीना मृता कन्या सूर्य हीनो मृतो वरः।
चंदे हीने गता लक्ष्मीः स्थानहानिःकुजाम्बिना॥

टीका – बृहस्पति जीव के दाता हैं चंद्रमा धन के दाता हैं सूर्य तेज के दाता हैं मङ्गल भूमि के दाता हैं। बृहस्पति हीन होय तो कन्या की मौत हो। सूर्य हीन होय तो वर की मौत हो। चंद्रमा हीन होय तो लक्ष्मी की हानि हो। मङ्गल हीन होय तो घर की हानि करे।

दश दोष देखना लिखते

लता पाता युतिर्वेधो यामित्र बुधपंचकम्।
एकार्गलोपग्रहौ च क्रांतिसाम्यं निगद्यते॥
दग्धातिथिश्चवेशथा दश दोषा महाबला।
एतादोषान् परित्यज्य लग्न संशोधयेद् बुधः॥

टीका – अब दस दोष कहते हैं १ लता, २ पता, ३ युति, ४ वेध, ५ जामित्र, ६ बुध, पंचक, ७ एकार्गल, ८ उपग्रह,

९ क्रांतिसाम्य, १० दग्धतिथि, ये दस दोष विवाह में बलवान हैं इनसे बचाय के लग्न साधना चाहिए।

दशा दोष मानना

लत्ता मालवके देशे पातं च कुरुजांगले।
एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेते॥

टीका – लत्ता दोष मालव देश में माना जाता है, पात दोष कुरु जाँगल देश में एकार्गल दोष काश्मीर देश में माना जाता है, और वेध दोष सब जगह मानना चाहिए।

यामित्रं चामरे देशे युतिदोषो कलिङ्गके।
उपग्रहं च कैलाशे दग्धा विद्रुमदेश के॥

टीका – या मित्र अमर देश में माना जाता है, युति दोष कलिंग देश में पपग्रह दोष कैलाश देश में माना जाता है। दग्ध दोष विद्रुम देश में माना जाता हैं। और ३ दोष सब जगह मानने चाहिए।

वेध, बुध पंचक, दग्धतिथि, क्रांतिसाम्य, युति ये ६ दोष जरूर देखने चाहिए और दोष और २ देश में माने जाते हैं।

अथ युति दोष देखना

यत्र गृहे भवेच्चन्द्रो ग्रहस्तत्र यदा भवेत।
युतिदोषस्तदा ज्ञेयो बिना शुक्रं शुभाशुभम॥

टीका – जिस नक्षत्र का चंद्रमा हो और उसी नक्षत्र पर

और कोई ग्रह होय तो युति दोष होता है परन्तु शुक्र बिना शुक्र संयुक्त हो तो शुभ, अन्यत्र अशुभ होता है।

युति दोष फलम्

रविणा संयुतो हानिर्भौमेन निधनं शशी।
करोति मूलनाशं च राहुकेतुशनिश्चरैः॥

टीका जो सूर्य चंद्रमा के साथ हो तो हानि करे भौम होय तो मृत्यु करे और राहु केतु शनिश्चर होय तो मूल नाश करे।

वर्गोत्तमगतश्चन्द्रः स्वोच्चे वा मित्रराशिगः।
युत्तदोषश्च न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसी सदा॥

टीका—जो चंद्रमा वर्गोत्तम का हो अथवा उच्च का हो या मित्र राशि का हो तो युति दोष का नाश करे। स्त्री पुरुष दोनों सुखी रहें।

अथवेद्ध दोष देखनो

एक रेखास्थितावेधा दिननाथादिभिग्रहैः।
विवाहे नक्षत्र मासन्तु न जीवति कदाचन॥

टीका-जिस नक्षत्र का लग्न हो और उसी नक्षत्र की रेखा से जो नक्षत्र विधा हो और उसी नक्षत्र पर सूर्य आदि कोई ग्रह होय तो उसको वेध कहिए विवाह के एक महीने पीछे मृत्यु करे।

अश्विनी पूर्वफाल्गुण्या भरणी चानुराधया।
अभिजिच्चापि रोहिण्या कृत्तिका च विशाखयः॥

मृगश्चोत्तरषाढेन पूर्वाषाढ़ा तथार्द्रया ॥
पुनर्वसुश्च मूलेन तथा पुष्यश्च ज्येष्ठया।
धनिष्ठया तथा श्लेषा मघापि श्रवणेन च ॥
रेवत्युत्तरफाल्गुन्या हस्तेनोत्तरभाद्रपात्।
स्वात्याशतभिषाविद्धा चित्रया पूर्वभाद्रपात्।
विद्धान्येतानि नामानि विवाहे भानिकोविदः।

टीका—अश्विनी से और पूर्वाफाल्गुनी से एक रेखा है। ऐसे जो दोनों ठौर एक रेखा हो तो वेध कहिये ऐसे अट्ठाईस नक्षत्र को जानिये। ये वेध चिशाला चक्र में समझले।

वेध चक्रम्

वेध फलम्

रविवैधेन वैधव्यं कुज वेधेकुलक्षयम् । बुध वेधे भवेद्वंध्यो प्रव्रज्या गुरु वेधतः। अपुत्रां शुक्रवेधेव सौरेचन्द्रे च दुःखिता परपुरुषात्ताराहोः केतोः स्वच्छन्दचारिणी।

टीका—जो सूर्य का वेध लगे तो विधवा हो, मङ्गल का वेध लगे तो कुलक्षय होय बुध का लगे तो वन्ध्या होय, गुरु का वेध लगे तो सन्यासिनी हो शुक्र का वेध लगे तो पुत्र न हो, शनिश्चर चन्द्रमा का वेध लगे तो दुखी हो, राहु का वेध लगे तो

इर पुरुष गामिनी हो. केतु का वेध लगे तो अपनी इच्छानुसार चलने वाली हो।

शनिराहुकुजादित्या यदाजन्मर्क्षसंस्थिताः ।
विवाहिता च यो कन्या सा कन्या विधवा भवेत् ॥

टीका—शनि. राहु, भौम सूर्य इनमें से कोई ग्रह विवाह समय में जन्म नक्षत्र पर होय तो कन्या विधवा होय ॥

अथ यामित्र दोष विचार

चतुर्दशं च नक्षत्रं यामित्रं लग्नभास्मृतम् ।
शुभयुक्तं तदिच्छंति पापयुक्तं च वर्जयेत् ॥

टीका—जो लग्न के नक्षत्र से चौदहवें नक्षत्र पर कोई ग्रह होय तो यामित्र दोष होता हैं जो सोम्य ग्रह हो तो शुभदायक है । और पाप ग्रह होय तो वर्जित करे ॥

यामित्र फलम्

चन्द्राश्चांद्रमृगुर्जीवं यामित्रे शुभकारकाः ।
स्वर्भानुनदारा यामित्रे न शुभप्रदाः ॥

टीका—जो चन्द्रमा, बुध, बृहस्पति, और शुक्र, ग्रह जन्म के नक्षत्र से चौदहवें यामित्र पे हो तो सुभदायक है । और जो शनि. राहु, तथा सूर्य, भौम चौदहवें यामित्र पे हो तो असुभ होता है ।

चन्द्राद्वालग्नतो वापि ग्रहा वर्ज्याश्च सप्तमे ।
तत्रस्थिता ग्रहनून व्याधिवैधव्यकारकाः ॥

टीका—चन्द्रमा वां ग्विवाह लग्न की राशि से सातवे कोई ग्रह होय तो व्याधि और वेधव्य करे।

अथ मृत्य पंचक देखना।

धार्मातिथिर्मास दशाष्टवेदाः १५।१२।१०।८ ४ संक्रातितोयात दिनैश्चयोज्याः प्रैहैर्विभक्तायदि पंचशेषो रोगस्तथाग्निर्त पचौरमृत्यु। ६८

टीका—अब पंचक देखना कहते है तिथि कहिये १५ मास कहिए १२ दश १० अष्ट ८ बेद ४ संक्रांति के जे दिन गये हों तिनको मिला करके ९ का भाग दे जो ५ बचे तो पंचक जानिए ऐसे ही पांचों अङ्क विचार के देखे १५ जोड़ के ९ का भाग देकर ५ बचे तो रोग। १२ जोड़ के नौ का भाग देकर ५ बचे तो अग्नि पंचम। दस जोड़ के नौ का भाग देकर पांच बचे तो राजपंचक। ८ जोड़ के नौ का भाग देकर पाँच बचे तो चौर पंचक। ४ जोड़ के नौ का भाग देकर ५ बचे तो मृत्यु पंचक जानना चाहिए।

पंचक देखने की दूसरी रीति

१, दस, १९, २८ इनमें मौत पंचक होता है॥

संक्रांति के जे दिन गए हो उनको गिन के उसमें ४ और जोड़ दे फिर उसमें नौ का भाग दे ५ बचे तो मौत हंचक जानिए: जैसे संक्रांति का एक दिन गया उसमें चार और जोड़ दे तो ५ हो गये तो मौत पंचक जानिए और दस आसा गये हों तो उसमें ४ और जोड़े १४ हुए उसमें नौ का भाग दिया तो ५ बचे मौत पंचक जानो जो १९ दिन गये ४ और जोड़े २३

हुए उसमें ९ का भाग दिया नौ दूनी १८। ५ बचे मृत्यु पंचक जानो जो २८ अंश गये ४ और जोड़े ३२ हुए ९ का भाग दिया नौ ती २७ गए ५ बचे मृत्यु पंचक जानो। रोग पंच॰ हों तो १५ और जोड़कर ९ का भाग दे ५ बचे तो रोग पंचक अग्नि पंचक देखना हो तो १२ जोडे राजपंचक देखना हो तो १ जोड़ कर नौ का भागदे और पंचक देखना हो तो ८ जोड़कर नौका भाग दे। मृत्यु पंचक देखना हो तो ४ जोड़कर ९ का भाग दे।

एके मृत्युर्द्वयोर्वन्हि श्चतुर्थेराजपंचकम्।
षष्ठे चोर अष्टमें रोगं बाणमेवं विचारतेत्॥१

टीका—संक्राँति का एक अंश जाने पर मृत्युबाधा होता है दूसरे पर अग्नि। चौथे पर राज। छठे पर चोर आठवे पर रोग होता है॥

पंचक चक्रम्

रोग	अग्नि	राजा	चोर	मृत्यु	प्रवाण
सूर्य	मङ्गल	शनिश्चर	शुक्र	बुध	वार
रात्रि	दिन	दिन	रात्रि	संध्या	समय
उपनयन यज्ञोपवीत	घर बनाना	राजसेवा	यात्रा	विवाह	वर्जित

पंचक वर्जित देखनो

यद्यर्कवारं किल रोगपंचकं सोमे चाग्निं क्षितिजे च वन्हि। सौरे च मृत्युधिषणे च चौरोविवाह काले परिवर्जनीयाः॥

टीका-रविवार को जो रोग पंचक लगे और सोमवार को राज पंचक। सोमवार को अग्नि पंचक शनिश्चर को मृत्यु पंचक भृगु को चोर पंचक ये विवाह में वर्जित हैं।

रोगं चोरं त्यजेद्रात्रौ दिवाराज्याग्निपंचकम्।
उभयोः सन्ध्योमृत्युरन्यकाले न निन्दितः॥

टीका-रोग, चोर, पंचक रात्रि को अशुभ है और राज्य अग्नि पंचक दिन में वर्जित है दोनों की सन्धि में मृत्यु पंचक निन्दित है और समय वर्जित नहीं है॥

क्रांतिसाम्य देखना

ऊर्ध्वास्तिसृरितरस्रो मध्ये मीनम् लिखेद्बुधः।
सूर्याचचन्द्रयसो दृष्टौ क्रांतिसाम्यं निगद्यते॥
मीनः कन्यकया युक्तो मेष सिंहे न सङ्गतः।
मकरेणबृषः क्रांतिश्चापापि मिथुनेन च॥
कर्केण वृश्चिको विद्धा वेधश्च तुलकुम्भयोः।
क्रान्तिसाम्ये कृतोद्वाहो न जीवति कदाचन॥

टीका—क्राँति साम्य देखने की ये रीति है कि सूर्य चन्द्रमा एक रेखा पर हों तो उसे क्राँति साम्य कहते हैं जैसे मीन राशि का तो सूर्य है और कन्या का चन्द्मा हो तो क्राँतिसाम्य होता है। मीन के सूर्य में जिस दिन कन्या के चन्द्रमा हों तो उसी रोज क्रांति साम्य होगा और कन्या के सूर्य में मीन के चन्द्रमा हो तो भी क्राँतिसाम्य होगा। ऐसे ही १२ राशियों को इस नीचे के चक्र में समझ लेना चाहिए।

क्रांतिसाम्य चक्रम्

१२ सूर्य	७ सूर्य	४ सूर्य	३ सूर्य	१० सूर्य	१ सूर्य
६ चं०	११ चं०	८ चं०	९ चं०	२ चं०	२ चं०
कांति	कांति	कांति	कांति	कांति	कांति

क्रान्तिसाम्य फलम्

कांतिसाम्ये च कन्याया यदि पाणिग्रहो भवेत् ।
कन्या वैधव्यता याति ईशस्य दुहिता यदि ॥

टीका जो क्रांति साम्य में बिवाह हो तो महादेव जी की कन्या हो तो भी विधवा हो ।

दग्धातिथि देखनो

मीने चापे द्वतीया च चतुर्थी वृषकुम्भयेः ।
मेषकर्कयो षष्टी कन्या युग्मेषु चाष्टमी ॥
दशमी व्रस्चिके सिंहे द्वादसी मकरे तुले ।

एतास्तुतिथयोदग्धा, शुभे कर्मणि वर्जिताः ॥
यः कश्चित्तिथयोदग्धा मुनिभि कथितास्फुटा ।
तिथिदगधा कृष्ण पक्षे शुक्लेचन्द्रेणरक्षति ॥

दग्धा तिथि चक्रम्

मीन के सूर्य में	वृष सूर्य में	मेष सूर्य में	कन्या सूर्यमें	वृश्चिक	मकर	सूर्य
धन के सूर्य में	कुम्भ सूर्य में	कर्क सूर्य में	मिथुनसूर्यमें	सिंह	सिंह	सूर्य
२	४	६	८	१०	१२	दग्धा तिथि

ये दग्धा तिथि शुभ काम में वर्जित है इन्हें त्याग दे । यह दगधातिथि कृष्णपक्ष में वर्जित हैं । सुक्ल पक्ष में सुभ है । ऐसा कोई मुनि कहते हैं ।

लग्न शुद्धि देखना

केंद्रे सप्तमहीने च द्वित्रिकोणे शभाशुभम् ।
धने शुभप्रदस्चन्द्र, पापा षष्टे च शोभना ॥
तृतीयेकादशे सर्वे सौम्या पाप फलप्रदा ।
ते सर्वे सप्तमस्थाने मृत्युदा वरकन्यायोः ॥

टीका—केन्द्र स्थान कहिए १, ४, ७, १० त्रिकोण ५, ९ जो इन स्थानों में सुभ ग्रह होय तो श्रेष्ठ है और २ स्थान चन्द्रमा सुभ होता है और ६ स्थान पापग्रह सुम होते हैं और ३, ११ स्थान सब ग्रह सुभ होते हैं और सातवें स्थान सब

ग्रह अशुभ होते हैं। और शुक्ल पक्ष की पंचमी से कृष्ण पक्ष की पंचमी पर्यन्त तक का चन्द्रमा श्रेष्ट है बलि होता है और कृष्ण पक्ष की छट से ३० अमावस तक का चन्द्रता अशुभ होता है।

ग्रहों का फल देखना

शनिः सूर्यस्य लग्नेस्ते चन्द्रो लग्नेष्ठमें रिपौ।
कुजो लग्नेऽष्ट चास्ते शुक्रेद्यूनेष्ठमेरिपौ॥
गुरुः मृत्यौ सैंहिकेयो लग्ने तुर्ये च सप्तमे।
बुधाऽष्टमे च यामित्रे विवाहे प्राननाशकः॥
क्रूरयोरतरं लग्नं चन्द्रम च परिवर्जयेत्।
वरं हन्ति भ्रुवग्नं शीतरश्मिश्च कन्यकाम्॥

टीका—शनि सूर्य जो लग्न से सातवें होय और चन्द्रमा। ६। ८। और भौम १। ८। ७ और शुक्र ७। ८। ६ बृहस्पति ८ राहु १। ७। ४ और बुध ८। ७ ये ग्रह इन स्थानों में विवाह समय प्राण के नाश करने वाले हैं और क्रूर ग्रह के मध्य चन्द्रमा होय तो अथवा लग्न होय तो वर्जिनीय है वर को शीघ्र ही मौत का दाता है चन्द्रमा कन्या की मौत करता है।

लग्नादेकादशे सर्वो लग्नपुष्टिकरा ग्रहाः।
तृतीये चाष्टमे सूर्यः सूर्यपुत्रश्च शोभनः॥
चन्द्रोधने तृतीये च कुजः षष्ठे तृतीयके।
बुधेज्यौ नवषड् द्विति चतुःपंच दशे स्थितौ॥

शुक्रोद्वित्रिचतुः पंच धर्म कर्म तनुस्थितः।
राहुर्दशाष्टपंच त्रिनवद्वादशे शुभः ॥

टीका—लग्न से ग्यारहवें स्थान सब ग्रह शुभ हैं सूर्य और शनि ८। ३ और चन्द्रा २। ३। और भौम ३। ६ और गुरुवार ९। ६। २। ३। ४। ५। १० और शुक्र २। ३। ४। ५। ९। १०। इन स्थानों में शुभ हैं और राहु केतु ये १०। ८। ६। ५। ३। ९। १२ इन स्थानों में सुभदायक है। १२ वें स्थान में मार्गी ग्रह और दूसरे स्थान में वक्री ग्रह हों तो लग्न पर कर्त्तरी दोष होता है इसी प्रकार सब स्थानों पर जानना।

अथ गोधूली देखना

यदा नास्तङ्गतो भानुर्गो धूल्या पूरितं नभः।
सर्वमङ्गल कार्येषु गोधूलिश्च प्रशस्यते ॥

टीका—जब तक सूर्य अस्त न हो और गौओं की खुर की धूल आकाश है पूरित हो रही हो तो, यह घटी सकल उत्तम कार्य में मङ्गल की दाता है इसको गोधूलि कहते हैं ॥

यत्र चैकादशश्चन्द्रो द्वितीयो वा तृतीयकः।
गोधूलिकः सविज्ञेयःशेषा धूलिमुखोःस्मृता ॥

टीका—जो ग्यारहवें स्थान चन्द्रमा हो अथवा दूसरे तीसरे होय तो उत्तम गोधूली कहा है बाकी स्थान में चन्द्रमा होने से धूली मुख कहते हैं।

कुलिकः क्रान्तिसाम्यं च लग्ने षष्ठाष्टमे शशि।
तदा गोधूलिकस्त्याज्यःपंचदोषैश्च दूषितः ॥

टीका—कुलिकयोग और क्राँतिसाम्य ओर लग्न में ६ और ८ चंद्रमा हो तो गौधूली लग्न में विवाह नही करना, लगन पाँच दोष कर दूषित हैं। लगन में सातवे आठवे मङ्गल हो तो गोधूली भङ्ग हो जाता है इसमें वर की हानि होती है।

अंशस्य पतिरंशे च तन्मित्रं वा शुभोपि वा।
पश्यतोवा शुभोज्ञेयः सर्वो दोषाश्च निष्फलाः॥

टीका--अंश का पति जो है नवांश का स्वामी अपने नवाँशक में हो अथवा स्वामी का मित्र और शुभ ग्रह होय अथवा इनकीदृष्टि लगन हर होय तो और दोषों को निष्फल करता हैं।

किं कुर्वन्ति ग्रहाः सर्वे यस्य केन्द्रे वृहस्पतिः।
मत्त मातगयूथानाँ शतं हन्ति च केशरी॥

टीका-जो केन्द्र स्थान १, ४, ७, १० इन स्थानों में ब्रहस्पति अकेले हों और सब ग्रह अरिष्टकारक हों तो क्या कर सकते हैं जैसे अकेला सिंह सैकड़ों हाथियों का समूह हन डारे ऐसे ही ब्रहस्पति दोषों को दूर कर देते हैं॥

अथ कन्यादान का लग्न देखना

दिने सदान्धा व्रषमेष सिंहा रात्रौ च कन्यः मिथुनं कुलीरः। अगस्तुलाली पघिरो पराह्ने संध्यासु कुब्जा घटधन्विमीनाः॥

टीका—व्रष, मेष, सिंह ये लगन दिन में अन्धे हैं और कन्या, मिथुन, कर्क ये रात्रि में अन्धे है। मकर, तुलाः व्रश्चिक दुपहरी में बहरे हैं। धन, मीन, कुम्भ सन्ध्या में कुबरे हैं॥

लग्न फल देखना

दिवांधो बरहँना च रात्र्यन्धेधननाशकः ।
दुखःदो बधिरो लग्नः कुब्जो वंशविनाशकः ॥

टीका-दिन के अंधे लगन में कन्यादान होय तो वर की हानि हो । रात्री के अंधे लगन में फेरे हों तो धन की हानि हो । और बहरे लगक में पाणिग्रहण हो तो दुःख हो । और कुबरे लग्न में कन्यादान हो तो वंश का नाश करे ।

अथ योग बर्जित लिख्यते

परिवार्द्धं व्यतीपातं वैधृति सकलं त्यज्येत ।
विष्कुम्भे घटिकाः पंच शूले सप्त प्रकीर्तिताः ॥
षठगण्डे चातिगण्डे च नव व्याघातवज्रयोः ।
एते तु नव योगाश्च वर्ज्यं लग्ने सदा बुधैः ॥

टीका—ये नव योग सिद्ध हैं तिनकी घड़ी पण्डित जनों ने बर्जित करी है । परिघ की ३० घड़ी और व्यतिपात, वैधृत सम्पूर्ण त्याग करे हैं विष्कुम्भ की ५ शूल की ७ गंड, अतिगंड की ६ व्याघात की ६ वज्र की नौ ये घड़ीं शुभ काम में वर्जित कर दे ।

योगफल देखना

व्यतीपाते भवेन मृत्युर्गण्डांते मरणं ध्रुवम् ।
अग्निदग्धो भवेद्वज्रे रुजश्चैवापि गण्डके ॥

वैधव्यं वैधृतीचैव विषकुंभे कामचारिणी।
वीर्यहीनोऽतिगण्डे च व्याघाते मृतवत्सका॥
परिघे च भवेद्दासी मध्यकासरता सदा॥

टीका—व्यतिपात में विवाह करे तो वर की मौत हो। और गण्डांत में करे तो दोनों की मौत पो। वज्र में करे तो आग लगे। गंड में नरे तो रोग हो। वैध्रत में करे तो विधवा हो। विषकुम्भ में कामातुर हो। अतिगढ में धातुक्षय हो। व्याघात में मृतवत्सा हो बालक मर २ जाँय। परिघ में पराई दासी हो और माँस मदिरा का सेवन करने वाली हो ये निषिद्ध योग हैं इन्हें विवाह में वर्जित कर दे।

कन्यादान का लग्न शुद्ध देखना

व्यये १२ शनिःखे १० ऽविजस्तृतीये ३ भृगुस्तनौ १ चन्द्र खला न शस्ता। लग्नेट कविग्लौस्त्व रिपौ मृतौग्खोलग्नेट शुभारास्त्वमदेव सर्वे॥

टीका—विवाह लग्न से १२ वें शनि दसवें मङ्गल तीसरे शुक्र लगन चन्द्रमा पापग्रह और लगनेश सुक्र चन्द्रमा ६. ८ वें स्थान में तथा लगनेश सुक्र; बुद्ध ब्रहस्पति, चन्द्रमा, मङ्गल अष्टम स्थान में शुभ नहीं होते हैं॥

वार्ता—सुभदायक अच्छा विवाह सुझा के फिर सुभ तिथी सुभ वार देख के चिट्ठी लिखना। ब्राह्मण के यहाँ पण्डित करके लिखे या मिश्र करके। क्षत्रिय के यहां सिंह करके। बनिए के यहां लाला करके। शूद्र के यहाँ चौधरी करके लिखे॥

विवाह की चिट्ठी लिखना

स्वति श्रीसर्वोपमा योग्य सकगुण निधान गङ्गाजल निर्मल जमुना जल शीतल पवन पवित्र शुभ चरित्र षट्कर्म सावधान शुभ स्थान मीरापुर को लाला हेतराम व लाला हरसहाय जी व समस्त बाल गोपालन को मेरठ से एतान योग लिखितं लाला नैनसुखमल जी व समस्त बाल गोपालन की राम राम बंचना अत्र कुशलं तत्रास्तु अग्रे वृतान्तं वाच्यं वरनाम चिरंजीव लाल हीरालाल जी राशि कर्क सूर्य बल ११ चन्द्रबल ७ कन्या की राशि धन ९ गुरुबल २ चन्द्रबल ११ अग्रे सम्वत् १९६० बैशाख सुदी ११ रविवार का विवाह श्रेष्ठ है सो आप प्रमाण करना ॥ शुभम्

जब चिट्ठी रह जाय फिर लगन भेजना ७, ९, ११, १५ दिन का अच्छे सुभ वार तिथि देखकर लगन लिखना चाहिए ॥

अथ लग्न लिखना

श्रीगणेशायनमः । ॐ यं ब्रह्म वेदान्तविदो वदन्ति परं प्रधानं पुरुषतथान्ये । विश्वोदगतेः कारणमीश्वरं वा तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय ।

जननीजन्मसौख्यानां, वर्धनी कुलसम्वदाम् ।
पदवी पूर्वपुण्यानां, लिख्यते लग्नपत्रिका ॥

अथ शुभ सम्वत्सरेऽस्मिन् श्री नृपतिविक्रमादित्यराज्ये सम्वत् १९६० शाके शालिवाहनस्य १८२५ मासानां मासोत्तमे मासे उत्तमे वैशाख मासे शुभे शुक्ले पत्ते शुभतिथौ ११ एकाददश्यां गुरुवासरे ३५ घड़ी अठारह पल हस्तनामा नक्षत्रे ५५ । १३ व्याघातनाम योगे १२ । २४ ववनाम कर्णो ०७ । २१ तत्र दिनमानं ३२ । ५७ रात्रिमानम् २८ । ०३ अहोरात्रयोरैक्यम् ६० । ०० तत्र मेषार्क गतांशाः २३ शेषांशाः ७ तत्रेष्टम् ४ । २० तत सगये वृषलग्नादये एवं पञ्चांगशुद्धौ वरनाम चिरजीव हीरालाल जी राशि कर्क सूर्यबल २ चन्द्रबल ३ कन्या की राशि दस गुरुबल दस चन्द्रबल ६ सूर्यबल चन्द्रबल गुरुबल त्रिबल सहितलत्तादिदशादोषरहित पाणिग्रहण शुभम् मंगल ददाति ॥ कन्या के बान समोड़े ६ पहला बान वैशाख सुदी ६ सोमवार से होगा । वर के बान समोड़े ११ पहला बान वैसाख सुदी ४ शनिवार से करना । इतिशुभम्॥ बुध शनि सोमवार से तेल आरम्भ करें ।
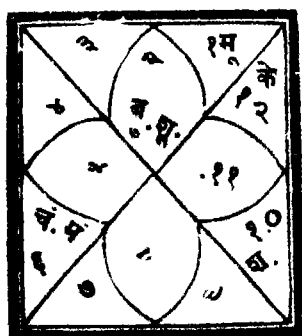
वान देखना

कोदण्डकण्ठी ब्रषकुम्भपञ्च कन्याघटे मीनमेषेच शप्त ।
भृगालियुग्मेनव तैल कर्कमन्यत्रतैलंपतिनाशनंच ॥

टीका—कोदण्ड कहिए धन कण्ठी सिंह ब्रष कुम्भ इनके ५ वान होते हैं । कन्या घटी कहिए तुला मीन मेष इनके ७ वान होते हैं, मृग कहिए मकर अलि कहिए बृश्चिक मिथुन कर्क इनके नौ वान होते हैं और तरह वान नहीं होते । कन्या की राशि से वान देखे उससे दो वान वर के ज्यादा बढ़ाकर लिखदे जिस दिन वान भरे वह दिन देखले कौन से वार को वान करना अच्छा है ॥

तेल चढाने के दिन

तैलाभ्यंगे रवौतापः सोमे शोभा कुजेमृतिः ।
बुधेधन गुरौहानिः शुक्रे दुखं शनौ सुखम् ॥

टीका—रविवार को तेल चढ़ावे तो ताप चढ़े सोमवार को अच्छा, मंगल को कष्ट, बुध को धन का लाभ और गुरु को धन की हानि, सुक्र को दुख, शनि को सुख हो ॥

तेल दोष दूर करने का उपाय

अर्के पुष्प गुरौ दूर्वा भूमि पुत्रे रजस्ता।
भाग वे गोमयं दद्यात् तेलाभ्यगो नदूषितः ॥

टीका—रविवार को तेल चढावे तो तेल में फूल गेर ले, गुरु को दूर्वा, भौम को गंगराज, सुक्र को गोबर, इनके मिलाने से तेल का दोष दूर हो जाता है इसमें कुछ संशय नहीं है।

अथ कर्तरी दोष देखना

लग्नाच्चंद्राद्द्वयोर्द्विस्थः पापखेटो यदा भवेत्।
कर्तरीवर्जनीयास्तु विवाहोपनयादिषु ॥
न कर्तरी यदादोषः सौम्यःसूर्यादिः जायते।
शुभग्रहयुता लग्नः क्रूरस्थो नास्ति कर्तरी ॥

टीका--चन्द्रमा से १२ स्थान तथा दूसरे स्थान जो पाप ग्रह हो तो कर्तरी दोष होता है विवाह यज्ञोपवीत में वर्जित हैं, इन्हीं स्थानों में समय ग्रह हो तो दोष नहीं और क्रूर ग्रह हो तो भी दोष नहीं माने ॥

अथ होलाष्टक देखना

शुक्लाष्टमी समारंभ्य फाल्गुनस्य दिनाष्टकम्।
पूर्णिमामवधि कृत्वा त्यज्यं होलाष्टकं बुधेः ॥

सन्मुखे अर्थ लाभाय पृष्ठे चन्द्रे य धनक्षयः ।
दक्षिणे सुखसम्पत्तिर्वामे तु मरणं भवेत् ॥

टीका –सन्मुख के चंद्रमा में लाभ हो पीठ पीछे के चंद्रमा में धन की हानि, दाहिने चन्द्रमा सुख सम्पत्ति करे, बाँये चंद्रमा बल करते हैं ॥

तीनों लोकों में चंद्रमा वास फलम्

तिथिश्च त्रिगुणीकृत्य एकं च परमेलयेत् ।
शिवनेत्रेहरेद्भागं शेषं चन्द्र विधीयते ॥

टीका—तिथियों को तिगुनी करके उसमें क्र. और मिलावे शिव नेत्र जो हैं तीन उनका भाग दे फिर चंद्रमा वास देखे ।

एकस्मिन् वसते स्वर्गे युग्मे पातालमेव च ।
शून्ये हि मृत्युलोके तु [illegible] मः प्रकीर्तित ॥

टीका—एक बचे तो स्वर्ग मे वास जानना, दो बचे तो पाताल में शून्य बचे तो मृत्युलोक में ।

पाताले नैर चंद्रे च पंच कर्माणि वर्जयेत् ।
तड़ाग कूपखानास्ति अन्नंनास्ति च मेंदनी ॥
यात्राया कुशलं नास्ति पठने नास्ति अक्षरं ।

टीका–जो पाताल में चंद्रमा का वास हो तो इतने काम न करे, तालाब बनाना, कुँआ खोदने से जल नहीं हो, खेती लगाके में अन्न नहीं हो, यात्रा करने में कुशल नहीं हो और पढ़ने में अक्षर नहीं आवे ।

यात्रा कार्ये प्रवेशे च गृहारम्भ च कार्यत ।
कूपादौन् विशेषेण सर्वकार्येषु शिचयेत् ॥

टीका-यात्रा में; मकान बनाने में, कूप, बावड़ी खोदने में, बाग लगाने में और जितने शुभदायक काम हैं सब में चंद्रमा का बल जरूर देखे ॥

चन्द्रमा रङ्ग वाहन देखना

मेषे वृश्चिके सिंहे रक्तकुंजरवाहनम् ।
मिथुने युग्य धनौ चव पीततु तुरंच भवेत् ॥
वृषे तुले कर्कट च वाहन वृषभरमृतम ।
मकरे कुंभेकन्यायां कृष्ण महिषी वाहनम ॥

चन्द्रमा रङ्ग वाहन चक्रम

मेष	वृश्चिक	सिंह	लाल रङ्ग । वाहन हाथी
मिथुन	मीन	धन	पीला रंग । घोड़ा सवारी
वृष	तुला	कर्क	श्वेत रंग । बैल सवारी
मकर	कुम्भ	कन्या	काला रंग । भैंस । सवारी

घात चंद्रमा देखना

मेषे आदि वृषे पंच मिथुने नवमस्तथा ।
कर्के द्वयरहः सिंहे कन्यायां दश वर्जिताः ॥
तुला त्रिणि अलौ सप्त धन वेदा मृगेनसु ।
कुंभे रुद्रौर विर्मीने चात चन्द्रः प्रकीर्तितः ॥

अथ घात चंद्र चक्रम्

मे०	वृ.	मि०	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृ०	धन	म०	कु०	मीन	चं०
१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२	घात

घात चंद्रमा बर्जित

प्रयाणकाले युद्धे च कृषो वाणिज्यसंग्रहे ।
वादे चैव ग्रहारम्भे वर्जयेत घातचन्द्रकम ।

टीका –यात्रा में, युद्ध में, खेती में, वाणिज्य में, घर बनाने में घात चन्द्रमा वर्जित है ॥

घात चन्द्रमा फल

रोगे मृत्यु रणे भङ्गोया त्राकाले च बन्धनम ।
विवाहे विधवा नारी घातच द्रफलं स्मृतम ॥

टीका–घात चंद्रमा में बीमार हो तो मृत्यु हो, युद्ध करे तो भङ्ग हो, यात्रा करे तो बन्धन हो । विवाह करे तो विधवा होय, घात चन्द्रमा का फल है ।

सन्मुख चंद्रमा फलम्

कारणभगदोषं बार संक्रातिदोषम ।
कुतिथि कुलदोष यामयामार्द्धदोषम ॥
कुजशनिरविदोषः राहुकेत्वादि दोषम ।
हरति सकलदोषं चंद्रमा सन्मुखस्थः ॥

टीका—करन नक्षत्र वार संक्रांति योग यामार्द्ध मङ्गल शनि राहु रवी इतने दोषों को सन्मुख चंद्रमा दूर करता है ॥

पुष्य नक्षत्र फलम्

न योगीयोगं न च लग्नीलग्नम् न तारिका चन्द्र बलं गुरुश्च । न योगनी राहु निर्वलिष्ठो काल एतानि विघ्नानि पुष्यः ॥

टीका—योगिनी अच्छी न हो, चंद्रमा भी अच्छा न हो, तारा अच्छा न हो गुरुबल भी अच्छा न हो और चंद्रमा भी अच्छा न हो, भद्रा, राहु ये भी अच्छे न हों परन्तु पुरुष नक्षत्र उस दिन हो तो इतने दोषों को दूर करता है ॥

सिंहो यथा सर्वचतुष्पदानां तथैव पुष्या बलवानु डूना चन्द्रे विरुद्धेप्यथगोचरेपि सिद्धयन्ति कार्याणि कृतानि पुष्ये ॥

टीका—जैसे सिंह चौपायों में बलवान होता है ऐसे ही पुरुष नक्षत्रों में बलवान होता है, चंद्रमा भी विरोधी हो और गोचर भी विरुद्ध हो तो पुष्य नक्षत्र में कार्य नहीं बिगड़ता है । पुष्य नक्षत्र का किया काम सिद्ध होता है ॥

समस्तकर्मोचित्कालपुष्यो दुष्या विवाहे मद मूर्छितरत्वात् । सहस्रपत्रमसवे न तस्मादिहापि मुक्तो भुवि लोकसंघेः ॥

शतरुद्रा विपाशायामैरावत्यां त्रिपुष्करे ।
होलाष्टकं विवाहादौ त्याज्यमन्यत्र शोभनम् ॥

टीका—फाल्गुन शुक्ला ८ से पूर्णमासी तक होलाष्टक होते हैं तो शतरुद्रा नदी के तीर और पिपासा नदी के तीर और ऐरावत नदी के तीर और पुष्कर नदी के तीर इन देशों में विवाहादिक और शुभ काम में वर्जित हैं और देशों में नहीं हैं ॥

चंद्रमा देखना

अर्केन्दुश्च वरे श्रेष्ठः कन्याया न कदाचन ।
वरस्य शुभदो नित्यं कन्यका पतिनाशनम् ॥

टीका—किसी २ आचार्य का ये मत है कि विवाह में १२ चन्द्रमा वर को हो तो श्रेष्ठ हैं, कन्या को नहीं । वर को शुभ हैं जो कन्या को १२ चन्द्रमा हो तो उसके पिता का नाश करे ।

सास सुसरे को सुख देखना

श्यश्रूःसितार्कः श्वसुरस्तनुर्जामित्रपःस्याद्दयितोमनः शशि । एतद्बलं संप्रति भाव्यतां त्रिकस्तेषां सुखं संभवदेद्विवाहत ॥

टीका शुक्र तो सासू और सूर्य सुसरा और लग्न शरीर और सप्तमेश भर्ता चन्द्मा मन विवाह लग्न में जो ग्रह बलिष्ट होगा उसी की तरह सुख होगा जैसे शुक्र बलवान हो तो सासू का सुख रहे और सूर्य बलवान हो तो सुसर का सुख रहे इत्यादि ।

अथ गौनो सुभाना

धातृयुग्मं इयोमैत्रं श्रुतियुग्मक त्रायम् ।
पुनर्बसद्ध यं पूषा मूलं चाप्युत्तरात्रयम् ॥
विषमे वत्सरे मासे मार्गे मघे च फाल्गुने ।
मकरे मिथुने मीने लग्ने कन्या तुला धनुः॥
भौमार्किवाजिताःवारा ग्रह्यं त च द्विरागमे ।
षष्ठी रिक्ता द्वादशी च आमावस्या च वर्जिता ॥

द्विरागमन चक्रम्

रा०	मू०	अश्व०	अनु०	श्र०	०	ये नक्षत्र गौने में शुभ हैं।
ध०	ह०	चि०	स्वा०	पु०	०	ये भी नक्षत्र शुभ हैं।
पुष्य	रे०	मृ०	उ०३	तीनों	०	ये भी नक्षत्र सुभ हैं।
मार्ग०	वैशा	फाल	गुन	०	०	ये महीने सुभ हैं।
१०	३	१२	६	७	८	ये लग्न सुभ हैं।
६	४	१४	६	१४	३०	ये तिथि त्याज्य हैं।
मगलशनि०		०	०	०	०	ये वार वर्जित हैं।

दोहा—इष्ट घड़ी ज: गुनि करे, सूर्य अंश मिलाय ।
भाग तीस का दे ने, गई लग्न मिल जाय ॥

अथ—पहले इष्ठ निकालकर खो फिर इष्ट की घड़ी को ६ गुणा कर जितने सूर्य के अंश गये हों वे मिलाकर ३० का भाग दे जितना आवे जिस राशि का सूर्य हो उससे गिनने जो लग्न आवे वह बीत गया जानना चाहिए।

अथ मुहूर्त प्रकरण

तृतीय भाग

चन्द्रमा बास फल देखना

१	लक्ष्मी प्राप्ति
२	मन सन्तोष
३	धन सम्पत्ति
४	कलहागर्भ०
५	ज्ञान वृद्धि
६	उत्तम सम्पत्ति
७	राज सम्मान
८	मृत्यु भय
९	धर्म लाभ
१०	मनवांछितफल
११	सब लाभ
१२	हानि करते है

आद्यः चन्द्रः श्रियं कुर्यात् मनस्तोष द्वितीयके। तृतीये धन सम्पत्ति चतुर्थे कलहागमम् ॥ पंचमे ज्ञानवृद्धिञ्च षष्ठेसंपतिरुत्तमाम्। सप्तमे राज सम्मानं मरणम् चाष्टमे तथा ॥ नवमेधर्म लाभं च दशमे मानसेप्तिम् एकादशे शर्वलाभं द्वादशेहानि मेव च ॥

टीका-अब कन्या और बर दोनों का चन्द्रबल कहा है। इस चक्र में पण्डित जन भली प्रकार से समझ लें।

गोधूल मास निर्णय

पिंडीभूते दिनकृति हेमन्तर्तौ स्यादधास्ते । तपन समये गोधूलिः सम्पूर्णास्ते जलधरमालाकाले त्रेधा-योज्या सर्वेषु शुभे कार्यादौ ॥

टीका—हेमन्त काल के चार महीने में जब सूर्य गोलाकार अस्त समय हो तब गोधूली लग्न होता है। और तपन समय में ४ मास अर्धास्त सूर्य के समय गोधूली जानो। जलधर माला काल अर्थात् वर्षा के ४ मास में सम्पूर्ण सूर्य के अस्त समय में गोधूली जानो। सब कामों में शुभ है।

जन्म चन्द्रमा देखना

जन्मर्क्षस्थे शशाङ्के तु पञ्च कर्माणि वर्जयेत् ।
यात्रा युद्धं गृहारम्भं विवाहक्षौर कर्माणि ॥

टीका—जन्म के चन्द्रमा में इतने काम वर्जित हैं यात्रा युद्ध, विवाह, हजामत बनवाना और नये घर में प्रवेश करना।

अथ चन्द्रमा वास फलम्

मेषे च सिंहे धनु पूर्वभागे वृषे च कन्या
मकरे च याम्ये । मिथुने तुलाकुम्भसुपश्चि
मायां कर्कालिमीने दिशि चोत्तरस्याम्

टीका—१।५।९ के चन्द्रमा का पूर्व में २।६।१० का दक्षिण में ३।७।११ का पश्चिम में ४।८।१२ का उत्तर दिशा में चन्द्रमा का वास रहता है।

टीका—सूर्य ग्रहण चार पहर पहिले और चन्द्रग्रहण से तीन पहर से पहिले सूतक लग जाता है । उस समय बालक वृद्ध और रोगी इनके अतिरिक्त और को भोजन नहीं करना चाहिए ॥

चंद्रमा को निकलना छिपनो

तिथि गुणितं रजनी परिमानं यम रहित सित कृष्ण विमिश्रम । बाण शशांकै विभाजित लब्धं प्रति दिवस चन्द्रोदयमस्तम ॥

टीका-जिस तिथि को चंद्रमा का निकलना व छिपना लखना हो उस तिथि को जितनी रात्रि हो उसे तिथि के अंकों से गुणा करे, जो गुणनफल आवे उसमें कृष्ण पक्ष में २ जमा करदे और शुक्ल पक्ष में २ घटादे फिर उसे १५ से भाग दे जो लब्धि मिले कृष्ण पक्ष में उतनी ही रात्रि गये छिपेगा ।

शुभ कर्मों में सूतक पातक देखना

एकविंशति यज्ञेषु विवाहे दश वासरान् ।
श्राद्धे पाक परिकृथा न दोषो मनुरब्रवीत ॥

टीका-यज्ञ में २१ दिन पहले, विवाह में दस दिन पहले और श्राद्ध में पकवान तैयार हो जाने पर कोई दोष नहीं लगता परन्तु घर के मनुष्य अलग रहें ॥

ग्रहण कौनसो राशि को महता है

मासस्तृतीयाष्टमगश्चतुर्थस्तथायसंस्थः शुभदः

सुनित्यं । त्रिकोणगोमध्यफलश्चन्द्रभात्प्रोक्ताःसुनिष्टश्च बुधैस्तु शेषाः ॥

टीका-जिस रास प सूर्य हो उससे अपनी राशि तक गिने जो ३ । ८ । ४ । ११ उत्तम ५ । ९ मध्यम १२ । ७ १० १ २ ६ ये अधम जैसी राशि हो वैसा फल जानो । ग्रहण होने के दिन से ३ दिन पहले के और ३ दिन पीछे के शुक्र डूबने के भी तीन दिन पहले के और उदय से तीन दिन पीछे के सब कार्य में वर्जित हैं ।

द्विपंचमे नवमे शुक्ले श्रेष्ठश्चन्द्राहि उच्यते ।
अष्टमे द्वादसे कृष्णे चतुर्थे श्रेष्ठ उच्यते ॥

टीका—किसी २ आचार्य का ये भी मत है कि २ ५ ९ शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा उत्तम हैं । ४ ८.१२ कृष्णपक्ष के चन्द्रमा उत्तम हैं ।

औषधि करने का मुहूर्त

पोष्णद्वये चादितिभद्वये चहस्तत्रये च श्रवणत्रयेच ।
मैत्रे च मूले च मृगे चशस्तं भैषज्यकर्मप्रवदं संतः॥

टीका—रेवती. अश्विनी. पुनर्वसु पुष्य ह चि स्वा श्र ध श ऽनु मू मृ० इन नक्षत्रों में दवाई करने से जल्दी रोग दूर होता है ।

घात प्रकार देखना

घाततिथिघातवारं घातनक्षत्रलग्नकम् ।
यात्रायां वर्जयेत् प्राज्ञो रन्यकर्मसुशोभितम ॥

टीका-घात तिथि घात वार घात नक्षत्र घात लग्न घात चंद्रमा इनको यात्रा में वर्जित करदे और कामों में शुभ हैं ॥

यात्रा मुहूर्त देखना

यात्रायां दक्षिणे राहुयोगनी बामतः शुभो ।
प्रष्ठतो द्वयमाख्यातम् चन्द्रमाः समुखे शुभः ॥

टीका—दाहिनी तरफ राहु योगिनी बाये और ये दोनों पीठ पीछे चंद्रमा सन्मुख सुभदायक हैं ॥

सर्वदिग्गमने हस्तः पूषाश्वौ श्रवणो भृगः ।
सर्वसिद्धिः करः पुष्यो विद्ययाँ च गुरुर्यथा ॥

टीका—अब सब दिशाओं की यात्रा के नक्षत्र कहते हैं । ह० रे० अ० श्र० म्र० पुष्य ये नक्षत्र सर्व सुख के देने वाले हैं और पुष्य अधिक सुभ है जैसे कि विद्या विषय बृहस्पति सुभ है इनसे अलावा और नक्षत्र बर्जित हैं ।

अथ हवन करने का मुहूर्त

सैका तिथिर्वारयुता कृताप्ताः शेषे गुणेऽभ्रे भुवि वह्निवासः । सौख्याय होमः शशियुग्म शेषे प्राणार्थ-नाशौ दिवि भूतले च ।

टीका-तिथि वार को एक जगह करके एक और मिलावे और चार का भाग दे । तीन या शून्य बचे तो अग्नि का वासा पृथ्वी में होता है सुख देने वाला है और १।२ बचे तो अग्नि का वासा पाताल में होता है प्राण और धन का नाश हो ऐसे क्रम से जानना ॥

अथ गृह के मुख में आहुति जानो

तिरश्चिविदभृगु भास्करि चन्द्रमाः कुजसुरे ज्यविधुन्तुदकेतवः । रनिभतो दिनभङ्गणयेत्तथा प्रतिखगं तृतीयं न्यसेत ।

टीका-सूर्य के नक्षत्र से उस दिन के नक्षत्र तक गिने जिस दिन हवन करना हो । तीन तीन नक्षत्र पर एक-एक ग्रह को बाँटे जो शुभ ग्रह के मुख में आहुति जाय तो शुभ और पाप ग्रह के मुख में जाय तो अशुभ जानना । वह क्रम यह है कि ३ नक्षत्र सूर्य के ३ बुध के, ३ शुक्र के, ३ शनि के, ३ चन्द्रमा के, ३ मङ्गल के, ३ बृहस्पति के, ३ राहु के, ३ केतु के ॥

योगिनी देखना

प्रतिपासु नवम्यां च पूर्वस्य दिशि योगिनी ।
अग्निकोणे तृतीयायामेकादश्यां तु सा स्मृता ॥
त्रयोदश्यां च पञ्चम्यां दक्षिणस्यां शिवप्रिया ।
द्वादश्यां च चतुर्थ्यां च नैऋतकोणगामिनी ॥
चतुर्दश्यां च षष्ठ्यां च पश्चिमाया च योगिनी,
पूर्णिमायां च सप्तम्यां वायुकोणे तु पार्वती ।
दशम्यां च द्वितीयायामुत्तरस्यां शिवा भवेत ।
ईशान्यां दिशि चाष्टम्यां योगिनी समुदाहृता ॥

टीका—सब ही कार्य में पुष्य नक्षत्र शुभ हैं परन्तु विवाह में अशुभ है क्योंकि ब्रह्मा ने अपनी पुत्री का विवाह पुष्य में ही किया था सो पुत्री को देखकर वीर्य स्खलित हो गया इस वास्ते ब्रह्मा ने श्राप दे दिया ये वार्ता वहाँ की है जहाँ साठ हजार बाल ऋषि पैदा हुए थे ॥

सिद्धयोग देखना

शुक्रे नन्दा बुधे भद्रा शनौ रिक्ता कुजे जया ।
गुरो पूर्णा तिथिर्ज्ञेया सिद्धियोगः प्रकीर्तिताः ॥

सिद्धयोग चक्रम्

शु० १-६-११	बु० २-७-१२	श० ४-९-१४	मी० ३-८-१३	गु० ५-१०-१५	सिद्धि तिथि
नन्दा	भद्रा	रिक्ता	जया	पूर्णा	योग

मृत्युयोग देखना

नन्दा सूर्ये मङ्गले च भद्रा भार्गवचन्द्रयोः ।
बुधे जया गुरौ रिक्त शनौ पूर्णा च मृत्युदा ॥

मृत्युयोग चक्रम

र०म०	च०शु०	बु०	बृ०	श०
नन्दा १-६-११	भद्रा २-७-१२	जया ३-८-१३	रिक्ता ४-९-१४	पूर्णा ५-१०-१५

पंचक देखना

धनिष्ठापंचवेत्याज्यं तृण काष्टादिसंग्रहे ।
त्याज्या दक्षिणदिग्यात्रा गृहाणांछादनंतथा ॥

टीका—धनिष्टा आधे को आद लेकर, धनिष्ठा, शतभिषा पूर्वा भाद्रपद; उत्तराभाद्रपद रेवती ये पांच नक्षत्र पंचक के हैं इनमें तृण काष्ट आदि नहीं ग्रहण करना । दक्षिण की यात्रा नहीं करना, घर नहीं छावना, छत नहीं गेरना ।

शुक्र के डूबने का फल देखना

इसमें कौन काम वर्जित है शुक्र का अस्त पत्र में लिखा रहता है ।

वापीकूपतडाग यज्ञगमन चौरं प्रतिष्ठाव्रतम ।
विद्यामन्दिरवर्णवेधन महादान गुरोःसेवनम ॥
तीर्थस्नानविवाहवेदहवन मन्त्रोपदेशः शुभः ।
दूरेणेव जिजीविषुः परहरेदस्ते गुरौ भार्गवे ॥

टीका—बावड़ी, कूवां, तालाब, बाग, यज्ञ, मकान, गमन चौरः देवालय, मकान की प्रतिष्ठा । कान विधवाना, और जो महादान, सुवर्ण का दान करना और गुरु सेवा, तीर्थ यात्रा करना, विवाह करना, देवता का हवन करना, नया व्रत करना, मन्दिर बनाना, मुण्डन जनेऊ विद्यारम्भ और जो शुभ कार्य हैं सो शुक्र के और बृहस्पति के डूबने में नहीं करने चाहिए । जो जीवने का इच्छा करे तो दूर से ही त्यागन करे ।

शुक्र दोष परिहार देखना

दकग्रामे पुरे वापि दुर्भिक्षे राजविग्रहे
विवाहे तीर्थयात्रायां शुक्रदोषो न विद्यते ॥

टीका--गांव के गांव में या शहर के शहर में, दुर्भिक्ष में, राज विग्रह में, विवाह में तीर्थ यात्रा में सन्मुख शुक्र दोष नहीं मानना चाहिए ॥

पितृ ग्रहे चेत्कुचपुष्पतं भवस्त्रीणां न दोषः प्रीति शुक्रसम्भवः । भृग्वगिरोवत्सवशिष्ठ कश्यपात्रीणां भारद्वाजमुनेः कुले तथा ।

टीका—जो पिता के घर स्त्री को कुच पुष्प अर्थात् रजस्वला हो तो सुक्र के अस्त व सुक्र के सन्मुख आने जाने का दोष नहीं है जो स्त्री इन गोत्रों की हैं भृगु, अंगिरा, वत्स, वशिष्ठ, कश्यप. अत्री. भरद्वाज, इन ऋषियों के गोत्रवाली को भी आने जाने का दोष नहीं हैं ॥

चीज बेचने खरीदने का मुहूर्त

पूर्वा विशाखा भरणीषु कृतिका श्लेशासु वै विक्रयणं शुभेदिने । चित्रांतिमः स्वातिशताशिव वासवे श्रुतौ च वस्तुक्रयणं वरं भवेत् ॥

टीका--तीनों पूर्वा. विशेषा भरणि. कृतिका. श्लेषा सुभ दिन सुक्र गुरु, चन्द्र. बुध इन वार में बस्तु बेचना । चित्रा रेवती स्वाति शतभिषा अश्विनीं धनिष्ठा श्रवण इन नक्षत्रा में और बृहस्पति सुक्र सोमवार बुध इन वारों में खरीदना सुभ है ।

अथ चंद्रग्रहण देखना

भानोः पञ्चदशे ऋक्षे चन्द्रमा यदि तिष्ठति ।
पौर्णमास्यां निशाशेषे चन्द्रग्रहणमादिशेत् ॥

टीका—सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा १४ वें नक्षत्र पर हो तो पूर्णमासी को चन्द्रग्रहण होता है और केतु चन्द्रमा एक राशि पर हों तो चंद्रग्रहण होता है ॥

सूर्यग्रहण देखना

माघो न ग्रस्तनक्षत्रात् षोडषं यदि सूर्यभम् ।
अमावस्यादिवाषेथे सूर्यग्रहणमादिशेत ॥

टीका—मावस के दिन सूर्य चन्द्रमा एक राशि पर हों और मावस के दिन सूर्य नक्षत्र और दिन नक्षत्र एक हो तो पड़वा की संधि में सूर्यग्रहण होता है । सूर्य नक्षत्र से चन्द्रमा नक्षत्र तक गिनिए उसमें से ११ निकाल दें शेष सोलह नक्षत्र बचें तो निश्चय वो ही सूर्यग्रहण होता है ॥

दोहा- चन्दा से रवि सातवें, रवि राहु एकन्त ।
पूनो में पड़वा मिले, निश्चय ग्रहण पड़न्त ॥
रवि से राहु सातवें, शशि रवि सों एकन्त ।
मावस में पड़वा मिले, निश्चय ग्रहण पड़न्त ॥

ग्रहण का सूतक देखना

सूर्य हेतु नाश्नीयात पूर्वं याम चतुष्टयम् ।
चन्द्र हेतु यामस्त्रीन् बालवृद्धाऽऽतुरैर्विना ॥ १

टीका–पड़वा और नवमी को योगनी पूर्व में वास करती है। अग्नि कोण में ३। ११। दक्षिण में। १३ नैऋत में १२। ४ पश्चिम में १४। ६ वायव्य में १५। ७ उत्तर में १०। २ ईशान में ३०। ८ ऐसे योगनी बास कहिये ॥

योगिनी फल

योगनी सुखदा वामे पृष्ठे वांछितदायिनी।
दक्षिणे धनहन्त्री न सम्मुखे मरणप्रदा ॥
मासस्य प्रतिपत् श्रेष्ठा द्वितीयाकामकारिणी।
आरोग्यदा तृतीया च चतुर्थी कलहप्रदा ॥
पंचमी च श्रियायुक्ता षष्ठी कलहकारिणी।
भक्षमान समायुक्ता सप्तमी सुखदा सदा ॥
अष्टमी व्याधिदा नित्य नवमी मृत्युदा स्मृता।
दशमी भूरिलाभास्याच्चैकादशी च हेमदा ॥
द्वादशी प्राणसंदेहा सर्वसिद्धा त्रयोदशी।
शुक्ला वा यदि वा कृष्णा वर्जनीया चतुर्दशी ॥
पौर्णमायाममायां च प्रस्थानं नैव कारयेत्।
तिथि क्षये च मासान्ते गृहणान्ते दिनत्रयम् ॥

टीका–यात्रा में बाँये योगनी सुखदायक है पीछे की मनोकामना देने वाली है। दाहिने हानिकारक है। सन्मुख की मृत्यु करती है॥ महीने के शुरू की पड़वा श्रेष्ट है॥ २ काम काज में श्रेष्ठ है। ३ आरोग्य प्रद। ४ क्लेश देने वाली॥ ५ लक्ष्मी प्रद॥

६ कलहप्रद । ७ भोजनप्रद । ८ व्याधिप्रद । ९ मृत्युप्रद । १०लाभ प्रद, ११ स्वर्णप्रद, १२ प्राण सन्देह । १३ सर्व सिद्धिप्रद । १४ अवश्य त्याज्य है । १५। ३० और तिथि घटने के दिन मासान्त में कहीं बाहर गाँव को भूल के भी न जाये ग्रहण के अन्त के तीन दिन त्याग के जाना चाहिए ॥

अथ योगिनी चक्रम्

ई०	पूर्व	आ०
८ । ३०	१ । ९	३ । ११
उ. २ । १०	योग०	५ । १३ द०
१५ । ७	६ । १४	४ । १२
वा०	प०	नै०

काल विचार

आदित्यउत्तरे कालं सोमे वातव्यमेव च ।
भौमे च पश्चिमे कालः बुधे नैऋतमेव च ॥
गुरुश्चदक्षिणे कालं शुक्रो हानिस्तथैव च ।
शनौ पूर्वं तथा कालं एव कालाःप्रकीर्तिताः॥

काल चक्र विचार

र०	च०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०
उत्तर	वायव्य	पश्चिम	नैऋत	दक्षिण	अग्नि	पूर्व

इन वारों में काल का वासा, इन २ दिशा में रहता है इनमें कहीं को न जाय।

यात्रा वारफलम्

ताम्बूलं रविवारे च सोमे ओदनमेव च।
भौमे धात्रिफलं भक्ष्यं बुधे मिष्टान्नभोजनम्॥
गुरौ तु दधिसंयुक्तं शुक्रे तु तीक्ष्णमेव च,
आमिषं शनिवारे तु कृत्वा यात्रं व्रजेन्नरः॥

यात्रा वारचक्रम्

रविवार	चन्द्रवार	मङ्गल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनिवार
पान	भात चावल	आंवला	मीठा	दही	चरपरा	उड़द

जिस वार में यात्रा को जाय यदि यह चीज खाकर जाय तो शुभ है

दिशाशूल परिहार

सूर्ये वारं घृतं पीत्वा गच्छेत्सोमे पयस्तथा।
गुडमंगरवारे च बुधवारे तिलानपि॥
गुरुवारे दधिज्ञेयं शुक्रवारे यवानपि।
माषान् भुक्त्वा शनिवारे शूलदोषोपशांतये॥

टीका—रविवार को जाय तो घी खाकर जाय। चन्द्र को दूध मङ्गल को गुड़; बुध को तिल, गुरु को दही, शुक्र को जौ, शनिश्चर को उड़द ये खाकर यात्रा करे तो दिशाशूल का दोष नहीं होता।

अथ राहु विचार

रविवारे च नैऋत्यां सोमे उत्तरमेव च ।
आग्नेयां मङ्गलं चैव बुधे पश्चिममेव च ॥
गुरौ ईशानक प्रोक्त शुक्रे दक्षिणमेव च ।
शनौ वायव्यकोणेषु कव राहुः प्रकीर्तितः ॥

राहु चक्र विचार

रविवार	चन्द्रवार	मंगल	बुधवार	बृहस्पति	शुक्रवार	शनिवार
नैऋत	उत्तर	अग्नि	पश्चिम	ईशान	दक्षिण	वायव्य

रवि विचार

यामे युग्मे च रात्रौ च यामे पूर्वादिगोरविः ।
यात्रास्मिन्दक्षिणे वामे प्रवेशे पृष्ठके द्वयत् ॥

टीका—पहर रात्री रहे से पहर दिन चढ़े तक सूर्य नारायण पूर्व में वास करते हैं । फिर दो पहर दक्षिण में । फिर एक पहर दिन रहे से एक पहर रात्री गये पश्चिम में फिर २ पहर गये उत्तर में । सो यात्रा विषय दाहने बाँये शुभ है । घर प्रवेश में सन्मुख और पीठ पीछे शुभ है ॥

अथ गर्भाधान मुहूर्त

शुभे त्रिकोणे केन्द्रस्थे पापे षष्ठे त्रिलाभके ।
पुत्र कामः स्त्रिय गच्छन्नरो युग्मासु रात्रिषु ॥

टीका—जो त्रिकोण ५, ९, केन्द्र १, ४, ७, दस इन स्थानों में सौम्य ग्रह हों और ३ । ६ । ग्यारह इनमें पाप ग्रह हों तो ऐसे लग्न में और रजोधर्म से अर्थात् ६ । ८ । दस, बारह । चौदह सोलह युग्मरात्रि में पुत्र की इच्छा वाला स्त्री प्रसङ्ग करे ॥

नाम धरने का मुहूर्त

पुनर्वसुद्वयेहस्तत्रये मैत्र द्वये मृगे ।
मूलोत्तराधनिष्ठास्युः द्वादशैकादशे दिने ॥
अन्यत्रापि शुभे योगे वारे बुधशशांकयो ।
भानौ गुरौ स्थिरे लग्नेबालनामकृतं शुभम् ॥

टीका—पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, ज्येष्ठा, मृगशिर, मूल, उत्तरा तीनों धनिष्ठा ये नक्षत्र और ग्यारह बारह दिन बुध चन्द्रमा रवि॰ गुरु इन वारों में और २ । ५ । ८ ग्यारह इन लग्नों में बालक का नाम धरिये ॥

प्रसूतिस्नान मुहूरत

रोहिण्युत्तररेवत्यो मूलस्वात्यनुराधयोः ।
धनिष्ठा च त्रयः पूर्वा ज्येष्ठा मृगशीर्षके ॥
एतास्त्याज्याःसदा ज्ञानी प्रसूतिस्नानकोविदैः ।
वारे भोमार्कयोः जीवे स्नानमुक्तं सदैव हि ॥

टीका-रोहिणी, तीनों उत्तरा रेवती, मूल, स्वाँति, अनुराधा धनिष्ठा, तीनों पूर्वा ज्ये॰ मृ॰ ये चौदह नक्षत्र त्याग के जितने और नक्षत्र रहैं सो लीजे ॥ और मङ्गल गुरु॰ रवि॰ ये वार

प्रसूति स्नान के लिए शुभ हैं ॥ ६, ८, द्वादशी, चौथ, नौमी, चोदस ये तिथि न हों ॥

कुआ पूजने को मुहूर्त

मूलादितो द्वयं ग्राह्यं श्रवणश्च मृगः करः ।
जलवाप्यर्चने हेयाः शुक्रमंदार्कभूमिजाः ॥

टीका—मूल, पूर्वाषाढ़ श्रवण मृगशिरा हस्त ये नक्षत्र शुभ हैं ॥ शुक्र शनि रवि भौम ये वार त्याग के प्रसूति का कूप जलाशय पूजन उत्तम है और शुभ तिथी होनी चाहिए ॥

स्त्री नवीन वस्त्र धारणम्

हस्तादिपञ्चकेऽश्विन्यां धनिष्ठायां च रेवतो ।
गुरौ शुक्रे बुधे वारे धार्यं स्त्रीभिर्नवाम्बरम् ॥

टीका—हस्त चित्रा स्वाति, विशाखा, अनुराधा, अश्विनी, धनिष्ठा, रेवती, गुरु, शुक्र, बुद्ध इन वारों में स्त्रियों को नये कपड़ पहरावे ॥

पुरुष नवीन वस्त्र धारणम्

लग्ने मीने च कन्यायां मिथुने च वृषः शभः ।
पूषा पुनर्वसुद्वन्द्वे रोहिण्युत्तरभेषु च ॥

टीका--मीन कन्या मिथुन वृष इन लग्नों में और रेवती, पुनर्वसु पुष्य, रोहिणी तीनों उत्तरा इन नक्षत्र में पुरुषों को नवीन वस्त्र पहरावे तो शुभ है ॥

नवान्न भोजन व वस्त्र का मुहूर्त

नवान्भोजनं प्राह्यं वस्त्रे प्रोक्तम शेषतः ।
वाराधिकौ सूर्यभौमो नक्षत्रं श्रवणा मृगः ॥

टीका—नवीन अन्न का भोजन और नवीन वस्त्र धारण करनेके लिए मङ्गल रवि ये वार और श्रवण मृगशिरा यह नक्षत्र उत्तम है

अन्न प्राशन मुहूर्त

आद्यान्नप्राशने पूर्वा सर्पार्द्रा वरुणोयमः ।
नक्षत्राणि परित्यज्य वारे भौमार्क नन्दनौ ॥
द्वादशी सप्तमी रिक्त पर्वनन्दास्तु वर्जिताः ।
लग्नेषु च झषोऽद्वया व्रष कन्यो च मन्मथ ॥
शुक्ले पक्षे शुभे योगे सप्राह्य शुभ चन्द्रमाः ।
मासे षष्ठाष्टमे पुंसां स्त्रीणामाभि च पंचमे ॥

अब बालक के अन्नप्राशन विषय इतने नक्षत्र वर्जित हैं तीनो पूर्वाश्लेषा, आद्रा, शतभिषा भरणी रेवती । ये नक्षत्र और भौम शनि ये वार द्वादशी, सातें, चौथ, नौमी; चौदस, अमावस्या पूरनमासी पड़वा छट एकोदशी यह तिथि सब वर्जित हैं और मीन व्रष मिथुन कन्या ये लग्न शुभ हैं और शुक्ल पक्ष विषय उत्तम शुभ योग में कीजे और शुभ चन्द्रमा हों छटा और आठवा मास पुत्र के अन्नप्राशनमें श्रेष्ठहै और कन्या को पाँचवे मासमें खुलावे ॥

अथ चूड़ा कर्म मुहुर्त

पुनर्वसुद्वयं ज्येष्ठा मृगश्च श्रवणद्वयम् ।
हस्तत्रये च रेवत्यां शुक्लपक्षोत्तरायणे ॥
लग्नं गोस्त्रीधनं कुम्भं मकरो मन्मथस्तथा ।
सौम्यवारे शुभे योगे चूड़ाकर्म स्मृतं बुधः ॥

टीका—पुनर्वसु पुष्य ज्येष्ठा मृगशिरा श्रवण धनिष्ठा हस्त चित्रा स्वाति रेवती ये नक्षत्र और शुक्ल पक्ष उत्तरायण सूर्य और वृष कर्क कुम्भ धन मकर मीन ये लग्न चन्द्र बुध शुक्र ये बार शुभ योग सर्वाङ्ग श्रेष्ठ हैं जन्म मास और रिक्ता तिथि ये चूड़ा कर्म और भूषण धारण में वर्जित हैं ॥

अथ मुंडन मुहुर्त

हस्तत्रये हरिद्वन्दे पूर्वाश्च मृगपंचमे ।
मूले पौष्ण च नक्षत्रे बुधार्क गुरुशुक्रयोः ॥

टीका—हस्त से तीन ह० चि० स्वा०, श्र० ध० पू० तीनों मृगशिर आ० पुन० पुष्य श्ले० मू० रे० ये नक्षत्र और रवि, बुध, शुक्र गुरु ये वार शुभदायक हैं ॥

विद्यारम्भ का मुहुर्त

देवोत्थाने मीने चापे लग्ने वर्षे च पंचमे ।
विद्यारंभोत्रवर्ज्यश्च शष्टयनध्यायरिक्तकाः ॥
रिक्तायां च अमावस्यां प्रतिपं च विवर्जयेत् ।
बुधेन्दु वासरे मूर्खः शनिर्भौमौ मृतिपदः ॥

विद्यारम्भे गुरु श्रेष्ठो मध्यमौ भृगु भास्करौ।
बुधे सोमे च विद्याया शनिभोमौ परित्यजेत्॥

टीका—देवत्थान कहिए कार्तिक एकादशी से अषाढ़ शुक्ला द्वादशी तक और मीन धन यह लग्न पांचवे वर्ष में विद्या पढ़ना आरम्भ करना चाहिए। ६। अमावस्या १।८।१४।४ ये तिथि वर्जित हैं और बुध चन्द्रमा में विद्या आरम्भ करे तो मूर्ख हो गुरुवार श्रेष्ठ है सुक्र रवि मध्यन है, बुध सोम उप विद्या को करे हैं शनि भौम सर्वत्रत्याज्य हैं॥ ह० वि० स्वा० श्र० ध० तीनों पूर्वा श्र०म० आ० पु० मु० अश्ले० म० रे० यह नक्षत्र सुभ हैं॥

अथ यज्ञोपवीत मुहूर्त

पूर्वाषाढ़ाश्विनी हस्तत्रये च श्रवणत्रये।
ज्येष्ठा भगे मृगे पुष्ये रेवत्यां चोत्तरायणे॥
द्वितीयायां तृतीयायां पञ्चम्यां दशमीत्रये।
सूर्य सुक्रे ग्रहो चन्द्रे बधे पक्षे तथासिते॥
लग्ने बृषे धनुः सिंहे कन्यामिथुनयोरपि।
व्रतबन्धे शुभे योगे ब्रह्मक्षत्रविशोपते॥

टीका—पूर्वाषाढ़ अ० ह० चि० स्वा० श्र० ध० शत० ज्ये० पूर्वाफा० मृ० पुष्य रे० उत्तरायण सूर्य २।३।५। दस ग्यारह बारह तेरह तिथि रवि शु० गु० बुध चन्द्रमा यह बार शुक्ल पक्ष और वृष धन सिंह कन्या मिथुन ये लग्न और शुभ योग में जनेऊ ले॥ इनमें ब्राह्मण क्षत्री वैश्य तीन जाति को कहा है (बेद में) तीनों जाति के जुदे जुदे भेद कहे हैं॥

ब्राह्मण को गर्भ से पाँचवे वर्ष में या आठवे वर्ष में यज्ञोपवीत धारण करना चाहिए इसी प्रकार क्षत्रियों को छठे व ग्यारहवे वर्ष में और वश्य को आठवे बारहवे वर्ष में यज्ञोपवीत धारण करना चाहिए अगर किसी कारण से यह समय व्यतीत हो जाय तो सोलह वर्ष में ब्राह्मण को और २२ वर्ष में क्षत्री को २४ वर्ष में वश्य को यज्ञो पवीत लेना लिखा है इन वर्षों के बीत जाने पर गायत्री का अधिकारी नहीं रहता है।

कर्णछेदन मुहूर्त

श्रुत्रये दितिद्वन्द्वे मैत्रे हस्तत्रयोतरे ।
भगे विधि युगे मूले पूषाश्वे सौम्यवासरे ॥
द्विस्वभावे घटे लग्ने कर्णवेधः प्रशस्यते ।
चैत्रपौषा हरिस्वापं वर्ष च युगलं त्यजेत् ॥

टीका—श्र० ध० श० पुष्य पु पु ह० तीनों उत्तर पूर्वा फाल्गुणी रो० म० मू० रे० अ० यह नक्षत्र और सौम्यवार च० बु० गु० सु० यह बार शुभ हैं और मिथुन धन कन्या मीन कुम्भ यह लग्न शुभ हैं वैशाख फाल्गुण मार्गशिर माघ जेठ आषाढ़ यह महीने शुभ हैं और पहली तीसरी पांचवी सातवी यह वर्ष शुभ हैं चैत पौष असाढ़ शुक्ला एकादशी तक और सम वर्ष दूसरी चौथी छठवीं आठवीं त्याज्य है ॥ जन्म दिन से बारह या सोलहवे दिन अथवा ६ ७ ८ महीने विषम वर्ष अति शुभ है ॥

नीव धरने का मुहुर्त

पूर्वाषाढ़ाद्वितीद्वय विधियुग्मे करत्रयम् ।

उत्तराफाल्गुनी हस्तत्रये मूले च रेवती ॥
मैत्राश्विनी च लग्नानि सिंहकन्याघटोवृषः ।
मिथुनोनकरो ग्राह्यो वास्तुकर्मणि कोविदैः ॥
श्रावणश्चाथ वैशाखः कार्तिकफाल्गुनस्तथा ।
मासेषु मार्गशीर्षश्च वास्तुकर्मणि शस्यते ॥
वज्रव्याघातशूलानि व्यतीपातश्च गंडके ।
विष्कुम्भे परिघोवज्रौ वार भौमे च भास्करे ॥

टीका-पूर्वाषाढ़ पुनर्वसु पुष्य मगशिर श्रावण धनिष्ठा शतभिषा उत्तराफालगुणी हस्त चित्रा स्वात मूल रेवती अनुराधा अश्विनी यह सब नक्षत्र सिंह कन्या कुंभ वृष मिथुन मकर यह लगन चन्द्रमा बुध गुरु यह वार सावन वैशाख कार्तिक फाल्गुन मार्ग यह महीना शुभ हैं । वज्र व्याघाय शुकल व्यतिपात गंड विस्कुंभ परिघ यह योग और मङ्गल रवि यह वार त्याग घर की नींव धरिए ॥

वापी कूप देव प्रतिष्ठा मुहुर्त

आर्द्रा शतभिषाऽश्लेषा विशाखा भरणीद्वयम् ।
त्याज्या च द्वादशीरिक्ता षष्ठी चेबुच्चयोऽष्टमी ॥
प्रतिपच्चतिथिर्वारौ त्याज्यौ शनिकुजौ तथा ।
देवमूर्तिप्रतिष्ठायां स्थिरे लग्नोत्तरायणे ॥

टीका-—बावड़ी कुवां तालाव देवता इनकी प्रतिष्ठा देखना आर्द्री शतभिषा श्लेषा विशाखा भरणी कृत्तिका

ये नक्षत्र १ बारह ३०।८।६।४।६। चौदस ये तिथि और शनि मङ्गल ए बार त्याग दे सुभ हैं। ब्रष सिंह ब्रश्चिक कुम्भ ए लग्न सुभ हैं उत्तरायण सूर्य हों। रवि चन्द्रमा बुध गुरु शुक्र ये बार भी शुभ हैं।

गृह प्रवेश मुहूर्त

विशाखा भरणी हेयाऽश्लेषाख्या च मघा तथा।
अमावस्या च रिक्ता च वारे भौमे रवौ तथा॥
गृहप्रवेशो वैशाखे श्रावणे फाल्गुने तथा॥
आशिवनेच स्थिरेलग्नेग्राह्यः पचौबुधैः सितः॥

टीका—विशाखा भरणी अश्लेषा मघा ए नक्षत्र ३०। ४। ६ १४ ये तिथि भौम रवि ए बार गृह प्रवेश विषय वर्जित हैं॥ वैशाख और श्रावण फाल्गुण आश्विन ये मास ब्रष सिंह ब्रश्चिक कुंभ ये स्थिर लग्न और सुकल पक्ष चन्द्रमा सुक्र गुरु बुध शनि ये बार इनमें ग्रह प्रवेश उत्तम है॥

अथ क्षौरकर्म मुहुर्त

पुनर्वसुद्वयं क्षौरे श्रुतियुग्मं करत्रयम्।
रेवतीद्विनयं ज्येष्ठा मृगशीर्षं च गृह्यते॥
क्षौरे प्राणहरास्त्या मघा मैत्रं च रोहिणी।
उत्तरा कृत्तिका वारा भानुभौमशनैश्चराः॥
रिक्ताषष्ठयष्टमी हेया क्षौरे चन्द्रक्षयानिशि।
संध्यारिष्टिश्चण डांते भोजनांते च गोगृहे॥

टीका—पुनर्वसु पुष्य श्रवण धनिष्ठा हस्त चित्रा स्वाँत रेवती अश्विनी ज्येस्ठ मृगशिर ये नक्षत्र शुभ हैं । और बाकी प्राणहर्ता हैं, तिन्हें त्याग के मघा अनुराधा रोहिणी उत्तरा तीनों कृतिका और भौम शनि रवि ये वार ४ । ६ ८ चौदस ३० से तिथि रात्रि और संध्या के समय अरु गंडांत नाम मूल आदि नक्षत्र और भद्रा में भोजन करके और गौशाला में भी चोरकर्म न करे ।

अथ हल चलाने का मुहुर्त

अनुराधा चतुस्कं च मघादितियुगे करे ।
स्वातिश्रुतिविधिद्वन्दे रेवत्यामुत्तरात्रयम् ॥
गोस्त्री झषे हलंकार्यम् हेयाःसूर्यःशनिःकुजः ।
षष्ठी रिक्ता द्वादशी च द्वितीयाद्वय पूर्णा च ॥
त्रिभि स्त्रिभिस्त्रिभिपंच त्रिभः पंचत्रिभिद्वयम् ।
सूर्यभादिनभं यावद्धानिवृद्धिर्हले क्रमात् ॥

टीका—अनुराधा ज्येष्ठा मूल पूर्वाषाढ़ मघा पुनर्वसु पुष्य हस्त स्वाति श्रवण रोहिणी मृगशिर रेवती तीनों उत्तर ये नक्षत्र हल चलाने को अच्छे हैं वृष कन्या मीन ये लग्न लीजे ॥ और रवि शनि मङ्गल ए वार ६ । ४ । चौदस नौमी १२ । २ १५ । ३० ए त्याज्य हैं और सूर्य के नक्षत्र से उस दिन के नक्षत्र तक गिनियो सो इस क्रम से हल चक्र में समझ लीजे प्रथम तीन में हानि फिर दूसरे तीन में वृद्धि फिर हानि इस प्रकार से हल चक्रमें समझ लीजे ।

हल चक्र

अनु	ज्ये०	पु०	पू०	म०	पु०	पु०	ह०
स्वा.	श्र०	धो०	मू०	उ०३	रे०	नक्षत्र	सुभ
१	६	१२	लगन	उत्त	चं.०	व०	वृ०
मु०	वार	१।३	५	७।८	१० ११	१२	ति०
१	३	२	४	३	५	२	२
हा०	वृ०	हा	वृ०	हा०	वृ०	हा०	वृ०

हल ३—

३—— —३

५ ५

१

सब चीजों का महुर्त

तिथि वार च नक्षत्र नामाक्षरसमन्वितम् ।
द्वित्रिचतुर्भिगुणितं रससप्ताष्टभांजितम् ॥
आदि शून्ये भवेद्धानि मध्य शून्ये रिपोर्भयम् ।
अन्त्यशून्ये भवेन्मृत्युः सर्वाके विजयी भवेत् ॥

टीका—तिथि वार नक्षत्र और नाम के अक्षर सबको जोड़े फिर उनको दुगने करके ६ का भाग दें फिर तिग ना करके ७ का भाग दें फिर उनको चौगुना करके ८ का भाग दीजिए जो प्रथम जगह में शून्य आवे तो हानि हो। मध्य में शून्य हो तो शत्रु भय अन्त में शून्य हो तो मौत हो और जो तीनों में शेष अङ्क बचे तो विजय हो।

अथ स्वर विचार देखना

शशिप्रवाहे गमनादिस्त सूर्य प्रवाहेनहि किंचन्नापि

प्रष्टुर्जः स्याद्बहुमानभागे रिक्ते च भागेविफलंसमरतम् ।
दक्षिणे :दुःखदः शुक्रः सम्मुखे हन्ति लोचनम् ॥
वामे प्रष्ठे शुभो नित्यं रोधयेच्चास्तमः शुभम् ॥

टीका—जो चन्द्र स्वर कहिए बाँया चले तो यात्रा कीजे और सूर्य स्वर कहिए दाहिने चले तो अशुभ है और गणित कहिए बताने वाले का प्रच्छक कहिए पूछने वाले का एक स्वर चलता होय तो सब काम सिद्ध हों जो सुष्मणा कहिए एक का सीधा और दूसरे का उलटा चले तो सब काम निष्फल हो । दक्षिण से यात्रा में जो शुक्र दाहिने हो तो दुख हो, सन्मुख नेत्र पीड़ा करे और बाए या पीछे पड़े तो शुभ है ॥

पशु बेचने व खरीदने का मुहुर्त

पुष्य भाद्रपदायुग्मं मैत्रं श्रवणमश्विनः ।
हस्तोत्तरामृगस्वातिस्तथा श्लेषा च रेवती ॥
प्रशस्तानिभानि चैतानि क्रयविक्रयणे बुधैः ।
चन्द्रभार्गव जीवे च वारे शकुनमुत्तमम ॥

टीका—पुष्त पूर्वा भाद्रपद उत्तराभाद्रपद अनुराधा श्रवण अश्विनी हस्त उत्तरा तीनों मृगशिर स्वाँत श्लेषा रेवती यह नक्षत्र खरीदने बेचने में शुभ हैं और चन्द्रमा सुक्र गुरु यह वार और सुभ सकुन देखिएगा तब गाय भैंस घोडादि और पशु लीजिए और बेचिए ।

मन्त्र उपदेश करने को मुहुर्त

मन्त्रस्वीकरणं चैत्रे बहुदुःखफलप्रदम ।

वैशाखे रत्नलाभश्च ज्येस्ठे च मरणं ध्रुवम् ।
आषाढ़े बन्धुनाशः स्यत् श्रावणेतु शुभावहम ।
प्रजाहानिर्भाद्रपदे सर्वत्र सुखमाश्विने ॥

टीका–अब मंत्र दीक्षा लेने का शुभाशुभ कहते हैं । जो चैत मास में दीक्षा लेय यो बहुत दुख पावे वैशाख में लेवे तो रत्न लाभ जेठ में लेवे तो मौत हो, आषाढ़ में भाई का नाश श्रावण में लेवे तो शुभ हो भाद्रपद में लेवे तो सन्तान का नाश और आश्विन मास में मन्त्र दीक्षा लेवे तो सब सुख प्राप्त हो ॥

कार्तिके वृद्धिः स्यान्मार्गशीर्षे शुभप्रदः ।
पौषे तज्ज्ञानहानिःस्यान्माघे वेधाभिवर्धनम ॥
फाल्गुने सुखसौभाग्यं सर्वत्र परिकीर्तितम ।
दीक्षाकर्मफलं मासेश्वेतषु च शुभाशुभम ॥

टीका—कातिक मास में मन्त्र दीक्षा लो तो धन की वृद्धि हो मार्गशिर में लेवे तो शुभ हो पौष में ज्ञान हानि हो माघ में ज्ञान की वृद्धि फाल्गुण में मंत्र लेवे तो सौभाग्य और यश बढ़े ॥

गांव या नगर में रहने को मुहूर्त

ग्रामनाम्नो भवेद्दक्षं तदाद्याः सप्त मस्तके ।
प्रस्ठे सप्त हृदे सप्त पादयोः सप्त तारकाः ॥
मस्तके च धनी मान्यः प्रस्टे हानिश्च निर्धनः ।
हृदये सुखसम्प्राप्तिः पादे पर्यटन फलम ॥

टीका—जिस गाँव में या शहर में बसना चाहे उस गाँव के

गाम के अक्षर से नक्षत्र कर लीजे। जो नक्षत्र गाँव का पावे उसके पहिले प्रथम नक्षत्र पर्यन्त अट्ठाईस जानिए उसमें से गाव का नक्षत्र आदि लेके सात नक्षत्र गाँव के माथे पर दीजिए और ७ पीठ पर ७ दिल पर ७ पाँवों पर तब अपने नक्षत्र से देखिए जो माथे पर पडे तो वंश में धनी होय सम्मान पावे ॥ पीठ पर हानि और दिल पर सुख सम्पत्ति पाँवों में गिरे तो पर्यटन करावे ॥

अथ रोगी स्नान मुहूर्त

मघोत्तराब्रह्म भुजङ्ग रोष्णः पुनर्वसुस्वाति विहान भेषु। रिक्ताभिः हाने हिमागो च शुक्रे बुधेवार स्नान मरोगजन्ताः ॥

टीका मघा उत्तरा तीनों रोहिणी श्लेषा रेवती पुनर्वसु स्वात इनका त्याग करना रिक्ता तिथि ४। ६। ९ इनको त्याग चन्द्रमा शुक्र, बुध ये वार त्याग करे और नक्षत्रों में और वारों में रोगी स्नान करे ॥ बाद में ब्रह्मभोज करे यथा शक्ति।

यात्रा कामुहूर्त

उषः प्रशस्यते गर्गः शकुन च बृहस्पतिः
अंगिरामनउत्साहो विप्रवाक्यम् जनार्दनः

टीका—गर्ग मुनि का तो यह वाक्य है कि ५ घड़ी रात रहे यात्रा करे तो शुभ है ॥ और ब्रहस्पति जी का यह वाक्य है कि

सुगन देख के यात्रा करे । अङ्गिरा ऋषि का यह वाक्य है कि जब मन में आनन्द हो जभी यात्रा करे । और जनार्दन का यह वाक्य है कि ब्राह्मण की आज्ञा लेके यात्रा करे तो शुभ है ॥

प्रस्थान करना

यज्ञोपवीतकं शस्त्रं मधुं च स्थापयेत्फलम् ।
विप्रादि के तथा सर्वे स्वर्णधान्यवस्त्रादिकम् ॥

टीका--ब्राह्मण को तो जनेऊ धरना चाहिए । क्षत्री को शस्त्र बनिये को मीठा शूद्र को फल और जातियों को अन्न या सौना प्रस्थान उसे कहते हैं कि यात्रा करने के दिन नहीं जाना हो तो पहिले दिन कुछ चीज रखनी चाहिए ॥

यात्रा के समय शकुन देखना

इन्धनं च तथांगारं गुडं सर्पिस्तथाऽशुभम् ।
अभ्यक्तो मलिनाऽन्ध तथा नग्नश्च ब्राह्मण ॥

टीका—यात्रा में घर से निकलते ही लकड़ी अग्नि गुड घी तेल नग्न सिर फकी होजड़ा कोक नग्न ब्राह्मण अशुभ है ॥

अच्छे शकुन देखना

श्रुति विप्रनिनादश्च नद्यावर्तः सकौतुकः ।
सुभगा स्त्री शुभः शब्दो गम्भीरः सुमनोहरः ॥

टीका—वेद पढ़ते ब्राह्मण ' गाना गाती नाचती वेश्या ।

गौ हाथी धीवर भरा हुआ जल का घड़ा, या मशक भरी हुई। मछली मरा हुआ। बाजा; घंटा बजता हुआ, फूल और फूल हार, माली, मोतियों की या फूलों की माला पहरे कन्या। स्त्री सुहागन गोद भरी हुई। यह शकुन शुभदायक है ॥

दिशाशूल देखना

शनौ चन्द्रे त्यजेत्पूर्वां दक्षिणां च दिशां गुरौ।
सूर्ये शुक्रे पश्चिमाञ्च बुधे भौमे तथोत्तरे ॥

टीका-शनिश्चर को और सोमवार को पूर्व में दिशाशूल जानो, बृहस्पति को दक्षिण में। रवि और शुक्र को पश्चिम में। बुध और मङ्गल को उत्तर में दिशाशूल जानिए। यात्रा समय पर त्यागना चाहिए ॥

अनुराधा त्रय हस्तो मृगाश्वी च दितिद्वयम्।
यात्रायां रेवती शस्ता निद्यार्द्राः भरणीद्वयम् ॥
मघोत्तरा विशाखा च सर्पश्चान्ये च मध्यमाः।
षष्ठी रिक्ता द्वादशी च सर्वाणि च विवर्जयेत् ॥
लग्नं कन्या मन्मथश्च मकरश्च तुलाधरः।
यात्रा चन्द्रबले कार्या शकुनं च विचारयेत् ॥

टीका-अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, हस्थ, मृगशिर आश्विन, पुष्य पुनर्वसु रेवती ये नक्षत्र शुभ हैं। आर्द्रा भरणी कृतिका, मघा उत्तरा तीनों विशाखा श्लेषा यह अशुभ हैं। शेष नक्षत्र मध्यम हैं। छट चौथ नौमी द्वादशी चौदस अमावस्या पूरनमासी यह तिथि

और व्यतीत योग वर्जित हैं। कन्या, मिथुन, तुला, मकर ये लग्न शुभ हैं। चन्द्रबल और शकुन विचार कर यात्रा कीजे ॥

नित्य दशा देखनी

तिथि वारं च नक्षत्रं नाम्नाक्षरसमन्वितम् ।
नवभिश्च हरेद्भागं शेषं दिनदशायोच्यते ॥
रविश्चन्द्रो भौमराहु गुरुमन्दज्ञ केतवो ।
क्रमेण तादशा ज्ञेया फल पूर्वे क्रमेवहि ॥

टीका-तिथि वार नक्षत्र अपने नाम के अक्षर सब इकट्ठे करके ९ से भाग दे। १ बचे तो सूर्य की दशा जानना, २ बचे तो चंद्रमा की, ३ भौम की। ४ रहें तो राहु की। ५ बचे तो गुरु की। ६ बचे तो शनि की। ७ बचे तो बुध की। ८ बचे तो केतु की। शून्य बचे तो सुक्र की। फल इसका ऐसा जानो जैसा वर्ष मुंथा दशा का है।

जन्म तारा चतुर्गुण्या तिथि वारसमन्वितम् ।
अष्टभिस्तु हरेद्भागं शेषांके च दशा स्मृता ॥
रविचन्द्रकुजज्ञाश्च गुरु शुक्र शनिः क्रमात् ।
शून्यशेषे यदा जाता राहुरपि दशा स्मृता ॥

टीका — जन्म नक्षत्र को दिन नक्षत्र तक गिने फिर चौगुणा करे तिथि वार मिलावे आठ का भाग दे जो १ बचे तो रवि, २ बचे तो चन्द्रमा, ३ बचे तो भौम, ४ बचे तो बुध, ५ बचे तो गुरु ६ बचे तो शुक्र, ७ बचे तो शनि पूरा भाग लगे तो राहु और केतु की दशा जाननी चाहिए।

चौखट का मुहुर्त

सूर्य र्चाद्युगभे शिरस्यथ फलं लक्ष्मीस्ततः कोण भैः ।
नागैरुद्वसनंततो गजमितैः शाखासु सौख्यं भवेत् ॥
देहल्यां गुणभैः मृतगृहपतेर्मध्य स्थतैः वेदभैः ।
सौख्यं चक्रमिदं विलोक्यमुधेयाद्वारे विधेयं शुभम् ॥

टीका–सूर्य के नक्षत्र से ४ तो सिर के हैं उनमें चौ ट लगावे तो लक्ष्मी की प्राप्ति हो और तिससे अगले ८ कोण के हैं ये ऊजड़ करे फिर अगले ९ शाखाओं के सुखकारी हैं अगले ३ देहली के मृत्युकारक हैं। अगले ४ मध्य के सौख्यकारक हैं ॥

घर का दरवाजा लगाने का मुहुर्त

भवेत्पुषणी मैत्रपुष्ये च शक्रा–करे हस्त चित्रा नखे चादिते च । गुरौ शुक्र चन्द्राऽकि सौम्येषु वारे यिथा नन्द पूर्णा नया चार शाखा ॥

टीका—रे० अनु० पुष्य ज्ये० ह० चि० म्रा० पुन० यह नक्षत्र गु० शु० चन्द्र० शनि ए वार हों। पड़वा छठ एकादशी तीज तेरस आठे पंचमी दसमी ये तिथि हों। २ । ३ । ५ । ८ । ६ । ९ १२ ये लग्न दरवाजा लगाने में शुभ हैं ॥

कुवा खोदने का मुहूर्त

हस्तस्त्रिस्त्र वासवं वारूणं च शैवं पित्र्यं त्रीणि चैवा-

त्तराणि प्रजापत्यं चापि नक्षत्रमाहुः कूपारम्भे श्रेष्ठ-
माद्या मुनीन्द्राः ॥

टीका—हा चि० स्वा० ध० श० आ० म० उ० तीनों यह नक्षत्र और चं० बुध गु० सुक्र ये बार २, ३, ५, ७, १०, १३, १५ इन तिथियों में कुबा बनाना व खोदना शुभ है ॥

पुनः द्वितीय क्रमः देखना

कूपचक्रं प्रवक्ष्यामि युबुक्तं ब्रह्मयामले ।
रोहिण्यादि लिखेच्चक्रं यावन्तिष्ठति चन्द्रमाः ॥
एकमध्ये द्वयं पूर्वे तृतीयेऽग्निमेव च ।
याम्ये वाणसंगयश्च नैऋतेषठसव च ॥
पश्चिमे युग्मवायुश्च उत्तरे त्रथईरितः ।
ईशाने त्रयो दातव्या वृद्धं रक्षादनुक्रमात् ॥
मध्येशीघ्र जल स्वादु पूर्वे भूमौ च खण्डितम् ।
आग्नेयाँ च जल प्राक्तं याम्येच निर्जल भवत् ॥
नऋत्यां च जल प्रोक्तं पश्चिमे क्षारमेव च ।
वायव्ये चैव पाषण उत्तरेच समुद्रभवत् ॥
ईशाने मनसा शुद्धिः वापी कूपस्य लक्षणम् ।
ध्रुवे करजल मैत्रे वासव पितृभेषु च ॥
रविमदन द्वितीया पंचमी सप्तमीसु च ।

घटवृष हरिलग्ने जीव शुक्राकी वारे।
मुनिवर कथितोयं कूपकारंभ सिद्धो ॥

३ ईशान सुन्दर जल	२ पूर्व में जल नही आवे	३ अग्नि जल हो
३ उत्तम सुन्दर जल	१ मध्य मोटा शीघ्रजल	४ दक्षिण में जल न आवे
२ वायव्य पत्थर निकले	२ पश्चिम खारी जल	६ नैऋत जल

टीका—रोहिणी से आदि लेकर २७ नक्षत्र तक इस प्रकार गिनकर धरे कि १ मध्य में, २ पूर्व में, ३ अग्नि में ४ दक्षिण में ६ नैऋत में, २ पश्चिम में. २ वायव्य में, ३ उत्तर में ३ ईशान में। अब रोहिणी से दिन नक्षत्र तक जो संख्या आवे उसके अनुसार चक्र देखकर फल कहे।

बाग लगाने को प्रतिष्ठा को मुहुर्त

गोसिंहालिग तेषु चान्तगते भानौ बुधादित्रये।
चंद्रार्के चशुभा बुधे श्रमी दयाराममतिष्टोकार्या॥

टीका—वृष सिंह वृश्चिक इन राशि के सूर्य उत्तरायण। बुध गुरु शुक्र शनि चन्द्रमा यह वार शुभ हैं। श्लेषा भरणी कृतिका सतभिषा विशाखा यह नक्षत्र अमावस्या चौथ चौदस नौमी आठें छट द्वादशी यह तिथि अशुभ हैं।

सगाई में लड़की के सिर में डोरी गेरना

विश्वस्वाति वैष्णव पूर्वात्रय मैत्रे वस्त्राग्नेयोर्वाकर

पीड़ाविति‍त्रचो, । वस्त्रालङ्कारादि समेतैः फलपुष्पैः सन्थोष्पादौस्यादनुकन्यावरण सत् ।

टीका—उत्तराषाढ़ स्वाति श्रवण तीनों पूर्वा अनुराधा धनिष्ठा कृतिका विवाह नक्षत्र इतने नक्षत्रों में च०. गु० शु० बुध इन वारों में कन्या के सिर में डोरे गेरे और अच्छे वस्त्र और चीज पहरावे ॥

अथ कष्ट योग देखनो

शतभिषाकरआद्रा स्वातिमूलत्रि पूर्वा भरणी सहितपुष्यो ॥ भौममदार्कवाराः प्रथम दिन चतुर्थी द्वादशी षष्टोभूता । हरिहविधि रक्ष रोगिणौं काल मृत्युः ॥

टीका—शतभिषा हस्त आद्रा स्वाति मूल पूर्वा तीनों भरणी पुष्य के नक्षत्र हो और भौम शनिश्चर रवि ये वार और १, ४ १२, ६, ३०, ये तिथि ऐसे योग में कोई बीमार हो तो विष्णु आदि भी रक्षा करें तो भी नहीं बचे ।

अथ ज्वालामुखी योग

पड़वा मूल पंचमी भरणी आठे कृतिका नवमी रोहणी दशमी श्लेषा ज्वालामुखी ॥
जन्मै तो जावे नही बसै तो ऊजड़ होय ।
कामनी पहरे चुड़ियाँ निश्चय विधवा होय ॥

कुवें नीर जंके नहीं, खाट पड़ो न उठन्त।
जोतिषी जो जाने नहीं, ज्योतिष कहता ग्रंथ॥

टीका—पड़वा के दिन मूल पंचमी के दिन भरणी, आठें को कृतिका नोमी को रोहिणी दशमी को श्लेषा यह नक्षत्र अग्नि मुखी हैं। जो इनमें जन्म ले तो जीवे नहीं और घर में बसे तो ऊजड़ होय, और स्त्री चूड़ी पहने तो विधवा हो, इनमें कुवाँ नहीं झांके और जो बीमार होकर खाट में पड़े तो उठे नहीं यह बात ज्योतिष का ग्रंथ कहता है॥

सूतक निर्णय देखना

महिष्योऽजास्तथा गावो ब्राह्मण्यादिस्त्रियस्तथा।
दशरात्रेण शुध्यन्ति भूमिस्थ च नवो दकम्॥१॥

टीका—भैंस बकरी गाय दूध के पशु और ब्राह्मणों आदि स्त्रियाँ बच्चा होने पर और भूमि मेघ का जल य दश रात्री में शुद्ध होते हैं॥

दशाहाच्छुध्यते माता अवगाह्य पिता शुचिः॥ २

टीका—माता तो दस दिन में शुद्ध होती है और पिता स्नान करने से तुरन्त ही शुद्ध हो जाता है॥

मृतक पातक निर्णय देखना

यदा तदा भवेदाहः सूतक मृमिपूर्वकम्:

टीका—निर्णय सिन्धु में लिखा है कि दाह तो किसी ही दिन हो परन्तु पातक मृत्यु के ही दिन से मानना चाहिए और व्याह भी उसी तिथि में होना चाहिए जिसमें मौत हो॥

मरने में पातक देखना

सर्वे च दशाहं स्यात सूतकीना च संत्यजेत ।
चतुर्थे दशरात्रं स्यात षट रोशिश्च पंचमे ॥
षष्ठे तु चतुरो ज्ञेया सप्तमे च दिनत्रयम् ॥
अष्टमे दिनमेकन्तु नवमेकन्तु नवमे प्रहरद्वतम् ।
दशमे स्नानमात्रेणँ एवम गोत्र प्रसूतकम् ॥

टीका—मरने में चारों वर्णों को दस दिन का सूतक होता है इस वास्ते सूतकियों का त्याग करे। परन्तु यह भी प्रमाण है कि जो चौथी पोढ़ी हो तो दस दिन तक सूतक माने और पाँचवीमें ६ दिन का, छटी में चार दिन का, सातवीं में ३ दिन का, आठवीं में एक दिन का, नवीं में २ पहर तक का, दशवी स्नान करने ही से शुद्ध हो जाते हैं। यह गोत्र के ऊपर सूतक कहो है ॥

त्रिपुस्कर योग वर्जित

यमलादित्रिपुष्कर मूलमघाधनिष्ठासवपंचक पंचयुता ।
भरणीन[illegible] जे प्र[illegible]नुयजात कुटुम्बस्वय त्रिया ॥

टीका—यमलादि त्रिपुष्कर यह लोग मूल मघा धनिष्ठा श० पूर्वा भा० उ० भा० रे० भ० इनमें प्रेत की क्रिया नहीं करे और जो करे तो कुटुम्ब वालों में या अपने घर में और भी दुख प्राप्त हो।

त्रिपुस्कर योग देखना

भद्रातिथौ रविजधूननैयार्कवारे द्वीशार्यमाज चरणा

दिथि वन्हि विश्वे । त्रैपुस्करो भवतिमृत्यु विनाशवृद्धा त्रैगुण्यदोद्विगुण कृद्धसुतत्वचान्द्रः ॥

टीका-भद्रा तिथियों में से कोई सी तिथि हो और शनि या मङ्गल या रविवार इन वारों में से कोई वार होय और विशाखा उत्तरा फाल्गुनी पूर्वा भाद्रपद ऐसे योग को त्रिपुस्कार कहते हैं ॥ इसमें मृत्यु हानि होवे तो तीन होय और वृद्धि जन्म भी तीन ही होंय और ये ही तिथि और ये ही वार और ध० चि० मृ० यह नक्षत्र होय तो उसको द्विस्कर कहते हैं और इसमें हानि वृद्धि जन्म दो होते हैं ॥

नीव धरने में शेषनाग विचार

सिंहे कन्या तुलायां भुजङ्ग पतिमुख शम्भु कोणेग्नि खाते, वायव्ये शेषवक्रे अलिधन मकरे ईश खात वदन्ति । कुम्भे मीनेषमेषे नैऋति दिशि मुखं खात वायव्य कोणे उद्ध्र मिथुने कुलीरे अग्निदिशि मुख राक्षसी कोणखातम ॥

टीका—सिंह कन्या तुला के सूर्य में शेषनाग का मुख ईशान दिशा में रहता है । अग्नि दिशा में खोदे और चिने वृश्चिकः धन मकर के सूर्य में शेष का मुख वायव्य में रहता है ईशान में चिने कुम्भ मीन मेष के सूर्य में शेष का मुख नैऋत में होता है वायव्य में चिने वृष मिथुन कर्क के सूर्य में शेष का मुख दिशा में रहता है इसलिए नैऋत से चिने ॥

शेषनाग फल देखना

शिरः खनेत मातृपित्रौश्चहन्ता खनेत पृष्ठं भयरोग

पीड़ा । पुच्छं खनेच्च त्रिषु गोत्रहानिः स्त्रीपुत्र लाभो धनंधामकुच्चौ ॥

टीका-यदि शेषनाग के सिर पर खुदवावे तो माता पिता की हानि होय और पीठ पर खुदवावे तो भय रोग पीड़ा होय और पूंछ पर खुदवावे तो तीन गोत्र की हानि होवे और जो खाली जगह पर खुदवावे तो स्त्री पुत्र धन इत्यादि का लाभ होवे ॥

प्रथ्वी का सोना देखना

प्रद्योतनात् पंचनखांकसूर्य्यो नवेन्दुः षड्विंष मितानि भानि । सुप्त मही नैव गृहं विधेयं तडागवापी खननं नशस्तम् ॥

टीका-सूर्य के नक्षत्र से ५ वें २० वें ९ । १२ । १९ २६ इन नक्षत्रों पर प्रथ्वी सोती है ॥ सोती हुई पर तालाब बावड़ी कुवाँ हवेली इत्यादि के निमित्त खुदवावे नहीं ॥

तिथि निर्णय देखना

यां तिथिं समनुप्राप्य उदयं याति भास्करः ।
सा तिथिः सकला ज्ञेया दानाध्ययनकर्मसु ॥

टीका-जिस तिथि में सूर्य उदय होता है । वह तिथि सारे दिन मानी जाती है दान के करने में और विद्या के पढ़ने में ॥

व्रत निर्णय देखना

शिववा शिवदुर्गा च दीपिका चाहुताशनीम् ।

जन्माष्टमी चन्द्रषष्ठी प्रथमे दले ॥ १ ॥

टीका—शिवजी का व्रत और दुर्गा का व्रत दिवाली और होली जन्माष्टमी चन्दषष्ठी सत्यनारायण आदि व्रत तिथि के पहले भाग में करने चाहिए ॥

एकादशी यदा नष्टा परतो द्वादशी भवेत।
उपोष्या दशमी विद्धा मनिरुद्दालकोब्रवीत्॥

टीका-यदि एकादशी की हानि हो तो द्वादशी छोड़ के दसमी वेधा एकादशी में व्रत करले।

नवमी पलमेकन्तु दशम्यांश्च तिथिक्षयः।
तदा एकादशी त्याज्या द्वादश्यां व्रतमाचरेत् ॥

टीका—नवमी एक पल हो दशमी का क्षय नाम बिल्कुल नहीं हो तो उस एकादशी को छोड़कर द्वादशी में व्रत करना चाहिए ॥

हरिवासर देखना

आभाका सित पक्षे तु मैत्र श्रावण रेवती।
संगमे नेव भोक्तव्य द्वादशी द्वादशाहरेत ॥

टीका—जो एकादशी व्रत किया होवे और अगले दिन द्वादशी को अनुराधा नक्षत्र हो और महीना आषाढ़ का होवे और भाद्रपद में द्वादशी को श्रवण होवे और कार्तिक में द्वादशी को रेवती और चाँदनी रात होय। जो इनमें भोजन करे तो बारह वर्ष के किये हुए एकादी व्रत के फल को नष्ट कर देती है ॥

मैत्रस्य प्रथमे पादे श्रवणे च द्वितीयके।

येवर्णा अंतयादेषु भोजनं ज विवर्जयेत ॥

टीका। अनुराधा के प्रथम चरण में श्रवण के दूसरे में रेवती के चौथे चरण में भोजन नहीं करना ॥

सर्वप्रतिष्ठा मुहूर्त देखना।

जलाशयापामसुरप्रतिष्ठा सौम्यायने जीवशशांक शुक्रे। दृश्ये मृदुक्षिप्रजर ध्रुवे स्यात्पक्षे सिते स्वक्षे तिथिक्षणे वा ॥

टीका -कुवां आदि प्रतिष्टा में उत्तरायण सूर्य हो और गुरु चन्द्र शुक्र उदय हों और मू० रे० चि० अनु० ह० अश्वि० पुष्प अभि० स्वात पुन० श्र० ध० श० रो० तीना उत्तरा और शुक्ल पक्ष और जिस देवता की प्रतिष्ठा कराए उसी नक्षत्र तिथि मुहूर्त में लेना इस विधि से सब देवों की प्रतिष्ठा कराए उसी नक्षत्र तिथि मुहूर्त में लेना इस विधि से सब देवों की प्रतिष्टा श्रेष्ठ है।

रिक्तारवर्जे दिवसेशः शस्ताः शशांकपापास्त्रिभवांग संस्थैः। व्यस्थाष्टगैःसद्भिश्चरैर्मृगेन्द्र सूर्योघटे कौयुवतौ च विष्णुः ॥

टीका -रिक्ता तिथि चौथ नौमी चौदस और मङ्गलवार को त्याग कर देना। और लग्न शुद्धि चन्द्रमा सूर्य भौम ज्ञानी राहु केतु ये ३। ६। ११ स्थान में होवे और शुभ ग्रह बुध गुरु शुक्र १२। ८ छोड़कर २। ४। ५। ७। ९। १० में होवे तो प्रतिष्ठा करनी। और सिंह लग्न में सूर्य को ॥ कुम्भ में ब्रह्मा की कन्या में विष्णु की स्थापना करनी चाहिए ॥

शिवो नृयुग्मे द्वितनो च देव्यः क्षुद्राश्चरे सर्व इमे

स्थिरत्ते । पुष्ये ग्रहा विघ्नपयच सर्पभूतदयांत्ये श्रवणे जिनश्व ॥

टीका— मिथुन लग्न में शिवजी की स्थापना और २, ६, ११, १२ इन लग्नों में दुर्गा की और १, ५, ८, ११ इन लग्नों में क्षुद्रा देवी चौसठ योगनी की और पुष्य में नवग्रहों की। सूर्य की हस्त में और गणेशजी और यक्ष और शेष और भूतादि देवतों की रेवती में और श्रवण में जिन देवतों की स्थापना श्रेष्ठ है ॥

बिटौरे का मुहूर्त देखना

सूर्य त्वाद्रमभैरधस्थलगतौ हाकारसैः संयुतः ।
शीर्षे युग्ममिते शवस्य दहनं मध्ये युमे सर्पभीः ॥
प्रांगाशादसुवेदभैश्च सुहृदः स्यात्संगमो रोगभीः ।
श्वाथादः करण सुखवगादित काष्टादिसंस्थापने ॥

टीका—सूर्य के नक्षत्र से अगले ६ नक्षत्रों में बिटौरा रक्खे तो बहुत अच्छे पाक पकाये जाया करें और उनसे अगले दो नक्षत्रों में धरे तो उसके उपलों से मुर्दा फुके उनसे अगले ४ नक्षत्रों में सर्प भय रहे, उनसे अगले ४ नक्षत्रों में मित्र भोजन पके उनसे अगले ८ में रोगी के लिए काढ़े पकें उनसे अगले ४ नक्षत्रों में शुभदायक होता है ॥

गोद लेने का मुहूर्त

हस्तादि पंचक भिषग्वसु पुष्य भेषु सूर्यक्षमाज गुरु भार्गव वासरेषु । रिक्ता विवाजत तिथिस्वलि कुम्भ

लग्ने सिंहे वृषे भवति दत्त परिग्रहायम ॥

टीका-हस्त से पाँच ह० चि० स्वा० विशाखा अनुराधा अश्विनी धनिष्ठा पुष्य ये नक्षत्र सू० म० गु० शु० ये वार ४, ९, १४ छोड़ के बाकी तिथियों में वृश्चिक कुंभ सिंह वृष इन लग्नों में पुत्र गोद लेना शुभ ॥

पशु ब्याने में वर्जित मास

माघे बुधे च महिषी श्रावणे वड़वा दिवा ।
सिंहे गावः प्रसूयन्ते स्वामिनो मृत्युदायका ॥

टीका—माघ के महीने में बुध के दिन भैंस श्रावण में घोड़ी दिन में और सिंह के सूर्य में गौ ब्याये तो स्वामी को मौतदायक होता है तत्काल उसको दान करके शाँति करे ॥

वधु प्रवेश महुरत देखना

ध्रुवः क्षिप्र मृदुः श्रोत्र वसु मूलमघानिले ।
वधुः प्रवेशो सन्नेष्टो रिक्तारार्के बुधेपरे ॥

टीका—उत्तरा ३ रो० ह० अश्विनी पुष्य अभि० मृ० रे० चित्रा अनु० श्र० ध० मू० मघा स्वा० में ३, ९, १४ में तिथि मंगल रवि बुधवार को छोड़कर नई वधू को घर में ले जाना चाहिए ॥

बाग लगाने का महुरत

लतागुल्मवृक्षारोपा सस्तपुष्पाश्विनी ध्रुवैः ।
विशाखा मृदु मूला हि वारुणेश्च प्रशस्यते ॥

गुरौ केन्द्रे विपापेक्षे विधौ वारि विधूदये ।
शुभ युक्ते क्षिते वन्धौ सद्वारे शुभोदये ॥

टोका—पेड बेल गुच्छे इनके लगाने से हस्त, पुष्य, अश्विनी तीनो उत्तरा, रोहिणी बिशाखा मृगशिरा रेवती चित्रा अनुराधा मूल अश्लेषा शतभिषा ये नक्षत्र और वृष कर्क कन्या तुला धन ये लग्न केन्द्र १ । ४ । ७ । १० इन स्थानों में गुरु और लग्न में या दसवे चन्द्रमा २ । ५ । १० । १३ ये तिथि चन्द्र बुध गुरु शुक्र ये वार शुभ हैं केन्द्र में पाप ग्रह न हों और एक स्थान शुभ ग्रहों से युक्त हो इनमें बाग लगावे । जब पेड़ बोवे तब ये मंत्र पढ़े—

वसुधेति च शीतेति पुन्य देति धरेति च ।
नमस्ते शुभगे देवी द्रुमोय वृद्धतामिति ॥

मुख्य द्वार का मुहूर्त

कर्के कुम्भे च सिंह च मकरे च दिवाकरः ।
पूर्वे वा पश्चिमे वापि द्वारं कुर्याच्च वेश्मानाम् ॥
मेषे वृषे वृश्चिके च तुले चापि यदा रविः ।
गृहद्वारं तदा कुर्यादुत्तरं वापि दक्षिणाम् ॥
धनुर्मिथुन कन्यायां मीने च यदि भानुमान् ।
न कर्तव्यं तदा गेहं कृते दुःखमवाप्नुयात् ॥

टीका—कर्क कुंभ सिंह मकर के सूर्य में घर बनावे तो घर का दरवाजा पूर्व अथवा पश्चिम की ओर करना चाहिए ॥ मेष, वृष, वृश्चिक और तुला के सूर्य में उत्तर अथवा दक्षिण को घर का द्वार शुभ है । धन मिथुन कन्या और मीन के सूर्य हों तो घरका बनाना अशुभ और दुःखप्रद है ॥

साद पहरने मुहूर्त	पुनर्वसु पुष्य म०र० पूर्वा भा०,उत्तरा भा० पूर्वाषा० उत्तरा षा० श्र०मू०ह० ये नक्षत्र गु०भौ०र० ये वार २, ३, ५, ७ ८, १० ११ १३ ये तिथि १, २, ३ मास में ६, २, ५ ८ ग्यारह यह लग्न होने चाहिए सामांत कर्म करना चाहिए।
दुकान करने का मुहूर्त	अनु० उ० तीनों रो०अस्व० पुष्य पू० शा० ह० अ० ये नक्षत्र २,३,५,७,८,दसमी एकादशी तेरस ये तिथि गु० शु० बु० चं० ये वार १-५-८ य लगन सुभ हैं।
राजा के देखने का मुहूर्त	उत्तरा तीनों श्र०श०ध०मू० पु० अनु०रो० रे० पुष्य अ० ह० छि० सुभ तिथि सुभ वार हो॥
नोकरीकरने का मुहूर्त	ह, चि, अनु, रे, अ० मृ० पुष्य ये नक्षत्र बु० गु० शु० ये वार सुभ तिथि यो न राशि गसा बर्म किलावे।
गाव बनाने का मुहूर्त	पूर्वा तीनों अस्ले म,अ,पु,श, मू ये नक्षत्र सुभ वार १,१ ५,७,८,१०,११- १३ ये नक्षत्र सुभ है।
दाव चलाने का मुहूर्त	पूर्वा तीनों उत्तरा तीनों भ०स्ले०ज्ये०आद्रा०ध०श्र० कृ० म० मू० अनु०ये नक्षत्र सुभ तिथि सुभ वार है॥
बीज बोने का मुहूर्त	ह०।च०स्वा०म० पुष्य उत्तरा तीनों रो००मृ०ध०रे०श० मू० अनु ये नक्षत्र सुभ तिथि सुभवार है॥
बच्चा का बाहरनिकालने का मुहूर्त	ज्ये०अनु०पु० पुष्य रा० स्ले० म० ह० रे० उत्तराषाढ० श्र० ध० में नक्षत्र र० च० गु० सु० से बार ५, ६, ७, १० य लगन २-३-५-७-८-१०-११ तिथि सुभ है॥
युद्ध करने का मुहूर्त	आर्द्रा भ० पूर्वा तीनों मूल असले. म. ये नक्षत्र २-३-५-८-१ १०-१३ तिथि बुध चंद्र गुरु ये वार सुभ लगन हैं॥
पुल बाँधने का मुहूर्त	उत्तरा तीनों रो. स्वा.त म० ये नक्षत्र मं०र०गु. ये वार सुभ लगन १-३-५-७-८-१०-१२-१५ सुभ तिथि हैं।

॥ इति मुहूर्त प्रकरण ॥

ओ३म्

प्रश्न प्रकरण भाषा टीका

—चतुर्थ भाग—

जो कोई आके पूछे कि मेरा प्रश्न है तो उससे पन्डित यों कहे कि तुम अपना हाथ अपने शरीर पर धरो जहाँ वो अपना हाथ धरे वहाँ का फल इस प्रकार कहे :

श्लोक

शिरो मुखं कर्ण नेत्रं स्पृष्टवाट् प्रच्छति यो नरः ।
सुवर्णधनधान्यानां लाभस्तत्र न संशयः ॥
स्कंधग्रीवोकठहस्तस्पर्शे लाभोहि दुःस्वतः ।
कुचोवाभिममालंभे भक्षपानादि सिध्यति ॥
जंघालिङ्गकटीस्पर्शे कन्यालाभसमुद्भवः ।
जानुगुल्फपदस्पर्शे महाक्लेशः प्रजायते ॥
केशस्पर्शे भवेन्मृत्युः कार्यसिद्धिर्न जायते ।
काष्ठकं कमठस्पर्शे ग्रहपीडा भयं भवेत् ॥
सुगन्धमद्यपानादिस्पर्शे सिद्धिः प्रजायते ।

शून्यालये श्मशाने च शुष्ककाष्टक्षते तरौ ॥
गुल्फभस्माधनस्थाने प्रश्नक्लेशः प्रजायते ।
देवस्थाननदातारे दिव्यस्थाने शुभ भवेत् ॥
शुभं दृष्टि ऋतं सिद्धिर्विदचु च न जायते ॥

टीका माथे मुख कान नेत्र पर धरे तो लाभ हो। कन्या गभा हाथ कल्ले छूवे तो कष्ट से लाभ हो। कोख नाभि में अच्छा भोजन पावे। जाँघ लिंग कमर पर कन्या या पुत्र का लाभ हो। घोंटा कौना पर क्लेश हो या मृत्यु हो। फल फूलों की सिद्धि हो। प्रण काष्ट अग्नि इनमें कष्ट हो। सुगन्ध या मद्य पान में सिद्धि हो। सूने घर में शमशान में भस्म पर बैठ के पूछे जो क्लेश हो। देवता के मकान पर या नदी पर या गौशाला म या सन्मुख होके पूछे वो शुभदायक होता है ॥

कन्या होगी या पुत्र ये देखना

नामाक्षराणि त्रिगुणी कृतानि तुरङ्गदेशे तिथि मिश्रितानि। अष्टौ च भागो लभते च शेष समे च कन्या विषमे कुमारः ॥

टीका - गर्भिणी के नाम के अक्षर तिगुने करे जिसमें घोड़ा के अक्षर देश के अक्षर मिलावे वर्तमान तिथि मिलावे ८ आठ का भाग दे शेष अङ्क सम नाम २, ४, ६ इस प्रकार बचे तो कन्या विषम नाम १, ३, ५ इस प्रकार बचे तो पुत्र हो ॥

तुत्प्रश्नलग्ने रविजीव भौमास्तृतोथ सप्ते नव पंचमे वा। गर्भे पुमान्वै ऋषिभिः प्रणीतश्चान्यैर्ग्रहैःस्त्री विबुधैः प्रणीता ॥

टीका—जो कोई पूछे मेरे पुत्र होगा या कन्या उस वक्त लग्न देखके धरे, लगन से तीसरे ७ ६ ५ जो इनमें सूर्य बु० मं० ये ग्रह हो तो पुत्र हो इन स्थान में और ग्रह हों तो पुत्री जानो ॥

नखद्वयं गर्भिणि नामधेयम् तिथिप्रयुक्तम् शर संयुतं च। एकेन हीनं नव भागधेयम् समे च कन्या विषमे कुमारः ॥

टीका—नख नाम बीच में गर्भवती स्त्री के नाम के अक्षर और उस दिन की तिथि जोड़ के। पाँच और मिलावे एक घटा के नव का भाग दे १, ३, ५, ७ बचे तो पुत्र हो और २। ४ ८ बचे तो कन्या हो ॥

मुट्टी प्रश्न देखना

मेषे रक्तं वृषे पीतं मिथुने नीलवर्णकम्।
कर्के च पाण्डुराज्ञेयःसिंहे धूम्र प्रकीर्तितम ॥
कन्यायां नील वर्णस्यात् श्वेतवर्ण तथा तुले।
वृश्चिके ताम्रमिश्रं च चापे पीतं विनिर्दिशेत्॥
नक्रे कुम्भे कृष्णवर्णम् मीने पीतं वदेत्सुधीः।

टीका—जो कोई कहे मेरी मुट्ठी में क्या है मेष लग्न हो तो लाल रङ्ग को वस्तु कहे। वृष में पीली मिथुन में नीला कर्क में पीला सिंह में धुएँ का सा रङ्ग कहै कन्या में नीला ॥ तुला में

सफेद वृश्चिक में लाल धन में पीली मकर में काला कुम्भ में भी काला मीन में पीला रङ्ग कहे ॥

कार्य प्रश्न देखना

दिशाप्रहरसंयुक्ता तारका वारमिश्रिता ।
अष्टभिस्तु हरद्भागं शेषं प्रश्नस्य लक्षणम् ॥
पञ्चके त्वरिता सिद्धिः षट तुर्ये च दिनत्रयं ।
त्रिसप्तके विलम्बश्च द्वौ चाष्टौ नहि सिद्धिदौ ॥

टीका–जो कोई पूछे काम कब तक होगा पूछने वाले का जिस दिशा में मुँह हो वो दिशा पहर नक्षत्र और वार सबको एक जगह करके ८ का भाग दे १ या ५ बचे तो जल्दी काम सिद्ध हो ६ । ४ बचे तो तीन दिन में हो ॥ ७ बचे तो देर में होगा नहीं ॥

पंथा प्रश्न देखना

तिथिप्रहरसंयुक्ता तारका वारमिश्रिता ।
सप्तभिस्तु हरेदभागं शेषतु फलमादिशेत् ॥
एकेन गमने सिद्धिर्द्वाभ्यां मार्गश्च एव च ।
तृतीये चार्धमार्गे वै चतुर्थे ग्राम आदिशेत् ॥
पंचमे पुनसवृतिः षष्ठे क्लेशः प्रजायते ।
सप्तमे शून्यता वृत्तिरिति ज्ञेयं विचक्षणैः ॥

टीका—जो कोई पूछे हमारा आदमी परदेश से कब आयेगा

जो तिथि वार पहर जोड़ के ७ का भाग दे १ बचे तो घर पर कहना २ बचे तो रास्ते में ३ बचे तो अर्ध मार्ग में फंस गये ४ बचे तो गांव के पास आ गया है ऐसा कहै ५ बचे तो रास्ते में से फिर गया ६ बचे तो कष्ट हो गया ॥ शून्य बचे तो जानो मर गया ॥

धनसहजगतौ गुरुभार्गवौ कथयतोऽन्वगमनं प्रवासिपुंसां । तनुहिबुकगताविमौ च तद्वज्झटिति नृणां कुरुते गृहप्रवेशम् ॥

टीका—पूछने के वक्त जो लगन हो तो इससे दूसरे स्थान गुरु और तीसरे स्थान शुक्र हो तो जल्दी आना कहै । पहले स्थान शुक्र और चौथे स्थान गुरु हो तो जानो आ गया ॥

अथ दोष जो देखना॥

पितृदोषो भवेन्मेषे क्षुधाऽग्निर्विवर्णता ।
वृषे गगनदेव्यास्तु ज्वरदुःस्वप्ननेत्ररुक ॥
मिथुने च महामायादोषो वेलाज्वरोनिलः ।
कर्के च शाकिनीदोषः हास्यरोदनमौनता ॥
सिंहे जले प्रेतदोषो देहशांते ज्वरीरुचिः ।
गृहदोषश्च कन्यायां क्रोधालस्यारुचिर्यथा ॥
क्षेत्रपालभवो दोषस्तुले संतानपीडनम् ।
वृश्चिके नागदोषश्च ज्वालादेहे कुबुद्धिता ॥
चापे देहे भवेदोषो ज्वरः शोकोदरव्यथा ।

मकरे चरिडकादोषी देहभंगो ज्वरोनिखः ॥
मलिनप्रेतदोषश्च कुम्भे देहस्य पीड़नम् ।
मीने चापेङ्गनादोषी ज्वराजंजालदर्शनम ॥

टीका—जब कोई जौ दिखाने आवे तो जौ को बारह ७ गिने । १ बचे तो मेष लगन जानना । २ बचे तो ब्रष ऐसे ही जो जौ बचे बारह से गिनती में वोही लगन जानना फिर उसका फल कहना मेष में पित्रों का दोष कहना । पित्र गायत्री तपो । भूक नहीं लगती । २ देवी का दोष हलका बुखार रहै ॥ ३ महामाया का दोष ॥ ४ शाकुनी देवी की पूजा करो ॥ ५ जल का ब्रत है । उसका दो जो इनसे खाया है वह चीज दरिया के किनारे धर दो । ६ ग्रहों का ग्रहों को दान करो । ७ सन्तान का दोष ब्राह्मण के लड़के को कपड़े पहराओ और चेत्रपाल का दोष चौमुखा तेल का दीयावास्त्र के संदूर ऊड़द स्याही दही उसमें धर उसके सिर पर को उतारकर चौराहे पर रख दो ॥ ८ देवता का दोष । देही में आग सी लगी रहै ॥ देवता का पूजन करो ॥ ९ बचे तो अङ्ग रोग कहना ॥ १० चन्डी देवी का दोष चन्डी की जात दो या कन्या जिमावो ॥ ११ प्रेत का दोष कुछ प्रेत का उतारा कर धरो या गायत्री जपवाओ ॥ १२ योगनी देवी का दोष, देवी का या माता का उठावना धरो ॥

व्यये धर्मं तृतीये च षष्ठे पापो यदा भवेत् ।
हते जले कुजे दोषो तस्य दोषः कुलोद्भवः ॥
शनौ जले कुजे शस्त्रे गरे सूर्यश्च वैस्वतः ।
राहुश्चविकृतो नष्टः शांतिपूजा द्विजार्चना ॥

टीका—१२ । ६ । ३ । ६ इन स्थानों में जो पाप ग्रह हों तो जल से डूब के मरे हुए का, जहर देने से मरे हुए का दोष जानो और जो शनि हो तो जल में डूबे हुए का दोत। मङ्गल हो तो शास्त्र से मरे हुए का दोष। सूर्य हो तो कोठे से गिरे हुए का दोष या और कोई कुगति से मरा हो उसका दोष, जो ऐसा दोष हो तो पीपल की पूजा या सिवजी की पूजा या ब्राह्मण जिमावे तो दोष दूर हो ॥

वस्तु खोई जाने का प्रश्न

अन्धश्च चिपिटाचस्त्र काणाच्चोदिव्यलोचनः ।
गणयेद्रोहिणीपूर्वं सप्तवार मनुक्रमात् ॥

टीका—अन्धा चिपटा काणा सलोचना ये चार प्रकार के नक्षत्र हैं रोहिणी से ७ दफै गिने फिर उसका फल कहै ॥

रो०	पुष्य	उ०फा०	वि०	पू० षा०	धनि.	रे०	ये नक्षत्र अन्धे हैं
मृ०	श्लेo	ह०	अनु	उ०षा०	श०	अ	ये नक्षत्र चिपटे हैं
आ.	म०	चि०	ज्ये०	अभि०	पू० भा०	भ०	ये नक्षत्र काणे हैं
पू०	पू० फा०	स्वा०	मू०	श्र०	उ० भा०	कृ०	ये नक्षक्ष सलोचन हैं

अन्धे च लभते शीघ्रं मन्दे चत्र दिनत्रयम ।
काणाच्चे मासमेकं तु सुनेत्र नैव दृस्यते ॥

टीका—अन्धे लग्न में जाँय तो जल्दी मिले। चिपटा में तीन दिन में मिले। कांणे में एक महीने में। सलोचना में न मिले।

तिथिवारं च नक्षत्रं प्रहरेण समन्वितम्।
दिक् संख्यया हते चैव सप्तार्कैर्विभजेत्पुनः॥
एकेन भूतले द्रव्यं चेद्भाण्डसंस्थितम्।
तृतीये जलमध्यस्थमन्तरिक्षे चतुर्थके॥
तु षष्ठं पंचमे न स्यात् षष्ठे गोमयमध्यगम्।
सप्तमे भस्म मध्यस्थमित्येतत्प्रश्नलक्षणम्॥

टीका जो कोई कहै मेरी चीज जाती रही है उस दिन की तिथि वार नक्षत्र पहर सबको जोडे १० का गुणा करदे ७ का भाग दे १ बचे तो पृथ्वी में कहना २ बचे तो बरतन में ३ बचे तो जल में ४ बचे तो छत म ५ बचे तो भूसे में ६ बचे तो गोबर में ८ बचे तो भस्म में कहना॥

पशु खोये जाने का प्रश्न

द्युमणिभान्नाभेषुवनस्थितस्तदनुषट्सु च कर्ण पथे स्थितः। अचलभेष गतो अविराद्गृहम् द्वयगतो गत एव मृतं त्रिषु॥

टीका-सूर्य नक्षत्र से ६ वां नक्षत्र हो तो बन में गया। ६ में रास्ते में हैं। ७ मे जल्दी घर आ जाय। २ नहीं मिले। ३में जानो मर गया।

वर्षा नक्षत्र संज्ञा देखना

दशाद्राद्या स्त्रियस्तारा विशाखाद्या नपुंसकाः।
त्रिस स्त्रियश्च मूलाद्या पुरुषाश्च चतुर्दशः॥
स्त्रीपुंसयोर्महावृष्टिस्त्रिनपुंसकयोः क्वचित्।
स्त्री स्त्री शीतलछायो योगे पुरुषयोर्न च॥

टीका—आर्द्रा से लेके दस नक्षत्र स्त्री हैं विशाखा से ३ नक्षत्र नपुंसक हैं। मूल के चौदह नक्षत्र पुरुष हैं। जो स्त्री नक्षत्र हो सूर्य पुरुष में आवे तो वर्षा हो। स्त्री नपुंसक में वर्षा थोड़ी हो॥ स्त्री २ नक्षत्र में मेघ छाया रहे बर्षे नहीं पुरुष नक्षत्रों में वर्षा नहीं हो।

दूसरा योग वर्षा का

उदयास्तं गतः शुक्रो बुधश्च वृष्टिकारकः।
जलराशिस्थिते चन्द्रे पक्षान्ते संक्रमे तथा॥

टीका—शुक्र बुध के उदय में वर्षा होती हैं और चन्द्रमा जल राशि में हो तो पक्ष के अन्त तक या संक्रांति तक वर्षा हो।

बुधः शुक्रः समीपस्थः करोत्येकार्णवां महीम्।
तयोरन्तर्गतोभानुः समुद्रमपि शोषयेत॥

टीका—जो बुध शुक्र एक राशि पर हों तो सारी पृथ्वी में जल बर्षे और जो इनके बीच में सूर्य पडे तो समुद्र के भी जल को सोख जाय॥

चतत्यंगारके वृष्टिः त्रिधा वृष्टिः शनैश्चरे।

वारिपूर्णा मही कृत्वा पश्चात्संचरते गुरुः ॥

टीका—और जो मङ्गल चले तो वर्षा हो ॥ शनिश्चर के चलने में जहां तहाँ वर्षा हो इनके पीछे गुरु हो तो सारी प्रथ्वी में जल बरषे।

भानाग्रे महीपुत्रो जलशोष: प्रजायते।
भानो:पश्चात् धरासूनु:वृष्टिर्भवति भूयसी ॥

टीका—और जो सूर्य के आगे मङ्गल होय तो प्रजा के जलको सोख जाय और पीछे होय तो वर्षा ज्यादे ॥

ग्रहण फल देखना

यदैकमासे ग्रहणं जायते शशिसूर्ययोः ॥
शस्त्रकोपैःतरं गांनि तदा भयं परस्परम ॥
ग्रहस्तोदितो च ग्रस्तास्तौ धान्यभूपालनाशकौ
सर्वग्रस्तौ चंद्रसूर्यौ दुर्भिक्षमरणप्रदौ ॥

टीका—जो एक महीने में सूर्य चन्द्र दोनों ग्रहण पडे तो राजाओं में युद्ध हो शत्रु कोपे और नाश हो। जो सूर्य चन्द्रमा ग्रहण होते उदय हो वा अस्त हो तो अन्न का नाश और राजा का नाश हो सर्व ग्रहण हो तो दुर्भिक्ष हो और मरण हो।

ग्रहण आदि दोष देखना

ग्रह कृत्वा सुवृष्टिश्च हानिश्च भयाकारकः।
विद्युत्पातोऽग्निदाहोऽथ धरीवेषश्च रोगकृत ॥

विगदाहेग्निभयं कुर्यान्निर्घातः नृपपीडनम ।
द्वन्द्वायुस्च डम्बसस्च चौरिभीतिप्रदायको ॥
ग्रहयुद्धे राजयुद्धे केतु दृष्टे तथैव स ।
ग्रहणाते महावृष्टिः सर्वदोषविनाशिनी ॥

टीका जो बिना वायु आकाश में धूरि वर्षे बिना मेघ बिजली चमके सूर्य का लाल मण्डल होना और सूर्य छिपे पीछे लाल पेला आकास दीखे, बिना बादल गरजे आकाश का गम्भना हो तो चोर भय हो राजाओं में भय युद्ध हो बीमार का भय हो और जो केतु उदय होय तो युद्ध हो । जो ग्रहण के पीछे वर्षा होय सारा दोष दूर हो जाय ॥

अथ पवन परीक्षा

आषाढ़े पूर्णिमायां च नैऋते यदि मारुतः ।
अनावृष्टिर्धान्यनशो जल कूपे न दस्यते ॥
आषाढ़े पूर्णिमाया तु वायव्ये यदि मारुतः ।
धर्मसिद्धस्तदा लोके धनधान्यं गृहे गृहे ॥
आषाढ़े पूर्णिमायां तु ईशान्ये वातिमारुतः ।
सुखनो हि तदा लोके गीतवाद्यपरायणः ॥
वन्हिकोणे वन्हिभीतिः पश्चिमे व जलद्रुपम ।
अन्यत्र यदि वायुः स्यात् दुभिक्षं जायते तदा ॥

टीका-जो आषाढ़ की पूर्णिमा को सूर्य के अस्त समय नैऋत की वायु चले तो वर्षा थोडी हो अन्न का नाश हो । कुएँ

भी सूख जाँय । वायव्य की वायु चले तो लोक में धर्मशीलता रहै धन धान्य की वृद्धि हो जो ईशान की चले तो लोक में सुख आनंद रहै । अग्नि कोण की चले तो आग बहुत लगे । पश्चिम की चले तो जल का भय हो । और दिशा की चले तो सुभिक्ष हो । उत्तर की या पूर्व की या दक्खन की चले तो आनन्द हो ॥

पूर्णिमा फल देखना

सर्वमासे पूर्णिमायां भूमिकम्पो यदा भवेत ।
उल्कातारा वज्रपातोग्रस्तौ शशीसूर्य्यकौ ॥
धूमकेतु शक्रचापं ग्रसणे बहुधा यदा ।
तदासौ सर्ववस्तूनां जायते च महार्घता ॥

टीका—पूर्णिमा को भूमि काँपे । उल्कापात दिन में तारा टूटे । वज्रपात बिजली गिरे चन्द्र सूर्य ग्रसे या केतु उदय हो या धनुष निकले तो सब वस्तु महगी हों ॥

ग्रह वक्री फलम्

भौमे वक्रे अनावृष्टिः बुधे वक्रे रसक्षयः ।
गुरौ वक्रे समर्घं स्याच्छुक्रे वक्रे प्रजासुखम ॥
शनौ वक्रे महार्घं च यान्ति महीहतिः ।
यदा वक्रा पञ्चखेटाः राष्ट्रविनाशदाः ॥

टीका—जो भौम यानी मङ्गल वक्री हो तो वर्षा नहीं होय बुध वक्री हो तो रस महँगा होय । गुरु वक्री हो तो पृथ्वी पर अन्न मंदा हो । शुक्र वक्री हो तो प्रजा को सुख हो । शनि वक्री हो तो

महाघोर युद्ध होय । किसी राजा का चय होय । जो पाँच ग्रह वक्री हों तो राजों के राजा की मृत्यु हो ।

ज्येष्ठ अमावस्या फलम्

रविवारेण संयुक्ता यदा स्यान्माघज्येष्ठयो: ।
अमावस्या तथा प्रथ्वी रुण्ड़ा मुण्ड़ा च जायते ॥

टीका—माघ जेठ की अमावस्या को जो रविवार पडे तो शीश शीश कट २ कर प्रथ्वी में पडें ।

तेरह तिथि फलम्

एकपक्षे यदा यान्ति तिथयश्च त्रयोदश ।
त्रयस्तत्र क्षयं यान्ति वाजिनो मनुजा गजा:॥

टीका--जो एक पक्ष में १३ तिथि हों तो मनुष्यों का नाश करे और घोडों का नाश करे और हाथियों का चय हो त्रयोदश तिथि का पक्ष तीनों योनि को निषिद्ध है ॥

अथ होली धूम्र फलम्

पूर्वे वायुर्होलिकया प्रजाभूपालयो: सुखम् ।
पलायं च दुर्भिक्षं दक्षिणे जायते ध्रुवम ॥
पश्चिमे तृणसम्पत्तिरुत्तरे धान्यसम्भव: ।
यदि खे च शिखाश्चोर्द्ध: राज्ञोदुर्गस्य सच्चय ॥

टीका--जो होली को पूर्व की हवा चले तो राजा प्रजा को

सुख हो और दक्षिण पवन चले तो देश भङ्ग और दुर्भिक्ष करे। पछवा चले तो त्रण सम्पत्ति बढ़े उत्तर पवन चले तो धान्य वृद्धि हो जो होली का धुवाँ आकाश को सीधा जाय तो राजा का गढ़ छूट जाय ॥

शनि राशिफलम् लिखते

शनिचक्रं नराकरं लिखेद्यत्र शनिर्भवेत ।
तन्नक्षत्रं मुखे दत्वा यावन्नाम नरस्य च ॥
तावद्विचारयेत्तत्र ज्ञेयं तत्र शुभाशुभम ।
एक मुखे च नक्षत्र चत्वारि दक्षिणे करे ॥
त्रयं त्रयं पादयोस्त्व वामहस्ते चतुष्टयम ।
ललाटे द्वितयं नेत्रे हृदि पञ्च गुदद्वयम ॥
एकै दक्षिणे कुक्षौ नक्षत्राणि क्रमेण च ।
हानिर्मुखे दक्षहस्ते लाभो वामे च रोगता ॥
हृदि श्रीमस्तके राज्यं पादे पर्यटन फलम ।
नेत्रे सुख गुदे मृत्युः कुक्षौ शोक विचिंतयेत ॥
जपादिपूजनार्चाभिः कल्याणं जायते सदा ।
अन्यान्येव विवार्याणि बाहनादि बहुनि च ॥

टीका—अब शनि चक्र का विचार कहते हैं। शनि चक्र आदमी की सूरत का लिखे। जिस नक्षत्र का शनि हो तिससे जन्म नक्षत्र तक गिने फिर शनि नक्षत्र से अंग प्रति सब नक्षत्र स्थापित करे जिस अंग में जन्म नक्षत्र पड़े उसका फल जानिये

१ नक्षत्र मुख में धरे। चार दाहिने हाथ में दक्षिण पाँव में ३ बाँये पाँव में, ४ बाँये हाथ में, २ ललाट में, ३ नेत्र ५ हिरदे २ गुदा १ दाहिने कोख में इस प्रकार नक्षत्र धरे। जो मूल में जन्म नक्षत्र पड़े तो हानि करे। बाँये हाथ में रोग, हिरदे लक्ष्मी, ललाट राजपद दक्षिण हाथ में लाभ। दाहिने पाँव में भ्रमावे, नेत्र में सुख, गुदा में मृत्यु, कोख में शोक करे. तिस निमित्त जपदान पूजा ब्राह्मण भोजनादि से कल्याण सुख होय और अनेक वाहनादि विचार के भी फल होते हैं सो अन्य ग्रन्थ विषय कहा है ॥

मेषे शनौ गुर्जरेषु प्रभासे चार्बुदे वृषे।
मिथुने जायते पीड़ा स्थले मूलस्थलेषु च ॥
कर्के कश्मीर के बाधा शक्रप्रस्थः मृगाधिपे।
शनैश्चरे च कन्यायां मालवाख्ये च संक्षयम् ॥
तुलावृश्चिकचापेष, यदि याति शनैश्चरः।
न वर्षन्ति तदा मेघा प्रथ्वी दुर्भिक्षपीड़िता ॥
सुभिक्षं मकरे कुम्भे जायते बहुधा शनौ।
मीने च सर्वलोकानां दुर्भिक्षन्तु क्षयो भवेत् ॥

टीका—मेष का शनि हो तो गुजरात देश में पीड़ा करे वृष का प्रभास क्षेत्र और अर्बुद देश में, मिथुन पलस्थली देश में. कर्क का काशी देश में, सिंह का इन्द्रप्रस्थ देश में, कन्या का मालवा देश में पीड़ा करे। तुला, वृश्चिक धन का हो तो मेघ थोड़ा वर्षे, प्रथ्वी दुर्भिक्ष से दुखी हो, कुम्भ मकर का होय तो अन्न का सुकाल करे ॥ मीन का होय तो सर्वत्र काल पडे दुर्भिक्ष से पीड़ा होय ॥

द्वादश राशि गुरु फलम्

मेषे गुरौ सुभिक्षम् च सुवृष्टिश्च सुखी नरः ।
वृषे गुरौ स्वल्पवृष्टिः प्रजापीडा च विग्रहः ॥
अनावृष्टिः प्रजानाशो रौरवं मिथुने गुरौ ।
कर्के गुरौ महावृष्टिर्देशभङ्गो महर्घता ॥
सिंहे गुरौ सुभिक्षम् च सुवृष्टिश्च प्रजासुखम् ।
कन्यागुरौ रोगपीड़ा सुभिक्षम् शस्यजन्म च ॥
तुले गुरौ सस्यनाशो बहुक्षीरं प्रजापते ।
अलौ जीवे च दुर्भिक्षम् राजचौरोरगादभयम् ॥
चापे गुरौ शुभावृष्टिः शुभं शस्यमहर्घता ।
दुर्भिक्षं मकरे जीवो राजयुद्धं पशुक्षयः ॥
कुम्भे गुरौ च दुर्भिक्षम् धातुमूलं महर्घता ।
दुर्भिक्षम् दक्षिणे देशे झषे जीवे न चान्यगे ॥

टीका-जब मेष राशि का बृहस्पति आवे तब सुभिक्ष हो। वर्षा अधिक हो, मनुष्य सुखी रहैं ॥ जब वृष राशि की हो तो वर्षा थोड़ी हो ॥ जामें पीडा हो विग्रह फैले और मिथुन का हो तब वर्षा अच्छी हो । बैर बढ़े प्रजा को पीडा हो ॥ और कर्क उच्च स्थान की हो तो वर्षा बहुत हो, और कोई देश भङ्ग होय अन्न मँहगा हो ॥ सिंह का हो तो सुभिक्ष करे, वर्षा अधिक हो प्रजा सुखी रहै ॥ कन्या के गुरु होय तो रोग, पीडा धान्योत्पत्ति और अन्न सस्ता हो । तुला के गुरु खेती का नाश करे, दूध बहुत होय

वृश्चिक के गुरु में राज चोर पर भय दुर्भिक्ष करे ॥ धन के गुरु वर्षा खेती बहुत करे रस मंहगा करे मकर के गुरू महादुर्भिक्ष, राजों में युद्ध, पशुओं का नाश करें। कुंभ के गुरू होय तो दुर्भिक्ष धातु मंहगा करे। मीन के गुरू होय तो दक्षिण देश में दुर्भिक्ष करें अन्य देश में नहीं ॥

दीपमालिका फलम्

भानुभौमार्किवारेषु कार्तिकेन्दुक्षयो भवेत्।
आयुष्मान् स्वातिसंयुक्तो नृपनाशः पशुक्षयः ।

टीका—जो कार्तिक मास दिवाली रवि भौम शनिवार की हो और स्वाति नक्षत्र आयुष्मान योग हो तो राजाओं में युद्ध और पशुओं का नाश हो ॥

कितना दिन चढ़ा या रहा देखना

छाया पादैरसोपेतै रेकविंशशतं भजेत्।
लब्धांके घटिका ज्ञेयाः शेषांके च पलाःस्मृताः॥

टीका अपने शरीर की छाया अपने पाँव से नापना जितने पाँव छाया हो उसमें ६ और मिलावे फिर १२१ में भाग दे जितनी बार भाग लगे सो घड़ी दिन जानो जो चढ़ता हो तो चढ़ता जानो और उतरता हो तो बाकी दिन रहा जानो और जो भाग देकर शेष बचे सोई पल जानिए।

रात्रि ज्ञानम देखनो

सूर्यभान्मध्यनक्षत्र सप्त संख्याविशोधितम्।

विंशतिघ्न नवहृतं गता रात्रिः स्फुटा भवेत् ॥

टीका—जो आधी रात नक्षत्र हो उससे सूर्य नक्षत्र तक गिने फिर उसमें सात घटावे जो बाकी रहे उनको २० से गुणा करे फिर ९ का भाग दे जो अङ्क शेष बचे सो उतनी रात गई समझना चाहिए।

छपकी दोष दूर करना

पिनाकिनं नमस्कृत्य जपेन्मंत्रं षडक्षरम ।
शतं सहस्रमथवा सर्वदोषनिवारणम् ॥
शिवालये प्रदद्याच्च दीपं दोषप्रशान्तये ।

टीका—जिस किसी के शरीर पर छपकी गिर जाय चढ़ जाय तो शान्ति के लिए सारे वस्त्र धोवे और गंगाजल से स्नान करे घी साँभर तेल का दान करे ओ३म् नमः शिवाय ये १०० या १ हजार मन्त्र जपे शिवालय में दीपक बाले तो शुभ है ॥

छींक विचार देखना

पूर्वे छिक्का भवेन्मृत्यु राग्नेय्यां शोक एव च ।
हानिश्च दक्षिणे भागे नैरृते प्रियदर्शनम ॥
पश्चिमे मिष्टभोज्यं च वायव्ये धनलाभदो ।
उत्तरे कलहश्चैव ईशाने च शुभास्मृता ।
दिशाष्टकं विचार्यैव एवं ज्ञेयं विचक्षणैः ॥

टीका-पूर्व की छींक हो तो मृत्यु करे । अग्नि कोण की हो तो शोक हो दक्षिण को हो तो हानि करे नैरृत की में लाभ ।

पश्चिम की शुभ ॥ वायव्य की शुभ । उत्तर की कलह । ईशान का शुभ । इसी प्रका आठो दिशा का फल देखना ॥ सोते और उठते में छींक होना शुभ नहीं है ॥ यदि भोजन के अन्त में छींक हो तो अगले दिन अच्छे पदार्थ का लाभ हो । किसी कार्य के करने यात्रा का विचार करते छींक हो तो वह काम नहीं बनता । उस काम के करने के लिए थोडी देर तक अवश्य ठहर जाना चाहिए । यात्रा के समय पीछे की या बांये तरफ की छीक अच्छी होती है सामने और दाहिने तरफ की बुरी होती है ।

चरु प्रणाम देखना

एकाद्वित्रिचभागं व्रीहिघृता यवास्यथा ।
तिलाः क्रमेण योक्तव्या यथा श्रद्धा च शर्करा ॥

टीका—चावल एक हिस्सा घी दो हिस्से जौ तीन हिस्से तिल चार हिस्से जैसी श्रद्धा हो उतनी शुद्ध शर्करा नाम खाँड मिलावे ये चरु का प्रमाण है ॥

चूल्हा बनाने का विचार

रवि शनि मङ्गल को हरो, और वारलो जोड़ ।
रिक्ता भद्रा छोड़ के, चूल्हे का दो ठौर ॥

स्त्री को सङ्ग में रखने का विचार

युद्धेषु पृष्ठतः कुर्यात् मार्गे अंचतोनिःसरेत् ।
ऋतुकालेतु वामांगी पुन्यकाले तु दक्षिणे ॥

टीका—युद्ध में स्त्री को पीठ पीछे रास्ते में अगाड़ी रक्खे ॥

ऋतुकाल के समय बाईं तरफ रक्खे। पुण्यकाल के समय दाहिनी तरफ रखना चाहिए ॥

नक्षत्र संज्ञा चक्रम्

ध्रुव स्थिर	उत्तरा तीनो रोहिणी रविवार
चरचल	स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, चन्द्रवार
उग्र क्रूर	पूर्व तीनो, भरणी मघा मङ्गलवार
मिश्र साधारण	विशाखा, कृतिका, बुधवार
क्षिप्र, लघु	हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित गुरूवार
मृदु, मन्त्र	मृगशिर रेवती, चित्रा। अनुराधा भृगुवार
तीक्ष्ण, दारूण	मूल, ज्येष्ठा आर्द्रा श्लेषा, शनिवार

नौतनी का श्लोक दोनों पक्ष का

मयूराणां मेघः कुवलकदम्बो मधुलिहाम ।
सरोजानां भानु कुसुम समयः काननभुवाम ॥
चकोराणां चन्द्रः प्रथयति यथा चेतसि सुखम ।
तथास्मा प्रीतिम जनयति तवालोकनमिदम ॥

अन्वय मेघः यथा मयूराणाँ चेतसि सुखं प्रथयति। कुलवय कदम्बा यथा मधुलिहाँ चेतसि सुख प्रथयति भानुःयथा सरोजानां चेतसि सुखं प्रथयति। कुसुमसमयः यथा काननभुवाम् चेतसि सुखं प्रथयति। चन्द्रः यथा चकोराणाँ चेतसि सुखं प्रथयति। तथा इदम् तव आलोकनमस्माकं चेतसि प्रीतिंजनयति ॥१॥

टीका—जैसे बादल गरजने से मोरों के चित्त में सुख प्राप्त होता है और जैसे कमल का पुष्प भौरों के चित्त में सुख देता है और जैसे सूर्य नारायण तालाबों के फूलों को सुख देते हैं और जैसे बसन्त ऋतु बन में रहने वालों को सुख देती है और चन्द्रमा चकोर पक्षी चित्त को सुख देता है ऐसे ही आपके दर्शन हमारे चित्त में प्रीति को पैदा करता है ॥

नाभोभाति मदेन कंजलरुहैः पूर्णेन्दुना शर्वरी ।
शीलेन प्रमदा जवेन तुरगो नित्योत्सवैर्मन्दिरम ॥
वाणी व्याकरणेन हँसमिथुनैर्नद्यः सभा पंडितैः ।
सत्पुत्रेण कुलंनृपेण वसुधा लोकत्रयं विष्णुना ॥

टीका—आपके सम्बन्ध होने से हम बड़े शोभा को प्राप्त हुए। क्योंकरके जैसे हाथी मद करके शोभा को प्राप्त होता है। जल कमल करके शोभा को प्राप्त होता है। और पूर्ण चन्द्रमा से रात्रि शोभा को प्राप्त होती है और शीलता से स्त्री शोभा को पाती है और घोडा ज्यादा चलने से शोभा को प्राप्त होता है और मन्दिर में नित्य उत्सव होने से मन्दिर की शोभा है। और वाणी की व्याकरण करके शोभा है। नदियाँ हंसों के जोड़े से शोभा को पाती हैं। और पंडित की सभा करके शोभा है। और कुल की सत्पुत्र होने से शोभा है। राजा की पृथ्वी करके शोभा है। और विष्णु भगवान से त्रिलोकी की शोभा है। ऐसे ही आपके संबन्ध होने से हमारी और आपकी शोभा है।

गङ्गा पापं शशी तापं दैन्यं कल्पतरुस्तथा ।
पापं तापं तथा दैन्यं सज्जनसंगमः ॥

टीका—गङ्गाजी के स्नान करने से सब पाप दूर हो जाते हैं। और चंद्रमा के दर्शन करने से ताप नाम गर्मी दूर हो जाती है। जो

कल्प वृक्ष है उसके दर्शन से दरिद्रता दूर हो जाती है। पाप ताप दरिद्रता ये तीनों सज्जनों के मिलने से दूर हो जाते हैं सो आप ऐसे सज्जन हैं कि आपके मिलने से सब दुख दूर हो गये ॥

दूरेहि श्रुत्वा भवदीय कीर्तिम कर्णौ च तृप्तौ नहिं चक्षुषी मे। तयोर्विवाद, परिहर्तुकामः, समागतोहं तवदर्शन य ॥ १ ॥

टीका - आपकी कीर्ति को दूर ही से सुनकर कान तो तृप्त हो गये, नेत्र हमारे तृप्त नहीं हुए। उन दोनों में (कान और नेत्रों में विवाद होने लगा, उसको दूर करने के लिए आपके दर्शन के लिए हम यहाँ आये हैं सो जैसे सुने वैसे ही देखे. विवाद दूर हो गया ॥

पंचगव्य	पंचामृत	पंचपल्लव	पंचरत्न
गौमूत्र	गौघृत	बड़ का पत्ता	सोना
गौ गोबर	गौ दधि	गूलर का पत्ता	चाँदी
गौ दूध	गौ दूध	पीपल का पत्ता	ताँबा
गौ घृत	गंगाजल	आम का पत्ता	मूंगा
गौ दधि	शहद	पिलखन का पत्ता	मोती

* इति शुभम *

पुस्तक मिलने का पता—

१ रामस्वरूप शर्मा नारायण पुस्तकालय,
हरिहर प्रेस मेरठ।

दीपक ज्योति कार्यालय हाथरस।